वर्ष १२ अंक २३

कर्मभूमि

मई २०१९

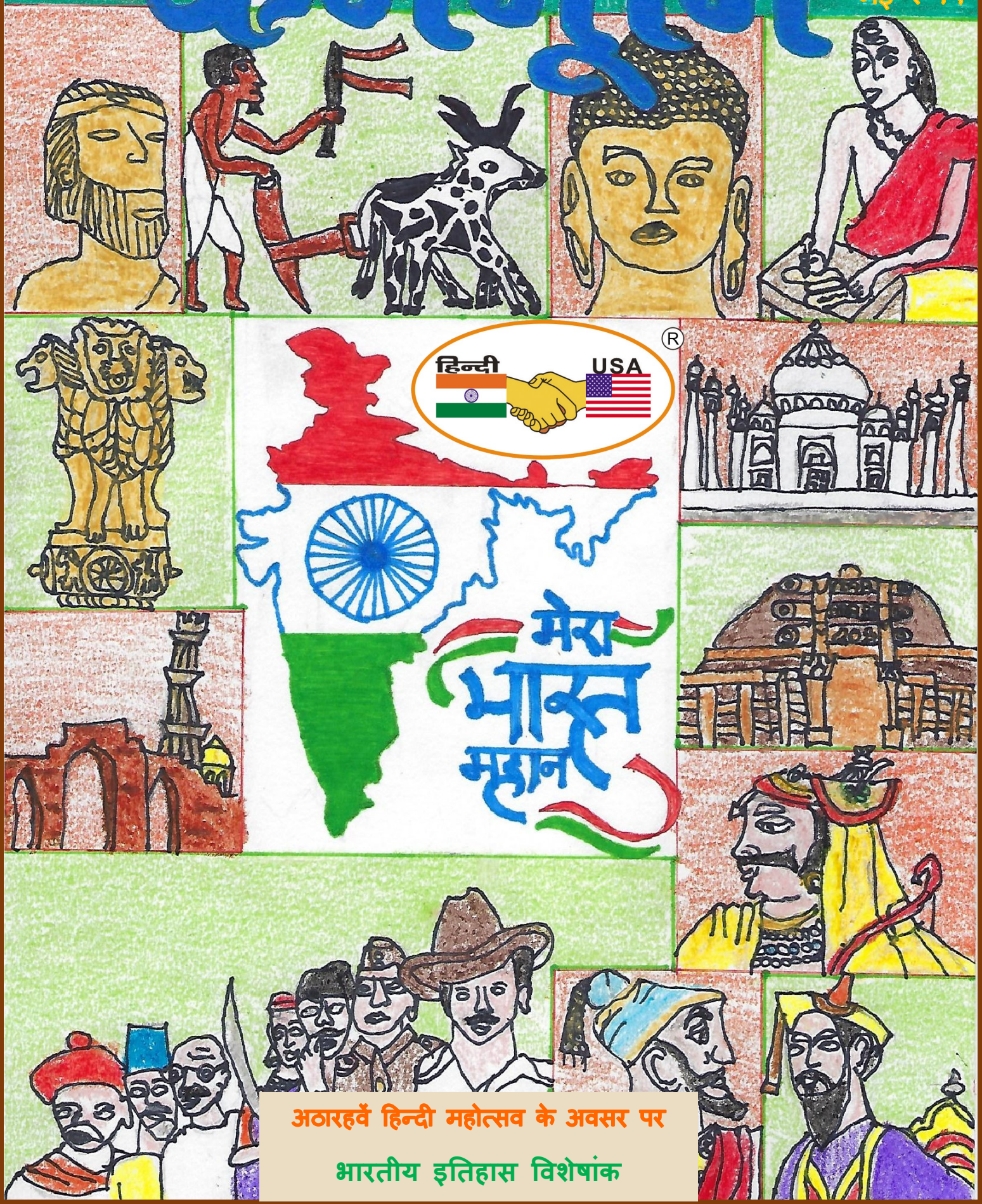

अठारहवें हिन्दी महोत्सव के अवसर पर

भारतीय इतिहास विशेषांक

Dedicated to the memory of

Dr. Karuna Sharma

A beloved mother, loving wife, physician, singer, and philanthropist.
Gifted with the sweetest voice and a magnetic personality, you gave love and joy to all.
Your life embodied principles of peace, love, equality, non-violence,
universal compassion, kindness, and empathy—as in your name, Karuna.
The beauty of your soul and dedication to your family will be cherished forever.

You will never be forgotten.

Dr. Naresh Sharma (Husband)
Dr. Ketan Sharma (Son)

Mr. Gunjan Sharma, Esq. (Son)
Mr. and Mrs. Harbans Lal Nischal (Parents)

नित्यं स्मरामि करुणारमुखारविन्दम् भालं विशालमुज्ज्वल |
वदनं प्रसन्नम् धारिणीं मधुर स्मितं||
कमलाक्षीं कोमल कर्पुरीं किन्नरीं कोकिलकण्ठ स्वामिनी |
सुहासिनी सुशोभिनी सुमधुरभाशिणीं मनपगामिनी ममहृदयस्वामिनी||

www.hindiusa.org

1-877-HINDIUSA

स्थापना: नवंबर २००१ संस्थापक: देवेन्द्र सिंह

हिन्दी यू.एस.ए. के किसी भी सदस्य ने कोई पद नहीं लिया है, किन्तु विभिन्न कार्यभार वहन करने के अनुसार उनका परिचय इस प्रकार है:

निदेशक मंडल के सदस्य

देवेन्द्र सिंह (मुख्य संयोजक) - 856-625-4335

रचिता सिंह (शिक्षण/प्रशिक्षण संयोजिका) - 609-248-5966

राज मित्तल (धनराशि संयोजक) - 732-423-4619

माणक काबरा (प्रबंध संयोजक) - 718-414-5429

सुशील अग्रवाल ('कर्मभूमि' संयोजक) - 908-361-0220

शिक्षण समिति

क्षमा सोनी - कनिष्ठा-१ स्तर

रंजनी रामनाथन, हेमांगी शिंदे - कनिष्ठा-२ स्तर

मोनिका गुप्ता - प्रथमा-१ स्तर

सरिता नेमानी, सन्जोत ताटके - प्रथमा-२ स्तर

इंदु श्रीवास्तव, अदिति महेश्वरी - मध्यमा-१ स्तर

ममता त्रिवेदी, गरिमा अग्रवाल - मध्यमा-२ स्तर

विकास ओहरी, ऋतु जग्गी - मध्यमा-३ स्तर

सुशील अग्रवाल, हंसा सिंह - उच्चस्तर-१

कविता प्रसाद - उच्चस्तर-२

अन्य समितियाँ

अमित खरे – वेब साइट, वीडियो

योगिता मोदी – बुक स्टाल प्रबंधन

पाठशाला संचालक/संचालिकाएँ

एडिसन: माणक काबरा (718-414-5429), सुनील दुबे (848-248-6500)

साऊथ ब्रंस्विक: उमेश महाजन (732-274-2733)

मॉन्टगोमरी: अद्वैत/अरुणधति तारे (609-651-8775)

पिस्कैटवे: सौरभ उदेशी (848-205-1535)

ईस्ट ब्रंस्विक: मायनो मुर्मु (732-698-0118)

वुडब्रिज: शिव आर्य (908-812-1253)

जर्सी सिटी: मनोज सिंह (201-233-5835)

प्लेंसबोरो: गुलशन मिर्ग (609-451-0126)

लॉरेंसविल: श्वेता गंगराडे (609-306-1610)

चैरी हिल: देवेंद्र सिंह (609-248-5966)

चैस्टरफील्ड: शिप्रा सूद (609-920-0177)

होमडेल: निनिता पटेल (732-365-2874)

मोनरो: सुनीता गुलाटी (732-656-1962)

नॉर्थ ब्रंस्विक: योगिता मोदी (609-785-1604)

बस्किंग रिज: संजय गुप्ता (732-331-9342)

विल्टन: अमित अग्रवाल (630-401-0690)

चेतना मल्लारपु (475-999-8705)

स्टैमफर्ड: अजय जैन (203-331-7701), मनीष महेश्वरी (203-522-8888)

एवॉन: बसवराज गरग (732-201-3779)

ट्रम्बुल: रुचि शर्मा (203-570-1261)

एलिकाट सिटी (MD): मुरली तुल्शियान (201-892-7898)

नीधम (MA): विक्रम कौल (203-919-1394)

अटलांटा (GA): रंजन पठानिया (203-993-9631)

संजीव अग्रवाल (203-442-3120)

सैन डिएगो (CA): मुदिता तिवारी (858-229-5820)

सैंट लुइस (MO) - मयंक जैन (636-575-9348)

हमको सारी भाषाओं में हिन्दी प्यारी लगती है, नारी के मस्तक पर जैसे कुमकुम बिंदी सजती है।

कर्मभूमि

संरक्षक
देवेंद्र सिंह
रूपरेखा एवं रचना
सुशील अग्रवाल
सम्पादकीय मंडल
रचिता सिंह
माणक काबरा
राज मित्तल

अपनी प्रतिक्रियाएँ एवं सुझाव हमें अवश्य भेजें

हमें विपत्र निम्न पते पर लिखें
karmbhoomi@hindiusa.org

या डाक द्वारा निम्न पते पर भेजें:
Hindi USA
70 Homestead Drive
Pemberton, NJ 08068

मुखपृष्ठ – आख्यान सचान (एडिसन पाठशाला)

१२ - ७०वां गणतंत्र दिवस
१० - हिंदी यू.एस.ए. के वार्षिक कार्यक्रम
१२ - युवा स्वयंसेवक अभिनन्दन समारोह
१४ - चौंसठ योगिनी मंदिर
१५ - ग्रीक और हिंदू पौराणिक कथाओं के बीच समानताएँ, दोस्ती
१६ - भारत के इतिहास में नारियों की भूमिका
१८ - किताबों की शक्ति – बच्चों की भक्ति
१९ - व्याकुल मन
२० - भारतीय इतिहास – एक गौरवशाली परंपरा
२२ - प्राचीन भारत
२४ - राजकुमारी रत्नावती
२५ - भारत का स्वाधीनता संग्राम
२६ - हमने कुछ नया जाना
२७ - सोने की चिड़िया–भारत
२८ - मेरा एक अनोखा अनुभव
३० - अद्वितीय राजा विक्रमादित्य
३१ - राजा विक्रमादित्य का सिंहासन
३२ - विक्रमादित्य की गाथाएँ
३३ - भारत में मुग़ल साम्राज्य
३६ - शान्ति प्रस्ताव
३७ - भारत की स्वतन्त्रता का इतिहास
३८ - १८५७ का स्वतन्त्रता संग्राम
३९ - २०१९ के भारत रत्न
४० - मेरा भारत महान
४२ - स्वर्ण मंदिर
४३ - ताजमहल, जगन्नाथ पुरी का इतिहास
४४ - मीनाक्षी अम्मन मंदिर, इंडिया गेट
४५ - मौर्य साम्राज्य
४६ - चेस्टरफील्ड पाठशाला – उच्चस्तर-२
५२ - छत्रपति शिवाजी महाराज
५३ - उत्तराखंड यात्रा
५४ - मध्यकालीन भारत
५७ - भारतीय इतिहास की विदुषी और महान बेटियाँ
५८ - एडिसन हिन्दी पाठशाला – उच्चस्तर-२
६६ - स्टैमफोर्ड – उच्चस्तर-१
६९ - आमेर किला, झाँसी की रानी
७० - कत्थक, भारत की आजादी, लोहड़ी
७२ - बच्चों की सोच, मकर संक्रांती
७४ - दक्षिण भारत के प्राचीन राज्य
७६ - भारत का इतिहास
८४ - हिंदू मर्द मराठा शिवबा
८६ - भारतीय इतिहास की झलकियाँ
८८ - भारत के ऐतिहासिक स्मारक
९०-१२८ पाठशालाओं के लेख

देवेंद्र सिंह

भारतीय इतिहास

जो व्यक्ति या समाज अपने इतिहास से नहीं सीखता, वह वही गलतियाँ दोहराता है जो उसके पूर्वजों ने की थीं और इस तरह अपने वर्तमान और भविष्य के साथ अन्याय करता है। प्रश्न यह भी खड़ा होता है कि इतिहास किसने, किस संदर्भ में और किस उद्देश्य से लिखा है। विदेशी आक्रांताओं द्वारा लिखा गया इतिहास भारतीयों को मानसिक गुलाम बनाकर रखने के उद्देश्य से लिखा गया था जिससे हम अभी तक उबर नहीं पाए हैं।

पश्चिमी इतिहासकारों ने भारत के इतिहास को मिथक (Myth) के रूप में प्रस्तुत किया है और अपने अवैज्ञानिक मजहब को निर्विवाद ऐतिहासिक तथ्य माना है। सच्चे इतिहास को जीवित रखना आवश्यक है जिससे हमारी आने वाली पीढ़ियाँ उससे सकारात्मक प्रेरणा लेती रहें। सत्य इतिहास की एक अभिव्यक्ति है और इतिहास की रक्षा से सत्य जिंदा रहता है।

पश्चिमी इतिहास अपने इतिहास को श्रेष्ठ मानता है जबकि उसका पूरा इतिहास दूसरों पर विजय प्राप्त करने, उन्हें सभ्य बनाने एवं बलपूर्वक उनपर अपना नेतृत्व थोपने की नीति पर निर्धारित है। आज पश्चिमी इतिहासकर भारतीय इतिहास को मिथक दिखाकर उसे तोड़-मरोड़ कर बदल रहे हैं। उनका मानना है कि भारत के भूतकाल पर नियंत्रण रखना आवश्यक है। यदि भारत के असली इतिहास की छवि युवा समाज के हृदय पटल से गायब हो जाएगी तो पश्चिमी समाज को उनकी संस्कृति और इतिहास को भारतीयों के मन-मानस में स्थापित करना आसान हो जाएगा।

आज के सामाजिक और राजनैतिक माहौल में युवाओं को सतर्क रहना है, विशेषकर उस मीडिया वर्ग से जो प्रायोजित समाचार प्रकाशित करता है। यदि कोई ऐसी राजनैतिक पार्टी भारत पर अगले १०-१५ वर्ष शासन करती है और हमारे बदले हुए इतिहास को उसकी पुरानी चमक के रूप में स्थापित करने में सफल हो पाती है तो हम आशा कर सकते हैं कि हमारी मानसिक गुलामियों की जंजीरें टूटेंगी और एक नए भविष्य का निर्माण होगा।

हिन्दी यू.एस.ए. के युवाओं द्वारा हिन्दी सीखने से भारतीय संस्कृति और इतिहास में एक समृद्ध योगदान हो रहा है। भाषा संस्कृति और इतिहास की एक सीढ़ी है जिस पर चढ़ कर आने वाली पीढ़ियाँ अपने इतिहास को साझा करेंगी।

"भारत - उन वेदों की भूमि, जिनमें एक आदर्श जीवन के लिए न केवल धार्मिक विचार हैं, बल्कि ऐसे तथ्य भी हैं जो विज्ञान में भी सच साबित हुए हैं। बिजली, रेडियम, इलेक्ट्रॉनिक्स, एयरशिप, इन सबका उन वेदों के संतों को ज्ञान था जिन्होंने वेदों की स्थापना की थी। "

व्हीलर विलकॉक्स (अमेरिकी कवि)

संपादकीय

वर्ष २०१९ हिंदी यू.एस.ए. की स्थापना का अठारहवाँ वर्ष है। २००१ में इसकी स्थापना से अब तक के इन अठारह वर्षों में इस संस्था की अभूतपूर्व प्रगति किसी से छिपी नहीं है। प्रगति के रास्तों में अनगिनत चुनौतियाँ एवं विषमताओं का आना स्वाभाविक है, और हिंदी यू.एस.ए. भी इसका अपवाद नहीं है। अनगिनत बाधाओं और विघ्नों का सामना करते हुए अपने ५००+ समर्पित स्वयंसेवकों एवं एक कुशल नेतृत्व के सहारे यह संस्था निरंतर अपने पथ पर अविरल आगे बढ़ रही है। वर्तमान में संस्था ७ राज्यों में २४ हिंदी पाठशालाएँ सफलता पूर्वक संचालित कर रही है जिनमें ४००० से अधिक छात्र-छात्राएं हिंदी का ९ स्तरों में प्रशिक्षण ले रहे हैं। दो नई पाठशालाएँ आगामी सत्र से, सैंट लुइस, मिस्सुरी एवं शिकागो, इलेनॉए में प्रारम्भ किए जाने की तैयारियाँ चल रही हैं।

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी संस्था से १५० से अधिक छात्र-छात्राएँ अपने पाठ्यक्रम के ९ स्तरों की पढाई पूर्ण करके स्नातक होने जा रहे हैं। अधिकांश स्नातकों को ९ वर्षों में संस्था तथा अपनी पाठशाला से इतना लगाव हो जाता है कि वे उन्हीं पाठशालाओं में युवा-स्वयंसेवक या सहायक-अध्यापक के रूप में सहर्ष अपनी सेवाएँ देना प्रारंभ कर देते हैं। अपनी भाषा, संस्कृति और संस्कारों को अमेरिका की युवा पीढ़ी को स्थानांतरित करने का यह कार्य हमारे युवा स्नातक अत्यंत जोश एवं संकल्प के साथ कर रहे है।
अठारहवें हिंदी महोत्सव की कर्मभूमि का यह 'भारतीय इतिहास विशेषांक' अपने आप में एक अनूठा संकलन है जिसमें हमारे शिक्षकों, नन्हे-मुन्ने बच्चों तथा स्वयंसेवकों द्वारा लिखी गयी भारत के ५००० वर्षों के प्राचीन इतिहास एवं संस्कृति पर अनगिनत रचनाओं, कहानियों एवं आलेखों से परिपूर्ण है तथा इसका हर पृष्ठ अति आनंदमय है। भारत का इतिहास बहुत गहन है और भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता विश्व की सबसे पुरानी संस्कृतियों में मानी और पूजी जाती है। आने वाली पीढ़ियों को भ्रमित करने हेतु निवर्तमान सरकारों द्वारा युवाओं को इतिहास की सही जानकारी पाठशालाओं में स्वार्थवश नहीं पढ़ाई जा रही है। केवल कुछ वर्गों, समाज या व्यक्तियों के बारे में ही स्कूलों की पाठ्य-पुस्तकों में बढ़ा चढ़ाकर पढ़ाया जाता रहा है जिसके परिणाम स्वरूप भारत और विश्व की अधिकांश जनता एवं युवा, भारत के सच्चे इतिहास से अनभिज्ञ रहे हैं। भारत की वर्तमान सरकार इस पर विशेष ध्यान दे रही है और स्कूलों में इतिहास की पुस्तकों में इस बदलाव का कार्य प्रगति पर है। इतिहास के जो सच एवं तथ्य छात्रों को पुस्तकों में नहीं बतलाये गए, उन्हें उजागर करने और जन-जन तक पहुंचाने का कार्य आज कल सोशल-मीडिया के माध्यम से बहुत सी समाज-सेवी संस्थाएं कर रहीं हैं जो की बहुत धन्यवाद की पात्र हैं।

बच्चों को मात्र हिन्दी सिखाना ही इस संस्था का उद्देश्य नहीं है, अपितु, हमारी संस्कृति-ज्ञान, सामाजिक दायित्व, एवं राष्ट्रवादी भावनाओं का विकास उनके हृदय में उत्पन्न करना भी हमारा एक ध्येय है। इसी को ध्यान में रखकर, संस्था ने एडिसन में एक स्थानीय सिनेमा प्रबंधन से बातचीत करके भारत की हाल ही में प्रदर्शित एक राष्ट्रवादी फिल्म, 'उरी-The Surgical Strike' का एक सफल प्रदर्शन हमारे छात्रों एवं अभिभावकों के लिए करवाया। आशा से कई अधिक छात्रों एवं अभिभावकों ने इस चल-चित्र को देखा एवं सराहा।

भारतीय कांसुलेट ने इस वर्ष जनवरी ११, २०१९ को हिन्दी दिवस का आयोजन किया जिसमें संस्था के ११ युवा स्वयंसेवक एवं छात्रों ने अपनी

कविताएँ सुनाकर अपनी विलक्षण प्रतिभाओं को उजागर कर कुछ ऐसे कीर्तिमान स्थापित किये हैं जिस पर न केवल हमारी संस्था को ही अपितु पूर्ण भारतीय समुदाय को गर्व की अनुभूति होनी चाहिए।

करीब १३० पृष्ठों का यह वृहद् अंक छात्रों एवं अध्यापकों की रचनाओं एवं संस्मरणों से सराबोर है। कुछ रचनाएँ जो कि पाठकों का विशेष ध्यान आकर्षित करती हैं, चौंसठ योगिनी मंदिर (ग्वालियर), 'ग्रीक और हिन्दू पौराणिक कथाओं के बीच समानताएं', भारत के इतिहास में नारियों की भूमिका', 'राजकुमारी रत्नावती', 'सोने की चिड़िया भारत', 'अद्वितीय राजा विक्रमादित्य', 'मौर्य साम्राज्य', 'मौर्यकालीन भारत', 'बच्चों की सोच, इतिहास के बारे में' आदि कई रोचक लेख हमारे छात्रों एवं अध्यापकों ने इस अंक के लिए लिखे है जो कि बहुत ज्ञानवर्द्धक होने के साथ-साथ ही हमें कई नई बातों का बोध भी करवाते हैं जिनसे हम अभी तक अनभिज्ञ थे।

पत्रिका की मुद्रित प्रतियों पर आये खर्च का एक बड़ा हिस्सा हमारे समर्थकों द्वारा पत्रिका में अपना विज्ञापन देकर पूरा किया गया है। उनकी वित्तीय सहायता हेतु हिंदी यू.एस.ए. उनका आभारी है। पाठकों से अनुरोध है कि पत्रिका पढ़ने के पश्चात अपनी प्रतिक्रियाएं, आलोचना, समालोचना अवश्य भेजें। हमें उनकी प्रतीक्षा रहेगी। जो अभिभावक या पाठक संस्था में स्वयंसेवक या अध्यापक बनने के इच्छुक हों, कृपया अवश्य संपर्क करें।

आशा है यह अंक आपके लिए एक यादगार बनकर रहेगा तथा इसे पढ़ने के बाद आपसे यही अपेक्षा रहेगी कि बच्चों को भारत के पूर्ण इतिहास और संस्कृति का पूर्ण ज्ञान अर्जन करने की प्रेरणा दें और इसके बारे में जानें और जन-जन तक इसे फैलाएं।

धन्यवाद

मुखपृष्ठ रचनाकार के विचार

मेरा नाम आख्यान सचान है। मैं नौ वर्ष का हूँ। मैं एडिसन हिंदी यू.एस.ए. के मध्यमा-२ में पढ़ता हूँ। गणित मेरा प्रिय विषय है। मुझे किताबें पढ़ना और चित्र बनाना अच्छा लगता है।

मैंने यह चित्र कर्मभूमि मुखपृष्ठ के लिए "भारतीय इतिहास" पर बनाया है। इस चित्र में भारतीय इतिहास के तीनों भागों को चित्रांकित किया है।

१. **प्राचीन इतिहास:** मैंने सिंधु घाटी सभ्यता के आदमी और किसान, भगवान बुद्ध, चाणक्य, साँची स्तूप और अशोक चिन्ह (जो कि भारत का राष्ट्रीय चिन्ह है) बनाये हैं।

२. **मध्यकालीन इतिहास:** मैंने पहले मुगल राजा बाबर, छत्रपति शिवाजी महाराज, राजपूत महाराज महाराणा प्रताप, कुतुब मीनार और मुगल राजा शाहजहां द्वारा बनाये गए ताजमहल (जो कि दुनिया के सात आश्चर्यों में से एक रह चुका है) बनाये हैं।

३. **आधुनिक इतिहास:** भारत का आधुनिक इतिहास जन्मभूमि को अंग्रेज़ों से आज़ाद कराने के लिए लाखों वीरों के खून से लिखा गया है। गांधीजी, सुभाष चंद्र बोस, भगत सिंह, रानी लक्ष्मीबाई, चंद्रशेखर आज़ाद, मौलाना आज़ाद और लोकमान्य तिलक मैंने इस चित्र में बनाये हैं।

मेरा भारत महान!

हिन्दी यू.एस.ए. की पाठशालाओं के संचालक/संचालिकाएँ

हिन्दी यू.एस.ए. उत्तरी अमेरिका की सबसे बड़ी स्वयंसेवी संस्था है। निरंतर १८ वर्षों से हिन्दी के प्रचार और प्रसार में कार्यरत है। हिन्दी यू.एस.ए. संस्था ने मोती समान स्वयंसेवियों को एक धागे में पिरोकर अति सुंदर माला का रूप दिया है। इस चित्र में आप हिन्दी यू.एस.ए. संस्था के स्वयंसेवी कार्यकर्ताओं, जो संस्था के मजबूत स्तम्भ हैं, को देख सकते हैं। किसी भी संस्था को सुचारु रूप से चलाने के लिए नियमावलियों व अनुशासन के धागे में पिरोना अति आवश्यक है। हिन्दी यू.एस.ए. की २३ पाठशालाएँ चलती हैं। पाठशाला संचालकों पर ही अपनी-अपनी पाठशाला को सुचारु रूप से नियमानुसार चलाने का कार्यभार रहता है। संस्था के सभी नियम व निर्णय सभी कार्यकर्ताओं की उपस्थिति में मासिक सभा में लिए जाते हैं। पाठशालाओं में बच्चों का पंजीकरण अप्रैल माह से ही आरम्भ हो जाता है। हिन्दी की कक्षाएँ ९ विभिन्न स्तरों में चलती हैं। नया सत्र सितम्बर माह के दूसरे सप्ताह से आरम्भ होकर जून माह के दूसरे सप्ताह तक चलता है।

न्यूजर्सी से बाहर अमेरिका के विभिन्न राज्यों में भी हिन्दी यू.एस.ए. के विद्यालय हैं। यदि आप उत्तरी अमेरिका के किसी राज्य में हिन्दी पाठशाला खोलना चाहते हैं तो आप हमें सम्पर्क कीजिए। हिन्दी यू.एस.ए. के कार्यकर्ता बहुत ही तीव्र गति से अपने उद्देश्य की ओर अग्रसर होते हुए अपना सहयोग दे रहे हैं। यदि आप भी अपनी भाषा, अपनी संस्कृति को संजोय रखने में सहभागी बनना चाहते हैं तो हिन्दी यू.एस.ए. परिवार का सदस्य बनें।

एडिसन पाठशाला

७०वां गणतंत्र दिवस

एडिसन पाठशाला में पिछले वर्ष की तरह इस बार भी भारत का गणतंत्र दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया। शुरुआत कक्षा के बच्चों की परेड से हुई और हर एक कक्षा के विद्यार्थी हॉल में जमा हुए। सभी के हाथ में भारत का झण्डा लहरा रहा था। ४७५ विद्यार्थियों के अलावा २५० से अधिक शिक्षक, स्वयंसेवक और अभिभावक भी इस कार्यक्रम में शामिल हुए। एक बार सभी के जमा होने और बाद में इतने लोगों का एक साथ भारत का राष्ट्रगान गाने से सभी का मन प्रफुल्लित हो गया और सभी भाव विभोर हो गए।

सौभाग्य से देवेंद्र जी और रचिता जी भी इस कार्यक्रम में शामिल हुए जिससे सभी का उत्साह और बढ़ गया, क्योंकि यह पहला मौका था जब वे दोनों एडिसन पाठशाला के किसी कार्यक्रम में शामिल हुए। रचिता जी ने बच्चों को सन्देश देते हुए कहा "आज स्कूल के दिनों की याद ताजा हो गई, ऐसा लग रहा है कि भारत में ही हम गणतंत्र दिवस मना रहे हैं"

श्री अजय पाटिल (कौंसिल मैन) और श्री महेश भागिया भी इस कार्यक्रम का हिस्सा बने। कुछ छात्र-छात्राएँ कविता और गाने तैयार करके लाये थे, जो उन्होंने बहुत ही भाव विभोर होकर सुनाये। वहाँ उपस्थित सभी लोगों को लड्डू बांटे गए और सभी ने एक दूसरे को गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएँ दीं।

हिन्दी यू.एस.ए. की सभी पाठशालाओं का हमेशा एक ही ध्येय होता है कि अमेरिका में जन्मे बच्चे भारत और भारतीय संस्कृति से जुड़े रहें। इसलिए हिन्दी यू.एस.ए. की सभी पाठशालाओं में भारत के सभी त्यौहार भी मनाये जाते हैं। न्यू जर्सी के टीवी एशिया ने भी इस कार्यक्रम को रिकॉर्ड किया और इसका प्रसारण पूरे अमेरिका में किया।

सत्र २०१८-१९

हिन्दी यू.एस.ए. के वर्ष भर के कार्य तथा कार्यक्रम

हिन्दी यू.एस.ए. एक ऐसी स्वयंसेवी संस्था है जो पूरे वर्ष सक्रिय रहती है। इसके हिन्दी शिक्षण का सत्र सितंबर माह से जून माह तक चलता है। इन दस महीनों में संस्था की सभी पाठशालाओं में हिन्दी कक्षाएँ तो प्रति शुक्रवार अनवरत चलती ही हैं, साथ ही नीचे दिए गए कार्य और कार्यक्रम भी वर्ष भर चलते रहते हैं। हिन्दी यू.एस.ए. जिस नियमितता तथा गंभीरता से कार्य करती है उसे देखते हुए भारत के एक उच्च पद पर आसीन हिन्दी विभाग के अधिकारी ने कहा था कि "यह संस्था नहीं संस्थान है और इस पर शोध होना चाहिए"। तो आइए जानते हैं हिन्दी यू.एस.ए. के वर्ष भर के कार्य।

१. पंजीकरण - पिछले ७ वर्षों से संस्था ऑन लाइन रजिस्ट्रेशन (**www.hindiusa.org**) कर रही है जिससे अभिभावकों और संचालकों का कार्य सुलभ हो गया है।

२. पुस्तक मुद्रण तथा वितरण - हिन्दी यू.एस.ए. ने अपनी स्वयं की पुस्तकें तथा पाठ्यक्रम ९ स्तरों में तैयार किया है जो विदेशों में जन्मे तथा पले-बढ़े विद्यार्थियों को ध्यान में रख कर बनाया गया है। प्रत्येक स्तर में ४-४ पुस्तकें तथा फ्लैश कार्ड्स का एक सेट सम्मिलित है। छोटे स्तरों में हिन्दी के मोबाइल ऐप का भी उपयोग किया जाता है। इन पुस्तकों के लिए ३ भंडार गृह हैं। ४००० विद्यार्थियों में इन पुस्तकों का सही वितरण पाठशाला संचालकों के लिए एक बड़ी चुनौती होता है।

३. प्रचार एवं प्रसार - ग्रीष्मकालीन अवकाश तथा पंजीकरण के समय संस्था दूरदर्शन, रेडियो तथा पुस्तक-स्टॉल के माध्यम से हिन्दी तथा हिन्दी कक्षाओं का प्रचार करती है।

४. त्योहार का परिचय - प्रवासी विद्यार्थियों को भारतीय त्योहार तथा संस्कृति का परिचय देने के लिए संस्था प्रतिवर्ष न्यू जर्सी में आयोजित दशहरे के आयोजन में सक्रिय रूप से भाग लेती है तथा दीपावली के समय प्रत्येक पाठशाला में दीपावली उत्सव का आयोजन धूम-धाम से किया जाता है। होली, मकर संक्रांति, लोहड़ी, बैसाखी आदि त्योहार जो सत्र के दौरान आते हैं उन्हें कक्षाओं में मनाया जाता है।

५. अर्धवार्षिक परीक्षा - दिसंबर माह में छुट्टियों के पहले लिखित तथा मौखिक अर्धवार्षिक परीक्षा का आयोजन किया जाता है जिसके लिए प्रतिवर्ष नए परीक्षा-पत्र बनाए जाते हैं।

६. शिक्षक अभिनंदन समारोह - हिन्दी यू.एस.ए. प्रतिवर्ष दिसंबर माह के प्रथम सप्ताह में अपने सभी ४५० स्वयंसेवकों का अभिनंदन तथा धन्यवाद करने के लिए प्रीतिभोज तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करता है। इस समारोह में सभी स्वयंसेवकों के जीवनसाथी भी आमंत्रित किए जाते हैं तथा कुछ चुने स्वयंसेवकों को प्रतिवर्ष उनकी विशेष सेवाओं के लिए पुरस्कृत किया जाता है तथा बाकी सभी स्वयंसेवकों को भी हिन्दी यू.एस.ए. उपहार प्रदान करता है।

७. विद्यार्थियों की भारत यात्रा - छात्रों को प्रोत्साहित करने और उनमें देशभक्ति की भावना जागृत करने तथा भारत से सम्बंध बने रहने के लिए हिंदी यू.एस.ए. उन्हें भारत यात्रा पर भी भेजता है, जिससे वे अपने संस्कारों की जन्मभूमि से जुड़ें रहें और भाषा एवं संस्कृति की ऊर्जा की उन्हें कभी कमी महसूस न हो।

८. पाठशाला स्तर पर कविता पाठ का आयोजन - प्रत्येक हिन्दी पाठशाला जनवरी माह में अपनी-अपनी पाठशाला में कविता-पाठ का आयोजन करती है जिसमें उस पाठशाला के सभी विद्यार्थियों को भाग लेने का अवसर मिलता है।

९. कर्मभूमि की तैयारी - जनवरी और फरवरी माह में सभी स्तरों के शिक्षक कर्मभूमि में भेजने के लिए विभिन्न प्रकार के प्रोजेक्ट विद्यार्थियों को देते हैं, जिनके माध्यम से विद्यार्थी हिन्दी के साथ-साथ भारतीय संस्कृति तथा इतिहास का ज्ञान भी प्राप्त करते हैं।

१०. अन्तर्शालेय कविता पाठ - इस प्रतियोगिता का आयोजन प्रति वर्ष फरवरी माह के अंत में किया जाता है। इस कविता पाठ में हिन्दी यू.एस.ए. की २० पाठशालाओं के विजेता विद्यार्थी स्तरानुसार प्रतियोगिता में भाग लेते हैं। यह प्रतियोगिता २ दिन चलती है तथा इसमें लगभग ४५० विद्यार्थी ९ स्तरों में भाग लेते हैं। प्रत्येक स्तर से १० सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थियों को चुन कर महोत्सव में होने वाले अंतिम चरण की प्रतियोगिता के लिए भेजा जाता है।

११. युवा कार्यकर्ताओं का अभिनंदन - इसका विस्तृत विवरण पेज १२ पर देखें।

१२. महोत्सव तथा परीक्षा की तैयारी - मार्च और अप्रैल माह में सभी पाठशालाओं के विभिन्न स्तरों में महोत्सव की प्रतियोगिताओं की तैयारी तथा परीक्षा के लिए पाठ्यक्रम का दोहराव प्रारम्भ हो जाता है।

१३. मौखिक परीक्षा - मार्च के अंतिम सप्ताह से लेकर अप्रैल के अंतिम सप्ताह तक सभी पाठशालाओं में मौखिक परीक्षा का आयोजन होता है, जिसके माध्यम से विद्यार्थियों की हिन्दी समझने, बोलने तथा पढ़ने की क्षमता को जाना जाता है। यह व्यक्तिगत परीक्षा होती है।

१४. हिन्दी महोत्सव - यह एक ऐसा सांस्कृतिक कार्यक्रम और मेला है जिसमें हिन्दी और हिंदुस्तान को प्यार करने वाले मिलते हैं तथा विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से विद्यार्थी अपने हिन्दी ज्ञान तथा अन्य कलाओं जैसे नृत्य, अभिनय, वेषभूषा, संगीत आदि का प्रदर्शन करते हुए अपने आपको भारत से जोड़ते हैं। महोत्सव में विभिन्न सामूहिक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है, जैसे लोक नृत्य प्रतियोगिता, विभिन्न त्योहार पर नृत्य, अभिनय गीत प्रतियोगिता, देशभक्ति गीत प्रतियोगिता, भजन प्रतियोगिता, नाटक प्रतियोगिता, हिन्दी ज्ञान तथा व्याकरण प्रतियोगिता तथा फ़ाइनल कविता पाठ प्रतियोगिता। इसी दिन हिन्दी यू.एस.ए. से स्नातक होने वाले विद्यार्थियों का दीक्षांत समारोह भी होता है। इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने के लिए भारत से विशेष अतिथि भी आते रहते हैं।

१५. वार्षिक परीक्षा - जून के प्रथम सप्ताह में लिखित वार्षिक परीक्षा का आयोजन सभी पाठशालाओं में किया जाता है तथा जून के मध्य में सभी विद्यार्थियों के प्रगति-पत्र तथा प्रमाण-पत्र देकर सत्र का अंत किया जाता है।

१६. वार्षिक पिकनिक - जून के अंत में पिकनिक का आयोजन किया जाता है जिसमें सभी शिक्षक शिक्षिकाएँ, पाठशाला संचालक और परिवार सम्मिलित होते हैं।

अब तो आप जान ही गए होंगे कि यदि किसी ने हिन्दी यू.एस.ए. को संस्थान कहा तो गलत नहीं कहा। हिन्दी यू.एस.ए. अपने सभी कार्यकर्ताओं का आभार व्यक्त करता है तथा उन्हें कोटिश: धन्यवाद देता है। उनके अथक प्रयास से जो हिन्दी की पवित्र धारा न्यू जर्सी और अन्य राज्यों में बह रही है वह प्रशंसनीय है।

क्या आप भी अपने बच्चों को भारतीय बनाना चाहते हैं?

क्या आप भी अपने बच्चों को हिन्दी सिखाना चाहते हैं?

क्या आप भी हिन्दी की सेवा कर आत्म संतोष चाहते हैं?

यदि हाँ तो हमारी वेबसाइट **www.hindiusa.org** पर जाएँ या हमें **1-877-HINDIUSA** पर फोन करें।

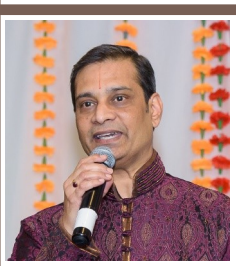

युवा स्वयंसेवक अभिनन्दन समारोह

माणक काबरा

हिंदी यू.एस.ए. संस्था पिछले १८ वर्षों से अमेरिका के न्यू जर्सी (१५) और कई और राज्यों (९) में हिंदी सिखाने में कार्यरत है। संस्था की इन पाठशालाओं से अब तक लगभग ७०० से भी ज्यादा विद्यार्थी स्नातक की उपाधि प्राप्त कर चुकें है। इनमें से कई विद्यार्थी आज हिंदी यू.एस.ए. में स्वयं सेवक के कार्य में अपना योगदान दे रहे हैं। पिछले वर्ष (११५) की तुलना में इस वर्ष २५% ज्यादा युवा स्वयं सेवकों (१५२) ने हिंदी पढ़ाने में अपनी रुचि दिखाई है। ज्यादा युवाओं का आगे आना यह दर्शाता है कि हमारी आने वाली पीढ़ी हिंदी के प्रचार प्रसार में कोई कमी नहीं रखेगी और हिंदी यू.एस.ए. के द्वारा जलाया गया हिंदी सिखाने का दीपक हमेशा यूँ ही जलता रहेगा।

हर वर्ष की तरह इस बार भी हिंदी यू.एस.ए. ने युवा स्वयं सेवकों के अभिनन्दन का कार्यक्रम एडिसन नगर में शनिवार मार्च ३०, २०१९ को रखा जहाँ ९० युवा स्वयं सेवकों के साथ पाठशाला संचालक भी उपस्थित थे। कार्यक्रम की शुरुआत हिंदी यू.एस.ए. के संस्थापक श्री देवेंद्र जी और रचिता जी के द्वारा भारतीय संस्कृति के अनुसार दीप प्रज्वलन तथा पिस्कैटवे की ईशा के द्वारा सरस्वती वंदना से हुई। इसके बाद देवेंद्र जी और रचिता जी ने स्वयं सेवकों को सम्बोधित किया और महत्वपूर्ण बातें बताईं जो उनके आने वाले समय में अवश्य ही काम आएँगी। इसके अलावा रचिता जी ने पूछा "कितने स्वयं सेवक है जिन्हें संस्कृत का कम से कम एक मंत्र आता हो, अपना हाथ खड़ा करें", किसी का भी हाथ खड़ा नहीं होने पर उन्होंने इसका महत्व बताया और जीवन में यह किस तरह सहायक हो सकता है उसके बारे में बातें बताईं।

अब मौका था हमारे युवा स्वयं सेवकों को सुनाने का, उनके बारे में ज्यादा जानने का। कार्यक्रम के संचालक माणक काबरा ने सभी पाठशालाओं के स्वयं सेवक और उनके संचालकों को एक-एक कर के मंच पर आमंत्रित किया। सभी ने हिंदी पढ़ाने, कक्षा में बच्चों के बारे में अनुभव और अपने बारे में एक विशेष बात बताई। किसी ने कहा उसने यू.एन. (यूनाइटेड नेशन) के मंच से भाषण किया तो कोई खेल में आगे, किसी को गाने का शौक तो कोई संगीत वाद्य बजने में आगे। कुछ ने बताया कि कैसे टेक्नोलॉजी के साथ हिंदी सीखना और भी सरल बनाया जा सकता है और वे उस पर काम कर रहें हैं। पाठशाला संचालकों ने भी अपने-अपने सवयंसेवकों की प्रशंसा करते हुए बताया कि स्वयंसेवकों के होने से उन्हें कितनी सहायता मिलती है। युवा स्वयंसेवकों ने कुछ सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए जिससे उनकी और भी रुचियों के बारे में पता चला जो भजन से लेकर फ़िल्मी गानों तक और बांसुरी वादन से लेकर नृत्य तक की कला शामिल थी। अंत में कुछ स्वयंसेवकों ने अपनी जिज्ञाषा दूर करने के लिए देवेंद्र जी और रचिता जी प्रश्न भी पूछे। सभी के सहयोग से यह कार्यक्रम बहुत ही सफल रहा। सभी युवा स्वयंसेवकों को एक साथ देख कर ऐसा अनुभव हुआ कि हमारी अगली पीढ़ी अब हिंदी की मशाल आगे बढ़ने के लिए एकदम तैयार है। हम आगे भी इसी तरह के कार्यक्रम आयोजन करते रहेंगे।

युवा सजग है

भारतीय ऐतिहासिक वास्तुकला का अनूठा उदाहरण

चौंसठ योगिनी मंदिर (ग्वालियर)

योगिता मोदी - स्वयं सेविका एवं संचालिका, नार्थ ब्रुंस्विक हिंदी पाठशाला

भारत के इतिहास के पन्नों में एक विशेष स्थान रखने वाली नगरी ग्वालियर मेरी जन्म-स्थली है। भारत के सर्वश्रेष्ठ किलों में से एक किला ग्वालियर में भी स्थित है। हिंदी यू.एस.ए. के छात्र-छात्राओं की दिसंबर २०१५ भारत-यात्रा के समय हम सभी वहाँ गए थे लेकिन हम उस समय एक अति प्राचीन स्मारक को देखने से चूक गए क्योंकि उसके बारे में हमें पता नहीं था और वह था मितावली गांव का चौंसठ योगिनी मंदिर। कहने को तो यह मंदिर है लेकिन इसका चित्र देखने और इसके बारे में जानने के बाद आप भी कहेंगे कि इसका महत्व एक मंदिर से ज्यादा अपनी अनूठी बनावट के कारण एक ऐतिहासिक स्मारक के रूप में है। वाकई अपने इतने पुराने समय में भी वास्तुकला के क्षेत्र में भारत तकनीकी रूप से इतना आगे था, यह देख कर आश्चर्य होता है और गर्व भी।

अभी हाल में ही मेरी एक पुरानी मित्र जो अभी भी ग्वालियर निवासी है ने जब इस मंदिर को घूमने के बाद कुछ तस्वीरें भेजीं तब मुझे इस जगह के बारे में पता चला और मुझे थोड़ा दुःख हुआ कि काश हमारे सभी भारत यात्री भी इसे देख पाते।

यह मंदिर एक ऊंची पहाड़ी पर है और इसकी बाहरी बनावट पूरी तरह से गोलाकार है। ऐसा कहा जाता है कि इसे ११वीं सदी में कच्छपघात राजा देवपाला ने बनवाया था। पुराने समय में मंदिर न केवल आस्था बल्कि साथ ही शिक्षा देने के भी केंद्र होते थे। इस मंदिर की विशेष बात यह है कि इसे सूर्य की परिक्रमा के आधार पर ज्योतिष एवं गणित की शिक्षा प्रदान करने के लिए बनवाया गया था।

तो देखा आपने इन चित्रों को, कुछ जानी पहचानी सी बनावट लग रही है। जी हाँ सही पहचाना, यह भारत की राजधानी दिल्ली स्थित हमारे संसद भवन जैसा है। या यह कहें कि संसद भवन इसके जैसा है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा घोषित इस

चौसठ योगिनी मंदिर

प्राचीन ऐतिहासिक स्मारक को मेरी देखने की उत्सुकता बहुत ज्यादा बढ़ती जा रही है। अब जब भी भारत जाने का अवसर मिलेगा, मैं इसे देखने अवश्य ही जाऊँगी। अकसर ऐसा होता है कि हम केवल प्रसिद्ध और जानी पहचानी पुरानी जगहों को ही देखने जाते हैं। लेकिन भारत में ऐसे अनगिनत भूले-बिसरे स्मारक और जगह हैं जो बहुत ऐतिहासिक और हमारे आस पास ही हैं। आइये हम प्रयास करें कि उनके बारे में भी जानें और सभी से उन्हें परिचित कराएँ।

आंतरिक-मंडप

ग्रीक और हिंदू पौराणिक कथाओं के बीच समानताएँ

अमित सेल

हिंदू और ग्रीक पौराणिक कथाओं में बहुत सी चीजें समान हैं। उदाहरण के लिए क्या आप जानते हैं कि हिंदू पौराणिक कथाओं में देवताओं के राजा इंद्र, ग्रीक पौराणिक कथाओं में देवताओं के राजा ज़ीउस की तरह हैं? दिलचस्प है न? अब चलो ग्रीक और हिंदू पौराणिक कथाओं के बीच की समानता पता लगाते हैं।

याद रखें मैंने कहा था कि ज़ीउस और इंद्र में बहुत समानता है। वे न केवल देवताओं के राजा हैं, बल्कि वे भी वज्र और वर्षा के देवता हैं। उनका प्राथमिक हथियार वज्र है। साथ ही उनकी पत्नियों में भी समानता हैं। जैसे ज़ीउस की पत्नी हेरा को दुनिया में सबसे सुंदर औरत के रूप में दर्शाया गया है, वैसे ही इंद्र की पत्नी इंद्राणी को भी सबसे सुंदर नारी के रूप में चित्रित किया गया है।

इतना ही नहीं, दोनों संस्कृति के महान योद्धाओं में भी बहुत समानता थी। अकिलिस और कर्ण यकीनन सबसे शक्तिशाली में से एक हैं। कर्ण की तरह अकिलिस के पास एक देवता के कारण अभेद्य कवच है। शाप और अपने जीवन के भाग्य के कारण दोनों मारे गए। इसके अलावा वे दोनों आधे भगवान थे। दोनों युद्ध के दौरान मृत्यु को प्राप्त हुए।

ग्रीक पौराणिक कथाओं की तरह हिंदू पौराणिक कथाओं में भी तीन मुख्य देवता हैं। शिव की तुलना पसायदन से की जा सकती है क्योंकि वे दोनों त्रिशूल लेकर चलते हैं और विनाश के लिए जाने जाते हैं। जैसा कि आप देख सकते हैं हिंदू और ग्रीक पौराणिक कथाओं में बहुत समानताएँ हैं।

दोस्ती

मेरा नाम ईशा शर्मा है और मैं बारह वर्ष की हूँ। मैं आठ वर्षों से हिन्दी यू.एस.ए. में जा रही हूँ। मैं अब वुडब्रिज पाठशाला में उच्च स्तर-२ में पढ़ती हूँ।

हमारे जीवन में अनमोल पल दोस्तों से ही मिलते हैं।
दोस्त वही जो साथ मिलकर हँसते और रोते हैं।
दोस्त जो आपके सुख और दुख में साथ रहते हैं।
आपको हिम्मत और हौसला देते हैं।
जो कठिन समय में आपके साथ रहते हैं।
जीवन के किसी भी मोड़ पर छोड़कर नहीं जाते हैं।
वही दोस्त सच्चे दोस्त कहलाते हैं।
दोस्त वही हैं जो एक दूसरे से झूठ नहीं बोल सकते हैं।
दोस्त वही है जिस से हम दिल की बात कर सकते हैं।
बिना सच्चे दोस्त के सूना-सूना है यह मन।

बबीता भारद्वाज, शिक्षिका, एडिसन पाठशाला

भारत के इतिहास में नारियों की भूमिका

जिस प्रकार से एक घर को बनाने में पुरुष एवं स्त्री दोनों का सहयोग सम्मिलित है, उसी प्रकार से एक देश को बनाने और विकसित करने में भी उस देश के नर-नारी दोनों का सहयोग रहा है। भारत देश के इतिहास में भारतीय नारियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। नारी अपना अस्तित्व अपने घर से आरम्भ करती है। पहले बेटी और बहन, फिर पत्नी एवं माँ बनकर संपूर्ण घर का दायित्व संभालती है। वही नारी फिर भविष्य में आगे चल कर पूरे समाज, देश और विश्व का कल्याण करती है।

भारत के इतिहास में ऐसी बहुत सी नारियाँ रही हैं जिनका समाज पर बहुत शक्तिशाली एवं प्रेरणादायी प्रभाव रहा है, जिन्होंने अपने असाधारण व्यक्तित्व एवं अविस्मरणीय योगदानों की अमिट छाप छोड़ी है। चाहे वह आज़ादी की जंग हो या पुरुष प्रधान समाज में अपने हक़ के लिये लड़ी गयी लड़ाई हो। भारतीय नारियों ने न केवल शिक्षा में बल्कि विज्ञान, कला, राजनीति एवं न्याय के क्षेत्र में भी स्वयं को सर्वोत्तम दिखलाया है। भारतीय महिलाओं ने स्वयं को कभी पुरुषों से कम नहीं आँका, चाहे वह स्वतंत्रता संग्राम में भागीदारी हो या देश के लिये दी अपनी जान हो, इतिहास में ऐसी बहुत सी वीरांगनाएँ हुई हैं जिनको पूरा विश्व जानता है।

झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई के नाम से कौन परिचित नहीं है कि कैसे उन्होंने स्त्री हो कर भी अकेले मैदान में अंग्रेजों के छक्के छुड़ा दिए, विषम परिस्थितियों में भी कभी घुटने नहीं टेके और पूरे पराक्रम से युद्ध करते हुए अंत तक लड़ती रहीं। वे बहुत होशियार घुड़सवार तथा महान योद्धा थीं।

इसी प्रकार देश की सेवा में सदैव तत्पर रहने वाली स्वतंत्रता सेनानी और देश की पहली राज्य गवर्नर जो कि भारत की पहली महिला कांग्रेस संगठन की अध्यक्ष रहीं सरोजनी नायडू को कौन नहीं जानता। वे महान लेखिका एवं कवयित्री भी थीं। उन्हें पूरा विश्व नाईटिंगेल के नाम से भी जानता है। उनके देशभक्ति भरे लेख पढ़ कर देशवासी राष्ट्रप्रेम से भर जाते थे। इसी दौर में कमलादेवी चट्टोपाध्याय का नाम भी इतिहास में अंकित है जो विदेश में रहते हुए भी राष्ट्र प्रेम एवं गांधी जी के विचारों से प्रेरित हो कर भारत लौट आयी थीं और उन्होंने महिलाओं की आत्म निर्भरता के लिए बहुत से लघु उद्योग शुरू किए ताकि वे आत्मनिर्भर बनें और ऐसी बहुत सी संस्थाएँ खोलीं जिनसे नारियों की स्थिति में बहुत सुधार आया। शिक्षा के क्षेत्र में नया कीर्तिमान स्थापित करने वाली आदरणीय सावित्री बाई फूले का नाम भी प्रमुख है जिन्होंने न केवल भारत की उस समय की अबला नारी की स्थिति में सुधार किए अपितु उन्हें शिक्षा के उपयुक्त साधन भी उपलब्ध कराए। उनके अथक प्रयासों से महिलाओं को जीवन में शिक्षा का महत्व समझ आया। उन्होंने भारत में पहली बार महिलाओं के लिये अलग से विद्यालय की स्थापना की।

इसी प्रकार से न्याय व चिकित्सा के जगत में जस्टिस अन्ना चैडी तथा डॉ० आनन्दी मोहन गोपाल का नाम अंकित है। जस्टिस चैडी भारत की पहली जज एवं हाई कोर्ट की महिला जज बनीं और क़ानून

के पन्नों में नारी शक्ति को प्रदर्शित कराया। ऐसे ही भारत की सर्वप्रथम महिला डॉक्टर की उपाधि ग्रहण कर आनन्दी गोपाल जी ने नए इतिहास का निर्माण किया। भारत की प्रथम पायलेट बनीं कैप्टन प्रेम माथुर ने भी नई दिशा में क़दम रख कर महिलाओं के लिए भविष्य के लिये एक नए पन्ने को उजागर किया। इतिहास में ऐसी कई महिलाएँ थीं जिनके भरसक प्रयत्नों तथा योगदानों के कारण इतिहास में बदलाव वाली एक ऐसी लहर आयी जिसने भारत को एक नई सफलता की ऊँचाइयों पर खड़ा कर दिया। उनके द्वारा की गयी सफल कोशिशें तथा निश्छल कर्तव्यों के आगे हम सभी भारतीय गर्व से भर जाते हैं।

भारतीय नारियों ने न केवल भारत बल्कि विश्व में भी नए कीर्तिमान बनाये हैं। धरती से लेकर चाँद तक का सफ़र तय किया है, अंतरिक्ष में जाने वाली पहली भारतीय महिला कल्पना चावला ने भारत को अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्रदान कराई। इसी तरह खेलकूद के मैदान में प्रसिद्ध दौड़ की महान खिलाड़ी पी.टी. ऊषा जो कि उड़नपरी के नाम से जानी जाती हैं ने भी समूचे विश्व में नए कीर्तिमान बनाए। नए भारत में नवीन सोच एवं युवा पीढ़ी के साथ देश की अन्य समस्याओं का सामना करने के लिये राजनीति में क़दम रखने वाली अपनी सूझबूझ तथा मजबूत इरादों वाली भारत की प्रथम महिला प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने एक प्रगतिशील भारत की नींव रखी। उनके प्रतिभाशाली व्यक्तित्व के कारण नारी शक्ति को बहुत बढ़ावा मिला। भारत की सभी महिलाएँ देश का गौरव एवं सम्मान हैं, अभिमान हैं।

इसी तरह और भी अनेक भारतीय महिलाएँ हुईं जिनकी मेहनत एवं लगन तथा योगदानों से आज भारत के इतिहास में उनका नाम आदरणीय एवं पूजनीय है। जिन्होंने निस्वार्थ भावना से देश की सेवा की और एक शक्तिशाली, प्रगतिशाली, अजर अमर इतिहास की रचना की जिनसे हमारी आने वाली पीढ़ियाँ हर पल उनकी आभारी रहेंगी।

वर्तमान समय में भी भारतीय नारियाँ क़दम से क़दम मिला कर पुरुषों का हाथ बँटा रही हैं। यह प्रेरणा उन्हें अपने इतिहास की उन कर्तव्यनिष्ट और प्रेरणादायी नारियों से ही प्राप्त होती है जिनके मनोबल एवं जीवनपर्यंत योगदानों के कारण ही आज भारत विश्व में अपना एक विशेष स्थान बनाए हुए है।

जय हिंद जय भारत

प्लैंसबोरो हिंदी पाठशाला

प्रथमा-१

"स्वर चार्ट"

किताबों की शक्ति - बच्चों की भक्ति

मायनो मुर्मु - संचालिका, ईस्ट ब्रंस्विक पाठशाला

हिंदी यू.एस.ए. के सभी शिक्षक-शिक्षिकाएँ एवं कार्यकर्ता जानते हैं कि पुस्तकों के माध्यम से नयी-नयी ज्ञानवर्धक बातें जानने को मिलती है जो बच्चों के लिए बहुत ही लाभदायक होती हैं। अच्छी पुस्तक से जो ज्ञान मिलता है वह जीवन में हमें कई समस्याओं से उबारता है। ये बातें हमें अपने बच्चों को बताना बहुत जरूरी है। ऐसी ही कोशिश हिंदी यू.एस.ए. ने की है।

इसमें रचिता जी का बहुत बड़ा योगदान रहा है। कौन कहता है कि बच्चों को सिर्फ वीडियो गेम्स, चॉकलेट, सॉकर खेलना, नाचना, गाना ही पसंद है। उस दिन के आँखों देखे अनुभव से बता सकती हूँ कि बच्चों ने वह कर दिखाया जो मेरी सोच से परे था। उस दिन कड़क सर्दी के बावजूद देवेंद्र जी और रचिता जी निर्धारित समय पर हमारे स्कूल आये। हमने संजय जी की मदद से बुक स्टाल लगाया था। इसमें शिक्षक शिक्षिकाओं और युवा-कार्यकर्ताओं का भी काफी योगदान था।

रचिता जी के कहने मैंने बच्चों के माता-पिता को सूचित कर दिया था कि वे अपने बच्चों को कुछ पैसे दे रखें ताकि उन्हें अगर कुछ पुस्तक पसंद आये तो खरीद सकें और यही काम आया, क्योंकि माता-पिता तो देवेंद्र जी और रचिता जी के साथ मीटिंग में थे।

बच्चों को किताबों से जोड़ने की कोशिश की। यह कोशिश इतना रंग लाएगी, आँखों को विश्वास नहीं हुआ। बच्चे अपने नन्हे-मुन्हे हाथों से अपनी मनपसंद, रंग-बिरंगी किताबों को पलट-पलट कर देख रहे थे,

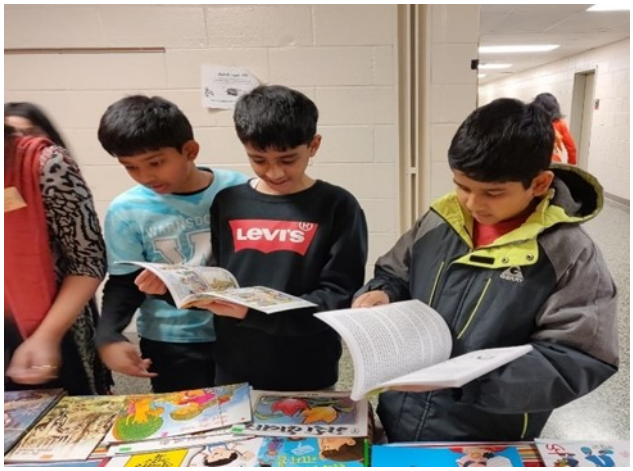

और अपनी मनपसंद किताब खरीद भी रहे थे - जैसे पंचतंत्र, अकबर-बीरबल की कहानी आदि। बच्चे वहां से जाना नहीं चाह रहे थे। हर स्तर के बच्चों के साथ यही नजारा देखने को मिल रहा था। मैंने बच्चों को कभी हिंदी की किताबें इस तरह खरीदते नहीं देखा। ऐसा लग रहा था जैसे बच्चे किताबों से मंत्र मुग्ध थे।

इस तरह के अनुभव मुझे १० वर्ष पहले हुए थे जब मैंने हिंदी यू.एस.ए. के पहले हिंदी-महोत्सव में किताबों का स्टाल और अन्य स्टाल जैसे खाने-पीने, कपड़े-गहने आदि के स्टाल लगे देखे थे, जहाँ दो दिनों तक सुबह आठ बजे से शाम के आठ बजे तक चहल-पहल रहती थी। तब मेरे बच्चे छोटे थे। मैं साड़ी की दुकान में साड़ी देख रही थी, और मेरे बच्चे खड़े-खड़े बड़े ही ध्यान से किताब स्टाल में किताबें पढ़ रहे थे। बाद में हमने ढेर सारी किताबें भी खरीदीं।

आजकल के इस वैज्ञानिक युग में टी.वी, स्मार्टफ़ोन, इंटरनेट ही सबके मनोरंजन का साधन बन चुका है। लेकिन ऐसा सोचना सही नहीं है। क्योंकि अच्छी पुस्तकें, जो बच्चों के दिल को छुएँ, उनके सामने रखें, तो वह भी उनके मनोरंजन का साधन बन सकता है और उनका ज्ञान भी बढ़ा सकता है। जब मैं घर वापस आ रही थी तो बार-बार वह दृश्य मेरे सामने आ रहा था और अब यह जीवन की एक यादगार बन गया है। हिंदी यू.एस.ए. का यह अनुभव मैंने आप सब के साथ बाँटने की कोशिश की है। हिंदी यू.एस.ए. के हर कार्यकर्ता के योगदान एंव नए विचार और उनकी सकारात्मक सोच से ही यह सब सम्भव हो पा रहा है। मैं हिंदी यू.एस.ए. की सदा ही आभारी रहूँगी।

हिंदी यू.एस.ए. की सदा जय हो।

नमस्ते,

मेरा नाम पारुल काम्बोज है। मैं स्टैम्फ़र्ड हिंदी स्कूल में पिछले तीन वर्षों से हिंदी पढ़ा रही हूँ। मुझे बच्चों को हिंदी पढ़ाना बहुत अच्छा लगता है। मैं कभी कभी अपनी दिनचर्या में से थोड़ा समय निकालकर कुछ लिखना पसंद करती हूँ। धन्यवाद

व्याकुल मन

निकला था मैं ख़ुद को ढूँढ़ने, जीवन रूपी पथरीली राह पर।
कठिन था रास्ता, साथ ना कोई, काँटे बिखरे थे इधर उधर।
दूर थी मंज़िल हाथ थे खाली, बढ़ा चला उम्मीद पकड़।
कोई कहे जीवन है तृष्णा, कोई कहे वैरागी बन।
मेरा मन तो तृप्ति माँगे, आगे बढ़ तू हो के निडर।
तोड़ के बंधन मोह माया का, श्रृष्टि का तू ले आनंद।
जीवन है कभी धूप कड़कती, और कभी लगे शीतल शांत।
संघर्षों का है एक पिटारा, मैंने तो यह जान लिया।
गिरना संभलना टूटना बिखरना, सबको अपना मान लिया।
आया जब आईना सामने, देखा तब ख़ुद को ख़ुद से।
पड़ी नज़र हैरान रह गया, मन था विचलित अंदर से।
मन बोला क्या ढूँढ़े पगले, जीवन पथ पर चलता चल।
काँटों से बचना तू प्यारे, फूल खिला अब डगर डगर।
मंज़िल अपने आप पाएगा, सोने सा तप कर तू निखर।

सीमा वशिष्ट, अनुजा गुप्ता, प्लेंसबोरो हिंदी पाठशाला, मध्यमा-२

भारतीय इतिहास - एक गौरवशाली परंपरा

भारत को एक उपमहाद्वीप कहा जाता है। इसके उत्तर में हिमालय तथा दक्षिण में हिन्द महासागर हैं। भारत देश के निवासियों को भारतीय कहा जाता है। भारत का इतिहास हज़ारों वर्ष पुराना है। सिंधु घाटी सभ्यता इसका उदाहरण है। यह सभ्यता अपने आप में काफ़ी विकसित थी। इसके बाद १५०० ई.पू. भारत में आर्यों के आगमन का प्रमाण मिलता है। इस काल को वैदिक काल कहा जाता है। इसी काल में वेदों की रचना भी की गयी। वर्तमान में हमारे दो प्रमुख ग्रन्थ, रामायण और महाभारत की सत्यता भी वैज्ञानिकों द्वारा स्थापित की गयी है।

३२६ ई.पू. सिकंदर ने भारत पर हमला किया। राजा पोरू ने सिकंदर को कड़ी चुनौती दी। राजा पोरू ने लड़ाई में हाथियों का उपयोग किया जिस से युद्ध में काफी फ़ायदा हुआ था परन्तु अंत में सिकंदर ने पोरू को हरा दिया। गुप्त साम्राज्य (३२० ई.पू.) भी भारत का एक बहुत विकसित साम्राज्य था, जिसे भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग भी कहा जाता है। इस साम्राज्य के बाद भी बहुत सारे राजाओं ने भारत पर राज किया लेकिन राजाओं की आपसी लड़ाई के कारण मुग़लों के आक्रमण से भारत सुरक्षित नहीं रह सका और मुग़ल भारत में आ पहुँचे। कुछ मुग़ल बादशाहों ने भारत में कई प्रसिद्ध इमारतों का निर्माण कराया, जिनमें से ताजमहल एक है।

मुग़लों के बाद भारत में अंग्रेज़ आये और उन्होंने भी २०० वर्षों तक भारत को लूटा। उन्होंने भारतीयों पर बहुत अत्याचार किए। सन् १८५७ में अंग्रेज़ों के खिलाफ प्रथम स्वतंत्रता संग्राम हुआ। झाँसी की रानी उन स्वतंत्रता सेनानियों में से एक थीं। वे घुड़सवारी और तीरंदाजी में माहिर थीं। उन्होंने अँग्रेज़ों से युद्ध में लोहा लिया, किन्तु यह क्रांति सफल न हो सकी।

कुछ समय बाद एक बार फिर से भारतीयों ने आज़ादी पाने के लिए कोशिश शुरू की। इस संग्राम में सुभाष चंद्र बोस, भगत सिंह, चंद्रशेखर आज़ाद और महात्मा गाँधी जैसे नेताओं ने भाग लिया। गांधीजी ने सत्य और अहिंसा के आंदोलन जैसे, डाँडी यात्रा, भारत छोड़ो और सत्याग्रह चलाये। इन सभी स्वतंत्रता सेनानियों के प्रयासों से अंग्रेज़ भारत को छोड़ने पर मजबूर हुए, और १५ अगस्त सन् १९४७ को भारत आज़ाद हो गया। भारत में अनेक भाषाएँ और धर्म हैं। भारत का इतिहास सुनहरा और गौरवशाली रहा है।

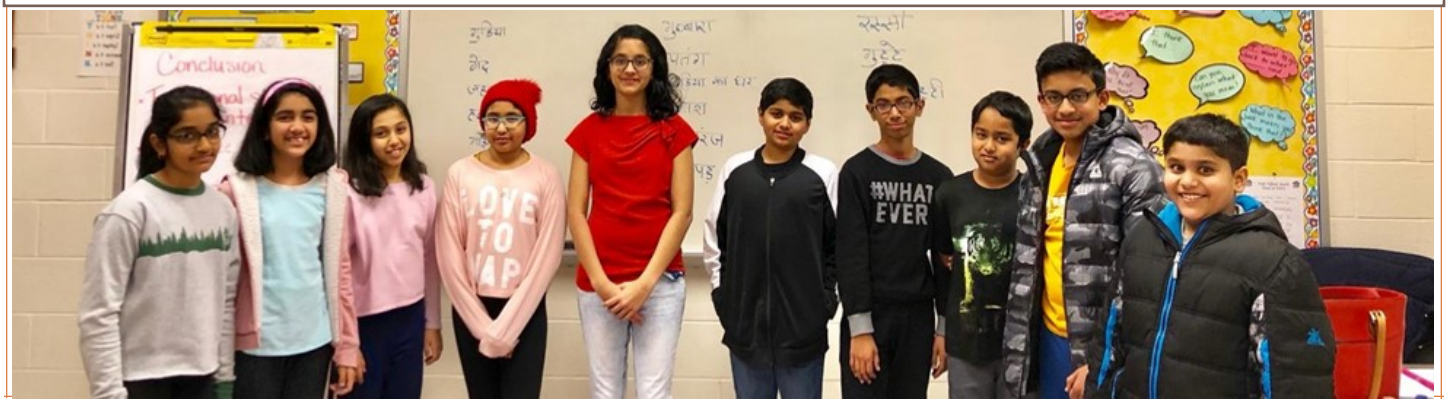

GIVE YOUR CHILD AN ACADEMIC ADVANTAGE THAT LASTS A LIFETIME.

Enroll them in Kumon today.

Millions of parents and kids around the world have experienced the benefits of Kumon. Enroll today and give your child:

- Stronger skills in math and reading
- Better study habits
- The confidence to succeed in the classroom, and in life

To learn more, we invite you to meet with a Kumon Instructor at a Kumon Center near you.

Kumon Math and Reading Centers of

CHERRY HILL
2020 Springdale Rd.
Cherry Hill, NJ 08003
856.751.4533
kumon.com/cherry-hill

MOUNT LAUREL
3111 Route 38 West, Unit #17
Mt. Laurel, NJ 08054
856.780.5130
kumon.com/mt-laurel

VOORHEES
200 - 300 White Horse Rd., Unit #17
Voorhees, NJ 08043
856.346.4450
kumon.com/voorhees

KUMON® Where Smart Kids Get Smarter.

©2019 Kumon North America, Inc. All rights reserved.

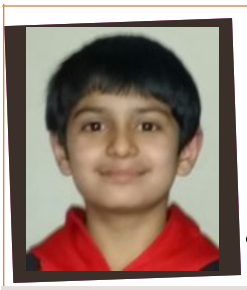

प्राचीन भारत

मोहित पाठक

नमस्ते, मेरा नाम मोहित पाठक है। मैं चेरी हिल हिंदी पाठशाला कि उच्चस्तर-१ कक्षा में पढ़ता हूँ। मैं हेनरी बेक मिडिल स्कूल में सातवीं कक्षा में पढ़ता हूं। मुझे गणित और विज्ञान पसंद है। मुझे सॉकर खेलना अच्छा लगता है। मुझे पाठ्योत्तर गतिविधियों में भाग लेना भी पसंद है। मैं अपने स्कूल में सीनेटर हूँ। मुझे किताबें पढ़ना पसंद है। अंग्रेजी और हिंदी के अलावा, मैं गुजराती भाषा भी बोलता हूँ और मैं संस्कृत भाषा का उत्साही छात्र हूँ। मुझे वैदिक मंत्रों का जाप करना पसंद है। मैं आध्यात्मिक हूँ और मैं वर्तमान में "भगवद्गीता" और "तत्त्व बोध" का सार अंग्रेजी में पढ़ रहा हूँ। हालाँकि, भविष्य में मैं अपने संस्कृत ज्ञान के द्वारा प्राचीन भारत के विभिन्न शास्त्रों के सार को पहले-पहल समझना चाहूँगा।

जब हम प्राचीन भारत के बारे में सोचते हैं तो सर्वप्रथम भारत के प्राचीन ग्रन्थ और शास्त्र हमारे विचार में आते हैं। प्राचीन भारतीय शास्त्रों को दो श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है ***श्रुति*** *(वेद)* और ***स्मृति*** *(उपवेद, इतिहास, पुराण, आगम, दर्शन, वेदाङ्ग, धर्मशास्त्र)*।

श्रुति:

श्रुति का अर्थ है "जो सुना गया" ***वेद*** श्रुति है। ऋषियों ने वेदों को सुना था। वेद, परब्रह्म (परब्रह्मन्) द्वारा बताए गए शाश्वत सत्य के संग्रह हैं। प्राचीन भारत के ऋषि शाश्वत ज्ञान को लोगों तक पहुँचाने के माध्यम थे। श्रुति को चार वेदों में विभाजित किया गया है। वो हैं: ***ऋग्वेद***, ***यजुर्वेद***, ***सामवेद*** एवम ***अथर्ववेद***।

प्रत्येक वेद के चार भाग होते हैं। वो हैं: १) ***संहिता***, २) ***ब्राह्मणम्*** (मंत्र और अनुष्ठान के स्पष्टीकरण), ३) ***आरण्यक*** ४) ***उपनिषद*** । उपनिषद वेदों का सबसे महत्वपूर्ण भाग हैं। उपनिषदों में वेदों का सार और लक्ष्य समाहित है । संपूर्ण वेद की विषय-वस्तु को *कर्म-काण्ड*, *उपासना-काण्ड* और *ज्ञान-काण्ड* में विभाजित किया गया है। ***उपनिषद*** को ***वेदांत*** भी कहा जाता है और यह ज्ञान कांड में समाहित है। वैसे तो कई सारे उपनिशद हैं परन्तु १३ का अध्ययन सबसे अधिक मात्रा में किया जाता है। वो हैं: ईशोपनिषद, केनोपनिषद, कठोपनिषद, प्रश्न उपनिषद, मुंडकोपनिषद, मांडूक्योपनिषद, ऐतरेयोपनिषद, तैत्तिरीयोपनिषद, छान्दोग्योपनिषद, बृहदारण्यक उपनिषद, कौशीतकी उपनिषद, श्वेताश्वतर उपनिषद और मैत्रायणी उपनिषद।

भगवदगीता: पारंपरिक रूप से भगवदगीता को पंचमवेद (पांचवां वेद) माना जाता है और इसे श्रुति ग्रंथों के अंतर्गत समावेश किया गया है।

स्मृति:

स्मृतियाँ वेदों की शिक्षाओं पर आधारित हैं। वे राष्ट्रीय, सामाजिक, पारिवारिक और व्यक्तिगत दायित्वों को नियंत्रित करती हैं। स्मृति का अर्थ है "जो स्मरण से किया गया"।

उपवेद: चार **उपवेद** हैं। वो हैं १) आयुर्वेद - स्वास्थ्य और चिकित्सा का विज्ञान (ऋग्वेद और अथर्ववेद से संबंधित) २) धनुर्वेद - युद्ध का विज्ञान जो यजुर्वेद से जुड़ा है ३) गान्धर्ववेद - संगीत का विज्ञान (सामवेद से

जुड़ा है) ४) स्थापत्यवेद - वास्तुकला का विज्ञान (अथर्ववेद से जुड़ा है)।

इतिहास: प्राचीन भारत के दो मुख्य इतिहास हैं रामायण और महाभारत।

पुराण: पुराणों का उद्देश्य जनता के मन में वेदों की शिक्षाओं को बढ़ावा देना है और ठोस उदाहरणों, कहानियों, किंवदंतियों, संतों, महात्माओं और महापुरुषों के जीवन, महान ऐतिहासिक घटनाओं के माध्यम से भगवान की भक्ति उत्पन्न करना है। कुल मिलाकर अठारह मुख्य पुराण हैं। वो हैं, विष्णु पुराण, नारद पुराण, श्रीमद्भागवत पुराण, गरुड़ (सुपर्ण) पुराण, पद्म पुराण, वराह पुराण, ब्रह्म पुराण, ब्रह्माण्ड पुराण, ब्रह्म वैवर्त पुराण, मार्कंडेय पुराण, भविश्य पुराण, वामन पुराण, मत्स्य पुराण, कूर्म पुराण, लिंग पुराण, शिव पुराण, स्कंद पुराण, और अग्नि पुराण। इनमें से छह सात्विक पुराण हैं और विष्णु की महिमा के बारे में बताते हैं; छह राजसिक हैं और ब्रह्मा की महिमा के बारे में बताते हैं; छह तामसिक हैं और शिव की महिमा के बारे में बताते हैं।

आगम: आगम ईश्वरीय उपासना का धर्मशास्त्रीय ग्रंथ और व्यावहारिक नियमावली हैं। आगम तीन प्रकार के होते हैं। वे तंत्र, मंत्र और यन्त्र हैं। आगम ग्रंथों की तीन मुख्य शाखाएँ *शैववाद (शिव), वैष्णववाद (विष्णु), शक्तिवाद (देवी)* हैं। आगम साहित्य में २८ शैव आगम, ७७ शाक्त आगम (जिन्हें तंत्र भी कहा जाता है), और १०८ वैष्णव आगम (इसे पंचरात्र संहिता भी कहा जाता है), और कई उप-आगम शामिल हैं।

दर्शन: दर्शन के छः विभाग होते हैं – षट-दर्शन – छह दर्शन (या चीजों को देखने के तरीके), आमतौर पर छः प्रणालियां या विचार के छह अलग-अलग दृष्टिकोण। वो हैं: १) *न्याय (गौतम ऋषि द्वारा)*, २) *वैशेषिक (कणाद ऋषि द्वारा)*, ३) *सांख्य (कपिल मुनि द्वारा)* ४) *योग (पतंजलि महर्षि द्वारा)* ५) *पूर्व मीमांस - जैमिनी द्वारा* ६) *उत्तर मीमांस (ब्रह्मसूत्र अथवा वेदांतसूत्र) - बदायण व्यास द्वारा*। दर्शन को तीन जोड़ी रचनाओं में विभाजित किया गया है, जोकि वेदों के दर्शन को तर्कसंगत पद्धति के दृष्टिकोण से समझाते हैं। वे हैं: न्याय और वैशेषिक, सांख्य और योग, और मीमांस और वेदांत।

वेदाङ्ग: वेदाङ्ग का शाब्दिक अर्थ है वेदों का अंग। कुल मिलाकर छह वेदाङ्ग हैं। शरीर के अंगों की तरह वे वेदों और वैदिक परंपराओं के अध्ययन और संरक्षण में विभिन्न रूप से सहायक कार्य करते हैं। कुल मिलकर छह वेदाङ्ग हैं - *शिक्षा, छंद, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष और कल्प*। ये विषय प्राचीन वैदिक शिक्षा प्रणाली का एक अभिन्न और अनिवार्य हिस्सा है।

धर्मशास्त्र: *प्राचीन भारत के कई सारे धर्मशास्त्र* हैं। उनमे से एक उदाहरण *"मानव-धर्मशास्त्र"* है। इसे ***मनुस्मृति*** के नाम से भी जाना जाता है।

"यदि हम से पूछा जाता कि आकाश तले कौन सा मानव मन सबसे अधिक विकसित है, इसके कुछ मनचाहे उपहार क्या हैं, जीवन की सबसे बड़ी समस्याओं पर सबसे अधिक गहराई से किसने विचार किया है और इसके समाधान पाए हैं तो मैं कहूंगा इसका उत्तर है भारत।"

- मेक्स मुलर (जर्मन विद्वान)

राजकुमारी रत्नावती

ईशा श्रीवास्तव

नमस्ते, मेरा नाम ईशा श्रीवास्तव है। इस वर्ष मैं साउथ ब्रंस्विक हिंदी पाठशाला में उच्चस्तर-१ में पुनीता जी और रुचि जी की कक्षा में युवा छात्र स्वयंसेवक हूँ। चित्रकारी, फोटोग्राफी और संगीत में मेरी रुचि है। मुझे अपने परिवार और सहेलियों के साथ रहना, अपनी संस्कृति, ज्ञान, और विज्ञान को जानना अच्छा लगता है।

पिछले वर्ष मैं हिंदी यू.एस.ए. भारत यात्रा के लिए चुनी गयी थी। यात्रा की तैयारी के लिये मैंने उन सभी जगहों के बारे में कुछ पूर्व जानकारी प्राप्त करनी शुरू की, जहाँ हमें जाना था। उस समय मैंने राजस्थान राज्य के जैसलमेर नगर की एक राजकुमारी, रत्नावती का किस्सा पढ़ा जो मुझे बहुत ही रोचक और प्रेरणापद लगा। तब मुझे मेरे भारतीय मूल की **लड़की** होने पर गर्व अनुभव हुआ। आप भी इसे पढ़ें और सराहें:

राजकुमारी रत्नावती के पिता, जैसलमेर के नरेश महारावल रत्नसिंह थे। एक बार जब वे जैसलमेर से बाहर शत्रुओं से लड़ने गए तब उन्होंने रत्नावती को किले का ध्यान रखने का दायित्व दिया। महारावल रत्नसिंह किले में नहीं है, यह जानकार दिल्ली के मुग़ल बादशाह अलाउद्दीन की सेना ने जैसलमेर के किले पर हमला बोल दिया और किले को चारों ओर से घेर लिया। लेकिन राजकुमारी रत्नावती डरी नहीं। उसने अपने सैनिकों का मार्ग दर्शन किया। शत्रु सेना का सेनापति मालिक काफूर था। जब भी शत्रु सेना आक्रमण करती, रत्नावती चतुरता से उनको हराती जाती। अंत में मालिक काफूर की सेना को दूसरा रास्ता लेना पड़ा। वे किले की दीवार पर चढ़ने लगे। तब रत्नावती ने एक बढ़िया योजना बनाई। जब दुश्मन के सैनिक किले की दीवार पर चढ़ कर ऊपर तक आ गये, तब उनके ऊपर गरमा गरम तेल और भारी पत्थर फेंक कर उन्हें गिराकर हरा दिया। ऐसे और कई हमलों को राजकुमारी ने अपनी होशियारी और सजगता से विफल कर दिया। इस सब के बाद सेनापति मालिक काफूर को समझ में आया कि किले पर विजय पाना बहुत मुश्किल होगा। तब उसने किले के द्वारपाल को सोना चांदी (धन) का लालच दिया ताकि वह रात में उसकी सेना को किले के दरवाजे से अन्दर आने दे। द्वारपाल ने चुपचाप जाकर यह बात राजकुमारी को बता दी और रत्नावती ने कुछ सोच कर द्वारपाल को बात मान लेने को कही। पर मालिक काफूर को यह पता नहीं था।

रात में मालिक काफूर और उसके कुछ सैनिकों ने द्वारपाल के साथ किले के दरवाजे से प्रवेश किया। अंदर आने के बाद द्वारपाल एक छुपे हुए रास्ते से गायब हो गया और किले के दरवाजे उनके पीछे बंद कर दिए गए। शत्रु सेना चकरा गयी। उन्होंने देखा कि रत्नावती किले के शिखर पर बैठी उनकी राह देख रही थी। रत्नावती और सेना ने सभी विरोधी सैनिकों को सरलता से कैद कर लिया।

किले को बाहर से अभी भी शत्रु सेना घेरे हुए थी। इसीलिए भोजन पानी, आदि किले के अंदर और बाहर नहीं पहुँच सकता था। रत्नावती ने फिर भी अपनी प्रजा और कैदी शत्रु सैनिकों का पूरा ध्यान रखा। जब खाना कम बचा तो वह खुद भूखी रहीं किन्तु उसने अपने हर सैनिक को एक मुट्ठी भर खाना और कैदी सैनिकों को दो मुट्ठी भर खाना भेजा।

शत्रु कैदी इस उदारता से बहुत प्रभावित हुए।

जब अलाउद्दीन को दिल्ली में पता चला कि उसका सेनापति कैद में है और जैसलमेर किले को अब तक जीता नहीं जा सका है। तब उसने महाराज महारावल को एक गुप्त संदेश भिजवाया। कुछ दिन बाद राजकुमारी ने किले से देखा कि उनके पिता की सेना वापस आ रही है किन्तु शत्रु सैनिक उनसे बिना लड़े, सामान समेटे किले का घेरा छोड़ कर जा रहे थे।

रत्नावती ने जीत की ख़ुशी में मालिक काफ़ूर और उसके सिपाहियों को कैद से छोड़ दिया। तब उन सबने राजकुमारी रत्नावती से सिर झुकाकर कहा "राजकुमारी आप साधारण लड़की नहीं हैं। आप वीर तो हैं ही, दयालु और पूज्यनीय भी हैं।" राजकुमारी रत्नावती ने खुद भूखी रहकर अपनी प्रजा और अतिथि को पहले खिलाया और सबका पूरा ध्यान रखा।

तो है ना यह भारतीय इतिहास का एक गौरवशाली किस्सा!!! मैं भी उनकी तरह एक वीर, बुद्धिमान और दयालु लड़की बनना चाहूंगी। उनको मेरा सादर प्रणाम, अभिनन्दन। **बाहरी कई विचारधाराएं हमारे यहाँ आयीं और इन्होंने हम पर असर डाला, लेकिन भारत की अपनी प्रतिभा और संस्कृति इतनी ताकतवर थी कि वह इस धारा में बह नहीं गयी, बल्कि उसने इसे भी अपने में मिला लिया।**

भारत का स्वाधीनता संग्राम

मेरा नाम मयूरिका बेरा है। मैं ब्रुंस्विक एकर्स एलीमेंट्री स्कूल में पाँचवीं कक्षा में पढ़ रही हूँ। मैं हिंदी यू.एस.ए. में ए-१ कक्षा में पढ़ती हूँ।

भारत का इतिहास पाँच हज़ार वर्ष पुराना है। इस इतिहास में बहुत सारी रोचक कहानियाँ हैं। उनमें से एक है - भारत का स्वाधीनता संग्राम। सोने की चिड़िया कहे जाने वाले भारत पर ब्रिटिश का शासन था। अंग्रेज़ों का शासन भारत पर १०० वर्षों से भी ज्यादा देर तक रहा। भारतीयों ने आज़ादी के लिए काफी संघर्ष किया था। हज़ारों लाखों लोगों ने आज़ादी के लिए अपने प्राणों का बलिदान दिया। रानी लक्ष्मी बाई, तिलक, भगत सिंह, आज़ाद, नेताजी सुभाष चंद्र, महात्मा गाँधी, सरदार पटेल जैसे नेताओं ने इस आज़ादी की लड़ाई का नेतृत्व किया। अंग्रेज़ भारत का खज़ाना और सम्पदा लूट रहे थे। वे भारतीयों पर तरह-तरह के अत्याचार करते थे और अधिकारों से वंचित करते थे। अपने ही देश में भारतीयों को सरकार चुनने और नियम बनाने का अधिकार नहीं था। देश की आज़ादी के लिए कुछ लोगों ने अहिंसा का पथ अपनाया और कुछ लोगों ने हिंसा का पथ अपनाया। गाँधी जी ने 'भारत छोड़ो' आंदोलन किया और नेताजी ने 'आज़ाद हिन्द फौज' की रचना की। सभी लोगों के असंख्य बलिदानों के बाद १५ अगस्त १९४७ को भारत आज़ाद हुआ। लेकिन जाते-जाते अंग्रेज़ों ने भारत को दो हिस्सों में बाँट डाला। पंडित नेहरू भारत के प्रथम प्रधानमंत्री बने। सभी भारतीय एक बेहतर भविष्य की आशा करने लगे।

आज़ादी जहाँ अधिकार देती है, वहाँ बहुत सी जिम्मेदारी भी प्रदान करती है। हम बच्चे बहुत भाग्यशाली हैं क्योंकि हमने आज़ाद भारत में जन्म लिया है। भारत के इतिहास में ऐसी बहुत सी कहानियाँ हैं। हमें भारत का इतिहास अवश्य पढ़ना चाहिए।

हमने कुछ नया जाना

शिक्षिका - रचिता सिंह, चेरी हिल, उच्च स्तर - २

मैंने अपनी कक्षा को इतिहास के ऐसे ३ विषय दिए थे जिनके बारे में मेरे विद्यार्थी बहुत कम जानते थे। उन्होंने २-२ और ३-३ के समूह में इन विषयों पर खोज की और लेख लिखे।

पहला विषय था "**सोने की चिड़िया**"- अकसर हम और हमारे गाने भारत को "सोने की चिड़िया" कह कर बच्चों को यह बताते हैं कि भारत पहले "सोने की चिड़िया" था। परंतु सोने की चिड़िया का अर्थ क्या है? सोने की चिड़िया कहलाने वाला भारत कैसा था? यह बहुत कम बच्चे जानते हैं।

दूसरा विषय था "**महाराजा विक्रमादित्य**" - एक अद्वितीय प्रशासक जिसके बारे में हमारी युवा पीढ़ी बिल्कुल नहीं जानती है। जिसके नाम को हम विक्रम संवत के रूप में हिन्दू कैलेंडर में वर्षों से लिखते आ रहे हैं, परंतु यह नाम कहाँ से आया? यह हम नहीं जानते।

तीसरा और अंतिम विषय था "**भारत में मुगलों का शासन**" - हम अक्सर २०० वर्षों तक अंग्रेजों की गुलामी वाले भारत की बात तो करते हैं, परंतु अंग्रेजों के पहले ४०० वर्षों तक हम पर मुगलों ने राज किया और अत्याचार किए, हमें लूटा और हमारा धर्मांतरण किया गया। यह बात बहुत कम बच्चे जानते हैं। आज कर्मभूमि के माध्यम से बहुत सारे अभिभावक और विद्यार्थी भी यह सब जानेंगे।

For 35 years, the DATA Inc. Global Group of Companies has provided IT Solutions to clients throughout North America, Europe and Asia.

201.802.9800 infonj@dataincusa.com

मेहुल मालिक

सोने की चिड़िया भारत

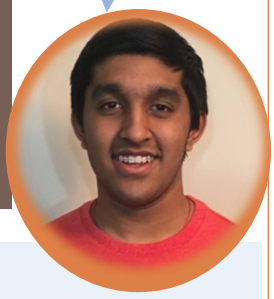

मुझे राजनीति, वाद-विवाद, संगीत एवं अभिनय में विशेष रुचि है। मुझे टेनिस खेलना अच्छा लगता है।

विक्रम मेय्याप्पन

मुझे अनेक भाषाएँ सीखना बहुत पसंद है।

सन् ७०० से लेकर १७०० तक काल वह काल था जब भारत सोने की चिड़िया कहलाता था। इस काल में भारत ज्ञान, व्यापार, कला तथा वैभव का केंद्र था।

सन १००० में भारत का जी. डी. पी. विश्व के जी. डी. पी. का एक चौथाई था। भारत पानी के जहाज़ों द्वारा मसालों, कपड़ों, आभूषणों, अनाजों, सोना, चाँदी, ताँबा, क्रोमाइट, हीरे, परमाणु खनिज, जिप्सम आदि का निर्यात करता था। इस व्यापार के लिए भारत ने सिक्के पर आधारित प्रणाली को अपनाया था। वह सोने के, देवों के चित्रों वाले और चाँदी के साँपो के चित्रों वाले सिक्कों का उपयोग करते थे। यह वह समय था जब भारत बहुत धनवान था। यहाँ की क़ानून व्यवस्था, बहुत उच्च कोटि की थी। राजा स्वयं वेष बदलकर जनता की समस्याओं का पता लगाते थे।

विदेशियों के लिए उस समय भारत केवल व्यापार के कारण ही आकर्षण का केंद्र नहीं था बल्कि वे इसके ज्ञान और कला को सीखने के लिए भी भारत आते थे। यह वह समय था जब भारत मगध (बिहार) में नालन्दा और तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालय हिन्दू धर्म के ज्ञान के साथ आयुर्वेद, अर्थशास्त्र, गणित तथा राजनीति शास्त्र का ज्ञान सारी दुनिया को बाँट रहे थे। वल्लभी जैसे विश्वविद्यालय में अनेक कठिन विषय पढ़ाए जाते थे जिन्हें पढ़ने दूर-दूर के देशों के लोग उस समय कठिन यात्राएँ करके आते थे। यही कारण था कि समय भारत "विश्व गुरु" कहलाता था।

भारत अपने मंदिरों, महलों, किलों और भवनों के आर्किटेक्चर में सर्वश्रेष्ठ था। उस ज़माने के मंदिरों में हम आज भी सुंदर वास्तुकारी और वास्तुशास्त्र के नमूने देख सकते हैं। इन भवनों और मंदिरों को देखने के लिऐ आज भी भारत पर्यटन का केन्द्र बना हुआ है।

यह वह समय था जब भारत बहुत घनी और सर्वश्रेष्ठ था। इसका क्षेत्र ईरान, अफगानिस्तान और बंगलादेश तक फैला हुआ था। इस विशाल भारत के अंतिम हिन्दू सम्राट राजा हर्षवर्धन थे। राजा हर्षवर्धन के समय कला के साथ-साथ विज्ञान और अध्यात्म ने भी उन्नति की थी। इसी काल मे चीनी यात्री ह्वेनसांग भारत आया था और उसने पूरे भारत में घूम-घूम कर अनेक कलाएँ, धातुओं का शुद्धिकरण तथा अनेक भाषाएँ सीखीं थीं। वह भारत से "कराटे की कला" को चीन में लेकर गया था। बहुत कम लोग यह जानते हैं कि कराटे का जन्म भारत में हुआ था। ह्वेनसांग ने अपने भारत के अनुभवों पर जो पुस्तक लिखी थी उसमें भारत के वैभव और प्रशासन की बढ़-चढ़ कर प्रशंसा की थी।

भारत के धनवान, गुणवान, चरित्रवान और ज्ञानवान होने के कारण ही भारत को "सोने चिड़िया" और "विश्व गुरु" कहा जाता था।

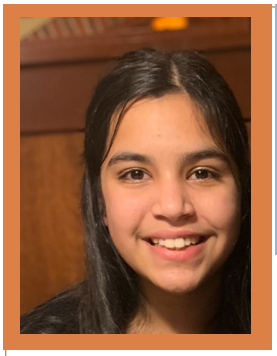

मेरा एक अनोखा अनुभव

यक्षा सेठ

मेरा नाम यक्षा सेठ है और मैं वुड्ब्रिज पाठशाला में उच्चस्तर-२ की छात्रा हूँ। हिंदी यू.एस.ए. के साथ यह मेरा आठवाँ वर्ष है। इस वर्ष के अंत में मैं स्नातक हो जाऊँगी जिसका मैं बड़ी बेसब्री से इंतज़ार कर रही हूँ। यह मेरे लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण यात्रा का समापन होगा। आज से आठ वर्ष पहले जब शुरुआत की थी तब सोचा भी नहीं था कि मैं यहाँ तक पहुंच पाऊँगी। मेरे माता-पिता और बड़ी बहन भारत से हैं। मैं यहाँ पर जन्मी थी लेकिन दिल से मैं १००% हिंदुस्तानी हूँ। सच बोलूं तो मैंने हिंदी पाठशाला में अपनी दीदी के देखा-देखी ही दाख़िला ले लिया था। शुरू के एक दो वर्ष मुझे हिंदी बहुत ही कठिन लगी और मैंने पाठशाला न जाने के लिए भी मांग की। उसी वर्ष जब मैं अपने परिवार के साथ भारत गई और वहाँ अपने दादा-दादी, नाना-नानी, मामा-मामी और अन्य रिश्तेदारों को मिली तब मुझे हिंदी का महत्व समझ में आया। हिंदी पिक्चर देखने का भी मुझे शौक लग गया और भी क्या कहना मेरी रुचि एकदम बढ़ती गयी।

हिंदी पाठशाला की इस पढ़ाई ने मुझे हिंदी लिखना, पढ़ना, बोलना सिखाया और साथ-साथ नए-नए शब्द एवं उनका प्रयोग करना भी सिखाया है। हर वर्ष पढ़ाई कठिन होती गयी पर मेरे शिक्षकों ने इतनी लगन और मेहनत से सिखाया है कि अब मुझे अनुवाद करना, लेख लिखना, कविता सीखना-बोलना आ गया है। इस के साथ-साथ मैंने हिंदी पाठशाला परिवार के साथ भारत की संस्कृति, विभिन्न त्योहार और इतिहास भी समझा है। सब के साथ हर राष्ट्रीय त्योहार मनाने में कुछ अलग ही मज़ा आता है। हम हर वर्ष दिवाली, गणतंत्र दिवस, होली, और वार्षिक पिकनिक धूम धाम से मानते हैं। मैं और मेरी सहपाठियाँ हर वर्ष हमारी पाठशाला के कार्यक्रम में मदद और मेजबानी करते हैं। इससे मेरी हिंदी और मेरी जनता के सामने बोलने का डर चला गया है। बहुत मजा आता हे जब सब बच्चे हिंदुस्तानी कपड़े, खाने, और प्रतियोगिता में जुड़ते हैं।

जब मैं हिंदी पाठशाला से स्नातक हो जाऊँगी, तब मैं कविता प्रतियोगिता को सबसे ज्यादा याद करूंगी। मैं पिछले आठ वर्ष से इस प्रतियोगिता में भाग लेती आयी हूँ और हर वर्ष फाइनल तक पहुँचने और भाग लेने की उम्मीद से तैयारी करती हूँ। इस माध्यम से मैंने हिंदी भाषा का छुपा हुआ हीरा, हिंदी कविता के रूप में सीखा और उसका आनंद लिया। हिंदी कविताओं में इतनी भावनाएँ, कहानियाँ और शिक्षा है जिसकी कोई सीमा ही नहीं है। मेरे कुछ मनपसंद कवि, कुमार विश्वास, हरिवंशराय बच्चन और सुभद्रा कुमारी चौहान हैं। स्नातक हो कर जब मैं सहायक शिक्षिका बनूँगी तो मैं बच्चों को हिंदी बड़े ही प्यार और जुनून से सिखाऊंगी। मैं बच्चों की भावनाओं को समझ सकती हूँ और मैं उन्हें यह विश्वास दिलाऊंगी कि कोई भी चीज़ कठिन नहीं होती, बस उसे अच्छे से समझाएँ तो समझ आ जाती है।

मैं हिंदी यू.एस.ए. संस्था और सभी कार्यकर्ताओं की आभारी हूँ जिन्होंने भारत से दूर होने पर भी हमें हमारी भाषा और संस्कृति के इतने पास रखा है और भारत को हमारे दिल से दूर नहीं होने दिया।

धन्यवाद

G'S FAMOUS PIZZA

GUALLPA'S

6115 Hadley Rd

South Plainfield, NJ 07080

Call Ahead for Faster Service

908-834-2416

अद्वितीय राजा विक्रमादित्य

मेरा नाम ऐशना जैन है। मैं हिंदी यू.एस.ए. में चेरी हिल पाठशाला की उच्च स्तर-२ की छात्रा हूँ। मैं तेरह वर्ष की हूँ और मुझे किताबें पढ़ना और नृत्य करना पसंद है। रचिता आंटी हमारे स्तर की अध्यापिका हैं और इस वर्ष उनसे हमने बहुत कुछ सीखा। हमने अपने इतिहास के महान राजाओं के बारे में भी जाना और मेरा यह लेख सम्राट विक्रमादित्य के जीवन को संक्षेप में प्रस्तुत करता है।

भारत के महान राजाओं और शासकों में विक्रमादित्य का नाम प्रमुख है। वे उज्जैन के चक्रवर्ती सम्राट थे। भारत में चक्रवर्ती सम्राट उसे कहते हैं जिसका संपूर्ण भारत में राज रहा हो। विक्रमादित्य के नाम का अर्थ वीरता का सूर्य है जिसमें विक्रम का मतलब वीरता और आदित्य का मतलब सूर्य है। वे अपनी ताकत और विद्वान नीतियों के लिए जाने जाते थे। उनके परिवार में उनकी पाँच पत्नियाँ, दो पुत्र और दो पुत्रियाँ थीं। विक्रमादित्य पर १५० से भी ज्यादा कहानियाँ हैं जिनमें सबसे प्रसिद्ध बैताल पच्चीसी और सिंहासन बत्तीसी हैं। वे बहुत ही उदार और दयालु राजा थे जो सदैव अपनी प्रजा की भलाई के बारे में सोचते थे। इसके लिए वे वेश बदलकर अपने नगर में घूमते थे ताकि वे अपनी प्रजा का हाल जानकर उनकी मदद कर सकें। दरबार में नवरत्नों को रखने की परंपरा महान सम्राट विक्रमादित्य से ही शुरु हुई जिसे बादशाह अकबर ने भी अपनाया था।

उन्होंने ईसा पूर्व ५७-५८ में शकों को हरा कर अपने शासन से बाहर किया। इसी की याद में उन्होंने विक्रम संवत की शुरुआत कर अपने राज्य के विस्तार का आरंभ किया। उनकी सेना विश्व की सबसे शक्तिशाली सेना थी जिसने पूरे भारत में एक अभियान चलाकर भारत को विदेशियों और अत्याचारी राजाओं से मुक्त कर एक छत्र शासन को कायम किया। कहा जाता है कि विक्रमादित्य ने १०० वर्षों तक राज किया। उनके शासन को भारतीय इतिहास के स्वर्णिम युगों में याद किया जाता है।

रिचा प्रभु

राजा विक्रमादित्य का सिंहासन

नमस्ते! मेरा नाम रिचा प्रभु है और मैं आठवी कक्षा में पढ़ती हूँ। मैं चैरी हिल उच्च स्तर दो की छात्रा हूँ। मुझे पियानो बजाना, गाना गाना, और भारत अपने परिवार से मिलने जाना बहुत अच्छा लगता है।

राजा विक्रमादित्य का सिंहासन बहुत अद्भुत था। राजा बड़े ही न्यायी, उदार और कला-प्रिय थे। इसी वजह से देवराज इंद्र ने उन्हें यह भेंट में दिया था। सिंहासन पर बैठकर राजा और भी गुणी, धैर्यवान और परोपकारी हो जाते थे, तथा उनके राज्य में सभी सुखी थे। राजा विक्रमादित्य के स्वर्गवास के बाद कोई दूसरे राजा सिंहासन पर नहीं बैठ सके। जब वह उस पर बैठते तो उस में से आवाज़ आती कि सिंहासन पर वही राजा बैठ सकता है जो विक्रमादित्य के जैसे गुणी हो।

वास्तव में यह अद्भुत सिंहासन भगवान शिव ने देवराज इंद्र को दिया था। देवराज इंद्र के दरबार में बत्तीस अप्सराएँ थीं जो नृत्य-गान कर के उनका मन प्रसन्न करती थीं। एक दिन वे भगवान शिव के दरबार में नृत्य-गान करने गईं। भगवान शिव को देखकर अप्सराओं के मन में आया कि काश वे उनके पति होते। इस बात से देवी पार्वती को बहुत गुस्सा आया और उन्होंने अप्सराओं को श्राप दे दिया, "जाओ देवराज इंद्र के सिंहासन में प्रतिमा बनकर समा जाओ।" जब अप्सराओं ने माफ़ी माँगी तो देवी पार्वती ने कहा, "कई शताब्दियों के बाद तुम्हें मुक्ति प्राप्त होगी।"

सैकड़ों वर्ष बाद राजा भोज ने राज किया। वह भी राजा विक्रमादित्य के जैसे महा प्रतापी, उदार और परोपकारी थे। एक दिन उन्हें वह अद्भुत सिंहासन मिला। जब उन्होंने उस पर बैठने का प्रयास किया तब सिंहासन से एक अप्सरा प्रकट हुई और उसने राजा विक्रमादित्य की शौर्य गाथा राजा भोज को सुनाई। इसी प्रकार जब सभी बत्तीस अप्सराओं ने राजा भोज को विक्रमादित्य की अलग-अलग शौर्य गाथाएं सुनाई तो उन सारी अप्सराओं को देवी पार्वती के श्राप से मुक्ति प्राप्त हुई। आज भी यह कहानियाँ सिंहासन बत्तीसी के नाम से बहुत प्रसिद्ध हैं।

तानसेन

अथर्व अभ्यंकर, १० वर्ष, मध्यमा-१, साउथ ब्रुंस्विक

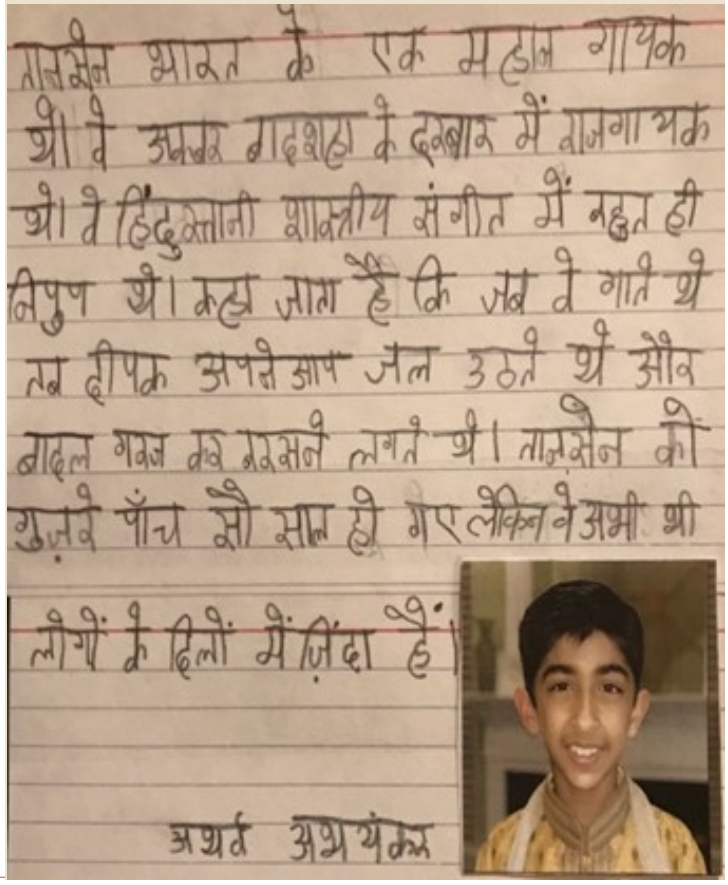

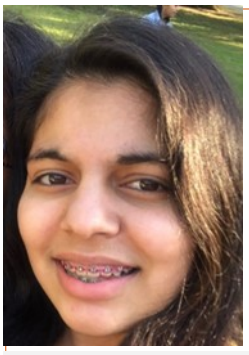

रेवा सेठी

विक्रमादित्य की गाथाएँ

मेरा नाम रेवा सेठी है। मैं आठवीं कक्षा की छात्रा हूँ। मुझे अपने ख़ाली समय में किताबें पढ़ना और गाने सुनना अच्छा लगता है। इसके अलावा मैं रोवन यूनिवर्सिटी यूथ ऑर्क्रेस्ट्रा में वायलिन बजाती हूँ और कराटे स्कूल में सहायक भी हूँ।

राजा विक्रमादित्य की गाथाएं संस्कृत के साथ कई अन्य भाषाओँ की कहानियों में भी देखने को मिलती हैं। इन कहानियों मे बैताल और सिंहासन बत्तीसी की कहानियाँ अति रोचक, महत्वपूर्ण और ज्ञानवर्धक है।

बैताल पच्चीसी - बैताल पच्चीसी में एक बैताल की कहानी है। एक साधू राजा विक्रमादित्य को उस बैताल को बिना एक शब्द कहे पेड़ से उतार कर लाने को कहता है। राजा उस बैताल की तलाश में जाते हैं और उसे ढूंढ भी लेते हैं। बैताल रास्ते में हर बार एक कहानी सुनाता है और उस कहानी के बीच में से एक न्यायपूर्ण सवाल पूछता है, साथ ही विक्रम को ये श्राप देता है कि जवाब जानते हुए भी न बताने पर उसका सिर फट जाएगा। राजा विक्रमादित्य न चाहते हुए भी उसके सवाल का जवाब देते हैं। साधू का विक्रम द्वारा एक शब्द भी न कह कर विक्रम को लाने का प्रण टूट जाता है, और बैताल वापिस उसी पेड़ पर रहने चल जाता है। इस प्रकार बैताल २५ कहानियाँ विक्रमादित्य को सुनाता है, इसलिए इसे बैताल पच्चीसी कहते है। ये सभी कहानियाँ विक्रमादित्य की तीक्ष्ण बुद्धि का परिचय देती हैं।

ऐसा माना जाता है कि दरबार में नव रत्नों को रखने की परम्परा राजा विक्रमादित्य ने ही प्रारम्भ की थी। राजा विक्रमादित्य के दरबार में नौ बहुत महान विद्वान् थे, जिनका नाम था धन्वन्तरी, क्षपंका, अमर्सिम्हा, शंखु, खाताकर्पारा, कालिदास, भट्टी, वररुचि, वराहमिहिर थे। ये सभी अपने अपने क्षेत्र के महान विद्वान् थे.

इस समय विक्रम संवत २०७५ चल रहा है और इस प्रकार हम अनुमान लगा सकते हैं कि राजा विक्रमादित्य आज से २००० वर्ष पहले उज्जैन में शासन करते थे।

भारत मानव जाति का पालना है, मानवीय वाणी का जन्म स्थान है, इतिहास की जननी है और विभूतियों की दादी है और इन सब के ऊपर परम्पराओं की परदादी है। मानव इतिहास में हमारी सबसे कीमती और सबसे अधिक अनुदेशात्मक सामग्री का भण्डार केवल भारत में है!"

- मार्क ट्वेन (लेखक, अमेरिका)

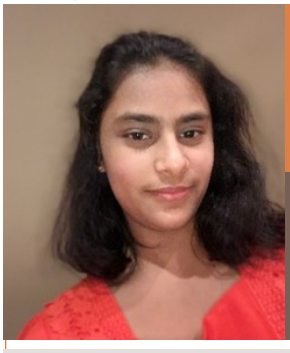

भारत में मुगल साम्राज्य

मेरा नाम सहज वर्मा है। मैं उच्चस्तर २ की छात्रा हूँ। मैं हिन्दी यू.एस.ए. में पिछले ३ वर्षों से पढ़ रही हूँ। मुझे गाना गाना बहुत अच्छा लगता है। मुझे वायोलिन बजाने का भी बहुत शौक है। मुझे हिन्दी पढ़ना और कविताएँ बोलना भी पसंद है।

सातवीं शताब्दी से १७०० शताब्दी तक भारत 'सोने की चिड़िया' था अर्थात् वह धनवान होने के साथ-साथ सभी कलाओं और ज्ञान विज्ञान में भी सर्वश्रेष्ठ था। यही कारण था कि सत्ता और धन पाने के लिए भारत हमेशा ही आक्रमणकारियों की पहली पसंद रहा।

यदि हम इतिहास देखें तो छठवीं शताब्दी में ही केरल के मालाबार में व्यापार के बहाने इस्लाम ने अपने पहले कदम रख दिए थे और भारत की पहली मस्जिद "चेरैमान जुम्मा" केरल के कोडुंगल्लूर में एक अरब व्यापारी ने बनवाई थी। आठवीं शताब्दी में भारत पर मुस्लिम आक्रमणों का दौर शुरू हुआ, जिसमे पहला हमला **मोहम्मद बिन क़ासिम** ने हिंदू राजा धीरसेन के राज्य पर किया था, जो उस समय कराची में था। राजा धीरसेन को हराकर उसने सिंध और बाद में मुल्तान पर भी कब्जा कर लिया था। उसके बाद उसने आस पास के अनेक राजाओं को इस्लाम धर्म स्वीकार करने के लिए पत्र लिखे, लेकिन वह कुछ कर पाता उससे पहले ही उसको ईराक़ लौटना पड़ा।

दसवीं शताब्दी में **'महमूद ग़जनबी'** ने कई बार हमले किए और मंदिरो को लूटा और तोड़ा, जिसमें सोमनाथ का मंदिर सबसे अधिक बार तोड़ा गया। बाद में उसने पंजाब को जीता।

बारहवीं शताब्दी में **मोहम्मद गौरी** ने मुल्तान और उसके बाद पश्चिमी भारत के छोटे राज्यों को जीतता हुआ वह दिल्ली तक आ गया, जहाँ उसका सामना दिल्ली के वीर राजा पृथ्वीराज चौहान से हुआ और लड़ाई में पृथ्वीराज चौहान ने गौरी को कई बार हराया, पर अंत में एक षड्यंत्र में फंस कर वह गौरी से हार गया। इसके बाद गौरी ने आस-पास के राज्यों पर भी अधिकार कर लिया। बाद में वह अपनी सत्ता कुतुबुद्दीन ऐबक को सौंपकर अफ़ग़ानिस्तान लौट गया। इस प्रकार **कुतुबुद्दीन ऐबक** दिल्ली का पहला मुस्लिम सुल्तान बना। बाद में उसके सेनापति खिलजी ने, जो बहुत दुष्ट और अत्याचारी था, बिहार और बंगाल में अपना राज्य स्थापित किया तथा तलवार के बल पर हिन्दुओ को मुसलमान बनाया।

"यदि पृथ्वी के मुख पर कोई ऐसा स्थान है जहाँ जीवित मानव जाति के सभी सपनों को बेहद शुरुआती समय से आश्रय मिलता है, और जहाँ मनुष्य ने अपने अस्तित्व का सपना देखा, वह भारत है।!"
- रोम्या रोलां (फ़्रांसीसी विद्वान)

भारत में मुगल साम्राज्य

मेरा नाम ओजस्विता रेड्डी है। मैं दसवीं कक्षा में पढ़ रही हूँ। मैं ३ वर्षों से हिंदी स्कूल जा रही हूँ। मैं अमेरिका में ५ वर्षों से रह रही हूँ। स्कूल में मैं ट्रैक और फील्ड, आई.सी.एस, स्वयंसेवा और बहुत से क्लब्स में भाग लेती हूँ। इसके अतिरिक्त मुझे ऑइल पेंटिंग करना और पढ़ना बहुत पसंद है।

वैसे तो मुग़लों का आगमन सन् ११०० से शुरू हो गया था पर भारत के वीर राजपूतों, मराठों और सिक्खों की फ़ौजों ने इन्हें बार-बार हराकर उज़बेकगिस्तान और अफगानिस्तान वापिस भेज दिया, लेकिन सन् १५२६ में **बाबर** ने उज़बेकगिस्तान की फरगाना वेली से आकर पंजाब, वर्तमान पाकिस्तान और दिल्ली के सुल्तान **इब्राहिम लोधी** को हराकर घोड़े, हाथियों और सोने-चाँदी को लूटकर अपने देश उज़बेकगिस्तान में भेजा। यह युद्ध पानीपत की पहली लड़ाई के नाम से जाना जाता है। एक वर्ष बाद उसने राणा सांगा को बंगाल के सुल्तान के साथ मिलकर हराया, लेकिन सन् १५३० में बाबर की मृत्यु हो जाने से पूरे भारत पर राज्य करने का उसका सपना अधूरा रह गया। उसके बेटे हुमायूँ में प्रशासन के प्राति रूचि नहीं थी। वह अच्छा योद्धा भी नहीं था इसलिए वह अपने दुश्मनों का सामना नहीं कर पाया और वापिस परशिया पहुँच गया जहाँ वह १० वर्षों तक रहा। इस बीच दिल्ली और काबुल पर एक और अफगान शेर-शाह सूरी का राज्य हो गया। सन् १५३९ में **हुमायूं** फिर से भारत लौटा पर नशे का आदी और कला के प्रति उसके लगाव ने उसे बहुत कमजोर कर दिया था। सन् १५४० में अपने पुस्तकालय की सीढ़ियों से गिर कर उसकी मृत्यु हो गई।

वैसे तो हुमायूँ के कई बेटे थे पर उसकी सबसे छोटी रानी का बेटा अकबर सबसे ज्यादा महत्वाकांशी था। वह सबसे छोटा होने के बाद भी सबसे अच्छा राजनीतिज्ञ और योद्धा था। उसकी क्रूरता की कहानियाँ दूर-दूर तक फैल गई थीं। उसने अपने सभी भाइयों को मारकर १३ वर्ष की उम्र में ही राज सिहांसन पा लिया था। अपने दादा बाबर की तरह उसने न केवल भारत पर राज करने का सपना देखा बल्कि वह गद्दी पर बैठते साथ ही अपने सपने को पूरा करने में जुट गया। जिसने उसकी सत्ता को स्वीकार नहीं किया उसे उसने मौत के घाट उतार दिया। अकबर ने ५ दशकों तक पाकिस्तान, उत्तर भारत, अफगानिस्तान के कुछ हिस्सों में, कश्मीर, बंगाल, मध्य भारत और दक्षिण के कुछ भाग में अपना राज्य फैला लिया था।

मेवाड़ के राजपूत राजा, राणा प्रताप को छोड़कर सभी राजपूत राजाओं ने अकबर की अधीनता को स्वीकार कर लिया था। सन् १५७६ में **राणा प्रताप** और अकबर के बीच भयंकर और ऐतिहासिक "हल्दी घाटी का युद्ध" हुआ था जिसमें राणा प्रताप की हार हुई थी लेकिन इस हार के बाद भी राणा ने अकबर

की सत्ता नहीं मानी और सारा जीवन जंगलो में बिताया।

चितौड़ किले को जीतना **अकबर** का सबसे कठिन सपना साबित हुआ। इस किले को पाने के लिए अकबर ने ३०००० राजपूतों का कत्ले आम करवाया तब वह किले के अंदर कदम रख पाया। अकबर ने हिन्दू लड़कियों से विवाह कर के "जजिया कर" लगाकर और "दीन ए इलाही" धर्म को आरंभ करके बिना किसी दबाव के करोड़ो हिन्दुओं का धर्म परिवर्तन करवाया और इसलिए कुछ इतिहासकारों ने उसे बड़ा दयालु और खुले दिमाग का महान शासक भी बताया, लेकिन वास्तव में यह अकबर की चतुर राजनीति थी। वह सभी धर्मों के लोगों से सम्मान पाना चाहता था। आश्चर्य की बात यह है कि इतना सफल होने वाला अकबर बिल्कुल अनपढ़ था। वह बिल्कुल पढ़ नहीं सकता था पर कलाकारों, लेखकों, विद्वानों और संगीतकारों को हमेशा अपने साथ रख कर उसमें सीखने का गुण था और इसलिए सबसे अधिक लोकप्रिय भी हुआ।

अकबर की मृत्यु के बाद उसका बेटा **जहाँगीर** (सलीम) राजा बना जिसने सिक्ख गुरु **अर्जुनसिंह** को मृत्युदंड दिया। जहाँगीर के बाद सन् १६२४ से १६५८ तक उसका बेटा शाहजहाँ सिंहासन पर बैठा। **शाहजहाँ** कला प्रेमी था और अन्य मुस्लिम शासकों की तरह क्रूर स्वभाव का नहीं था। इतिहास में उसे ताजमहल और लाल किला बनवाने के लिए जाना जाता है। उसके क्रूर बेटे औरंगजेब ने उसे कैद कर और अपने भाइयो को मारकर सिंहासन पर कब्जा कर लिया था। आठ वर्षों तक कैद में रहने बाद शाहजहाँ की मृत्यु हो गई।

औरंगजेब ने सबसे अधिक क्रूर शासक के रूप सन् १६५८ से लेकर १७०७ तक भारत पर राज किया। जब ९ वें सिक्ख गुरु तेगबहादुर जी ने इस्लाम धर्म स्वीकार नहीं किया तो औरंगजेब ने उन्हें दर्दनाक मृत्यु दंड दिया। औरंगज़ेब के राज्य में तलवार की नोंक पर इस्लाम धर्म का विस्तार हुआ। महाराष्ट्र के मराठा सरदार **शिवाजी** ने औरंगजेब को परेशान कर रखा था और अपनी वीरता और चतुराई से भारत का एक बहुत बड़ा हिस्सा मुगलों से वापिस छीन लिया था।

औरंगजेब के बाद मुगल शासन कमजोर होकर बिखर गया और अंत में अंग्रेजों ने सारे हिन्दू और मुसलमान राजाओं को अपने अधीन कर लिया और सारे भारत पर "ईस्ट इंडिया कंपनी" का राज्य हो गया।

"सुभाष चंद्र बोस"

सुभाष चंद्र बोस का जन्म २३ जनवरी १८९७ को उड़ीसा के कटक नगर में हुआ था। सुभाष चंद्र बोस ने पाँच वर्ष की उम्र में अँग्रेज़ी और बंगाली भाषा की पढ़ाई की थी। उन्होंने भारत की आजादी के लिए गांधीजी से मदद मांगी। वे देश की आजादी के लिए कई बार जेल भी गए थे। ऐसा कहते है कि उनकी मौत १८ अगस्त १९४५ के दिन एक विमान दुर्घटना में हुई थी लेकिन उस दुर्घटना का कोई साक्ष्य नहीं मिला इसीलिए उनकी मृत्यु आज भी विवाद का विषय है।

सानवी शाह, ८ वर्ष, मध्यमा-१, साउथ ब्रुंस्विक।

शान्ति प्रस्ताव

मेरा नाम नेहा बोम्मिरेड्डी है। मैं बारह वर्ष की हूँ और सातवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मुझे गाना और नाचना पसन्द है। मैं एडिसन हिन्दी पाठशाला में उच्चस्तर-१ में पढ़ती हूँ।

"महाभारत" को ऐतिहासिक और दार्शनिक ग्रन्थ माना जाता है। यह विश्व में सबसे बड़ा महाकाव्य है। इसमें शान्तिः प्रस्ताव कि घटना एक महत्त्वपूर्ण घटना है, जिसमें दुर्योधन परमात्मा श्री कृष्ण को बन्धी बनाने का प्रयत्न करता है। परन्तु अंत में दुर्योधन को अपनी भविष्य की मृत्यु दिखाई देती है।

महाभारत युद्ध होने से पहले पांडव इस विचार में थे कि युद्ध टालना ही धर्म है क्योंकि युद्ध से विध्वंस ही होगा। श्री कृष्ण, पांडव की ओर से शांति प्रस्ताव लेकर हस्तिनापुर पहुँचते हैं। राज्य सभा में धृतराष्ट्र श्री कृष्ण से अपने वंश की रक्षा के लिए मार्ग पूछते हैं। श्री कृष्ण, धृतराष्ट्र को पांडवों का राज्य लौटाने का और उसके पुत्रों को द्रोपदी का वस्त्र हरण करने के लिए प्रायश्चित के रूप में दंड का सुझाव देते हैं। श्री कृष्ण ने कहा कि अगर धृतराष्ट्र के पुत्र, ध्रुपद कन्या द्रोपदी के चरण स्पर्श कर क्षमा मांगे तो दंड स्वीकार मान लेंगे। पर दुर्योधन को ये प्रस्ताव मान्य नहीं थे। श्रीकृष्ण, पांडवों को पांच गाँवों पर स्वतन्त्र अधिकार देने का दूसरा सुझाव देते हैं। भीष्म, विदुर, द्रोणाचार्य और कर्ण, दुर्योधन को इस सुझाव को स्वीकार करने का आदेश देते है। पर यह भी दुर्योधन को मान्य नहीं था। दुर्योधन कहता है की, "पाँच गाँव तो क्या, मैं सुई की नोक के बराबर भाग भी पांडवों को नहीं दूँगा"।

अब दुर्योधन श्री कृष्ण को बंदी बनाने का प्रयत्न करता है। सैनिक बेड़ियाँ लेकर आने का प्रयास करते हैं लेकिन वे विफल होते हैं। दुर्योधन और दुशासन बेड़ियाँ लाकर श्री कृष्ण को बंदी बनाते है। दुर्योधन श्री कृष्ण को कारागार में बन्दी बनाता है। पर ऐसा दिखता है की कारागार में दुशासन बन्दी है। पूरे सैनिक श्री कृष्ण की ओर देखते हैं। सभा में भी सभी सदस्य श्री कृष्ण की तरह प्रतीत होते हैं। श्री कृष्ण, दुर्योधन को उनके भविष्य में आने वाली मृत्यु दिखाते हैं।

इस प्रकार पांडव का शांति प्रस्ताव स्वीकार नहीं हुआ और अंत में महाभारत युद्ध हुआ जिसमें बहुत सारा विध्वंस हुआ। शान्ति प्रस्ताव से महाभारत युद्ध टल सकता था परन्तु दुर्योधन के अहंकार ने इस प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया। बुद्धिमान और अनुभवी लोगों की सलाह मानना उचित मार्ग है। हर समस्या शान्ति से हल कर सकते हैं।

विधी ओझा

भारत की स्वतंत्रता का इतिहास

मेरा नाम विधी ओझा है। मैं दस वर्ष की हूँ। मैं मेनलो पार्क प्राथमिक विद्यालय में पाँचवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। जब मैं बालमंदिर कक्षा में थी तभी से मैं हिंदी यू.एस.ए. की पाठशाला में अध्ययन कर रही हूँ। मुझे चित्रकारी और संगीत कलाएँ करने में आनंद आता है। मैं एक जीवविज्ञानी बनना चाहती हूँ।

भारत का स्वतंत्रता आंदोलन, भारत को ब्रिटेन के शासन से मुक्त करने के लिए किया गया था। यह आंदोलन १८५७ से १९४७ तक पूरे ९० वर्षों तक चला था। कई बहादुर भारतीयों ने आंदोलन को मजबूत करने में मदद की है। इनमें से जिन दो व्यक्तियों के योगदान के बारे में मैंने पढ़ा वे इस प्रकार हैं।

महात्मा गांधी - महात्मा गांधी जी का जन्म १८६९ में हुआ था और १९४८ में उनकी मृत्यु हुई थी। उन्होंने ने भारत के अहिंसात्मक कार्य का नेतृत्व किया, जिसने भारत को ब्रिटेन से स्वतंत्रता दिलाई। उन्होंने भगवान विष्णु की पूजा की और एक प्राचीन भारतीय धर्म का पालन किया, जो मांसाहार, उपवास और ध्यान न करना, अहिंसा का था। उन्होंने विश्व धर्मों का भी अध्ययन किया और वे एक किशोर के रूप में धूम्रपान और चोरी के खिलाफ थे। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान उन्होंने ब्रिटेन के शासन के खिलाफ बहिष्कार का नेतृत्व किया।

मेरा जीवन ही मेरा संदेश

- गांधी

गोपाल कृष्ण गोखले - भारत की स्वतंत्रता आंदोलन में मदद करने वाले एक अन्य व्यक्ति गोपाल कृष्ण गोखले थे, जिनका जन्म १८६६ में हुआ था और १९१५ में उनकी मृत्यु हुई थी। वे अपने समय के लिए बहुत शिक्षित थे। वे एक हिन्दू थे और उन्होंने महात्मा गांधी को पढ़ाया था। १९०५ में उन्होंने सर्वेंट्स ऑफ़ इंडिया सोसाइटी का आयोजन किया था जिसमें लोगों को अपने देश की मदद करना सिखाया गया था।

ऐसे महान लोगों ने भारत को अपने आंदोलन के उद्देश्य को पूरा करने में मदद की है जिसके कारण आज भारत ब्रिटेन से मुक्त है। हम सभी भारतीयों को धन्यवाद देते हैं जिन्होंने आंदोलन में मदद की।

जिया काराणी

१८५७ का स्वतंत्रता संग्राम

नमस्ते, मेरा नाम जिया सागर काराणी है। मैं ग्यारह वर्ष की हूँ और छठवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। एडिसन हिंदी पाठशाला में मैं उच्चस्तर-१ में पढ़ती हूँ। मुझे नृत्य करना और किताबें पढ़ना पसंद है। मुझे भारतीय इतिहास बहुत ही रोचक लगता है। इसलिए, मैंने १८५७ के विद्रोह के बारे में लिखा हैं।

१८५७ भारत के स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास का बहुत महत्वपूर्ण हिस्सा है। इस क्रांति की सबसे और पहली घटना बैरकपुर छावनी में घटित हुई। जहाँ २९ मार्च १८५७ को मंगल पांडे नाम के सिपाही ने गाय और सूअर ही चर्बी से तैयार कारतूस के प्रयोग से इंकार कर दिया और अपने उच्च अंग्रेज अधिकारी की हत्या कर दी। इस वजह से, ८ अप्रैल १८५७ को मंगल पांडे को फांसी ही सजा दे दी गई। इस खबर ने विद्रोह का भयानक रुप ले लिया। १० मई को मेरठ छावनी की पैदल सैन्य टुकड़ी ने भी इस कारतूस का विरोध किया और दिल्ली की और चल पड़े। ११ मई की सुबह, सभी क्रन्तिकारी दिल्ली पहुंच गए। यह खबर पूरे भारत में फैली, और विद्रोह में, ज्यादा सैनिक शामिल हुए। १२ मई को, विद्रोहियों ने दिल्ली पर अधिकार कर लिया और बहादुर शाह ज़फर को सम्राट घोषित कर दिया। अंग्रेजों को इस विद्रोह की उम्मीद नहीं थी। दिल्ली विजय का समाचार सुनकर देश के विभिन्न भागो में एक विद्रोह की आग फ़ैल गई, जिसमें कानपुर, लखनऊ, बरेली जगदीशपुर, झांसी, अलीगढ़, इलाहबाद, फैजाबाद, आदि प्रमुख केंद्र थे। रानी लक्ष्मीबाई, नाना साहब, तात्या टोपे, रानी लक्ष्मीबाई, लियाकत अली, निम्नलिखित आदि लोग भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के सेनानी बने।

सितम्बर में, अंग्रेजों ने दिल्ली पर दोबारा कब्ज़ा किया। हालांकि, इसका मतलब यह नहीं था की विद्रोह समाप्त हुआ। लोग विरोध और लड़ाई करते रहे। अंग्रेजों ने सत्ता हासिल की, पर अब अलग था। अब अंग्रेजों के पास उतनी शक्ति नहीं थी, तथा भारतीयों को खुद पर विश्वास हो गया। अंग्रेजों ने भारतीय संस्कार और धर्म का सम्मान करने का फैसला किया। भारतीय इतिहास का एक नया चरण शुरू हुआ।

मैं इस बात से रोमांचित हुई क्योंकि भारतीयों ने अपने मातृभूमि के लिए बहुत वीरता दिखाई। यह मुझे सिखाता है कि कठिन समय में बहादुर और साहसी होना बहुत महत्वपूर्ण है। मुझे अपने भारतीय होने पर गर्व है।

"हम सभी भारतीयों का अभिवादन करते हैं, जिन्होंने हमें गिनती करना सिखाया, जिसके बिना विज्ञान की कोई भी खोज संभव नहीं थी।!" - एल्बर्ट आइनस्टाइन (अमेरिकी विज्ञानी)

२०१९ के भारत रत्न

सिद्धार्थ वैद्य

एडिसन हिन्दी पाठशाला, उच्चस्तर-१

२०१९ में तीन कर्म वीर भारतीयों को, भारत रत्न, से सम्मानित किया गया। भारत के पूर्व राष्ट्रपति, श्री प्रणब मुखर्जी, दिवंगत संगीतकार श्री भूपेन हज़ारिका और दिवंगत नेता, श्री नानाजी देशमुख को भारत रत्न प्रदान किया गया। श्री प्रणब मुखर्जी २०१२ से २०१७ तक भारत के राष्ट्रपति थे। पाँच दशकों के एक राजनीतिक करियर में, श्री मुखर्जी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में एक वरिष्ठ नेता रहे हैं। २००९ से २०१२ तक वे केंद्रीय वित्त मंत्री थे। यह पुरस्कार मिलने पर श्री मुखर्जी ने कहा, “भारत के लोगों के लिए विनम्रता और कृतज्ञता की गहरी भावना के साथ मैं इस महान सम्मान को स्वीकार करता हूं”। २०१६ में, मैं अपने परिवार सहित छुट्टियों में दिल्ली गया था। तब मैंने पहली बार राष्ट्रपति भवन देखा था और श्री प्रणब मुखर्जी तब भारत के राष्ट्रपति थे।

श्री भूपेन हजारिका असम के एक गायक, कवि और फिल्म निर्माता थे। जिन्हें सुधांशु के नाम से जाना जाता है। मुख्य रूप से स्वयं द्वारा असमिया भाषा में लिखे और गाए गए उनके गीत, बंगाली और हिंदी में अनुवादित किए गये हैं। श्री हजारिका का गीत, गंगा बहती हो क्यों, बहुत प्रसिद्ध है। मेरे घर में सब को यह गाना बहुत पसंद है। मैंने यह गाना बहुत बार सुना है।

विस्तार है अपार, प्रजा दोनों पार
करे हाहाकार निःशब्द सदा
ओ गंगा तुम
ओ गंगा बहती हो क्यूँ?
नैतिकता नष्ट हुई, मानवता भ्रष्ट हुई
निर्लज्ज भाव से बहती हो क्यूँ?
इतिहास की पुकार, करे हुंकार
ओ गंगा की धार
निर्बल जन को
सबल-संग्रामी, समग्रोगामी
बनाती नहीं हो क्यूँ?

चंडिकादास अमृतराव देशमुख को नानाजी देशमुख के नाम से भी जाना जाता है। वे एक सामाजिक कार्यकर्ता थे। उन्होंने शिक्षा, स्वास्थ्य और ग्रामीण आत्मनिर्भरता के क्षेत्र में काम किया। वे भारतीय जनसंघ के नेता थे और राज्य सभा के सदस्य भी थे। श्री नानाजी देशमुख ने कृषि, कुटीर उद्योग, ग्रामीण स्वास्थ्य और ग्रामीण शिक्षा में काम किया। उनकी परियोजना का आदर्श वाक्य था: "हर हाथ को काम देंगे और हर खेत को पानी देंगे"। मैं अगले कुछ दिनों में, उनके बारे में लिखी गयी प्रसिद्ध किताब, “विराट पुरुष - नानाजी”, पढ़ूँगा। इस वर्ष के भारत रत्न पुरस्कार की, यह एक छोटी सी झलक है।

दुष्ट इन्सान की मीठी बातों पर कभी भरोसा मत करो। वो अपना मूल स्वभाव कभी नहीं छोड़ सकता, जैसे शेर कभी हिंसा नहीं छोड़ सकता .... चाणक्य

मेरा भारत महान

मेरा नाम रिथ्विक अग्रवाल है। मैं वुड्ब्रिज हिन्दी पाठशाला उच्च स्तर-२ का छात्र हूँ। मुझे शतरंज खेलना और इनलाइन स्केटिंग करना अच्छा लगता है। मैं १३ वर्ष का हूँ और सातवीं कक्षा में पढ़ता हूँ। हिंदी में कविता लिखने का यह मेरा प्रथम प्रयास है।

जो तैयार है मर मिटने को,
हमारी फौज में ऐसे वीर जवान,
इसलिए मेरा भारत महान।

भव्य स्मारक जैसे,
ताज महल, कुतुब मीनार, लाल किला,
बढ़ाते इसकी शान,
इसलिए मेरा भारत महान।

यहाँ के मधुर लोक-गीत, सुंदर वेश भूषा,
विचित्र नृत्य और गान,
इसलिए मेरा भारत महान।

महात्मा गांधी, बाजी राव
भगत सिंह ने दे दी आज़ादी के लिए अपनी जान,
इसलिए मेरा भारत महान।

इसकी है विभिन्न भाषा,
और बनते यहाँ स्वादिष्ट पकवान,
इसलिए मेरा भारत महान।

यहाँ है अनेकता में एकता,
विभिन्न राज्य बढ़ाते इसका सम्मान,
इसलिए मेरा भारत महान।

तिरंगे के तीन सुंदर रंग,
केसरिया, सफ़ेद, और हरा,
भर देते हमारे हृदय में मान,
इसलिए मेरा भारत महान।

झुकता हूँ मैं देश भक्ति में,
करता तुझे प्रणाम,
मेरा भारत महान,
मेरा भारत महान ।

"महात्मा गांधीजी"

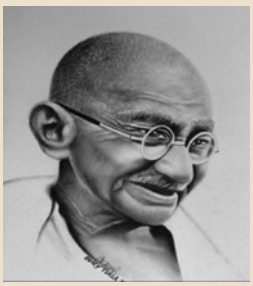

महात्मा गांधीजी का पूरा नाम मोहनदास करमचन्द गांधी था। लोग उन्हें "बापू" कहकर भी बुलाते हैं। उनका जन्म २ अक्टूबर को गुजरात राज्य के पोरबंदर क्षेत्र में हुआ था। उनके पिताजी का नाम करमचंद गांधी था और उनकी माताजी का नाम पुतलीबाई था। गांधीजी ने देश के स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया था। सब उन्हें राष्ट्रपिता कहते थे। उनकी मृत्यु ३० जनवरी १९४८ को ३ गोली लगने से हुई। उनके अंतिम शब्द थे 'हे राम'। दिल्ली में राज घाट पर उनकी समाधि बनाई गई है।

अनिका कष्यप और वृद्धि मधानी, मध्यमा-१, साउथ ब्रुंस्विक

अठारहवें हिन्दी महोत्सव पर

हिन्दी यू.एस.ए. को हार्दिक शुभकामनाएँ

SAI CPA Services

SAI CPA SERVICES

We Specialize In

- Accounting & Bookkeeping
- Sales Tax & Payroll tax
- Business startup services
- Income Tax Preparation for Individual & Business
- IRS problems & Representations
- Payroll Services
- Developing & Implementing Business models
- Non-profit Taxes & 501C(3) approvals
- Financial Statement preparation & Attestation

Ajay Kumar, CPA

5 Villa Farms Cir, Monroe Township, NJ 08831

Phone: 908-380-6876

Fax: 908-368-8638

akumar@saicpaservices.com

www.saicpaservices.com

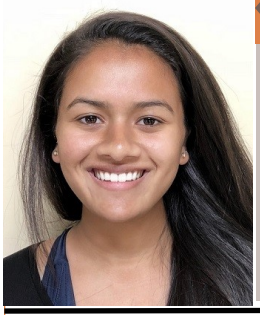

नेहा जैन

स्वर्ण मंदिर

मेरा नाम नेहा जैन है। मैं उच्चस्तर-२ की छात्रा हूँ। मेरा लेख स्वर्ण मंदिर के बारे में है। 'स्वर्ण मंदिर' भारत के पंजाब राज्य में अमृतसर में स्थित है। यह सिख समुदाय का पवित्र स्थान है। इस मंदिर का इतिहास कहता है कि इसे कई बार तोड़ा गया और हर बार इसका पुनर्निर्माण हुआ। इसे हरमंदिर साहिब के नाम से भी जाना जाता है, जिसे देखकर दुनिया भर के लाखों लोग आकर्षित होते हैं। केवल सिख धर्म के लोग ही नही बल्कि दूसरे धर्मों के लोग भी इस मंदिर में आते हैं। स्वर्ण मंदिर अमृतसर की स्थापना १५७४ में चौथे सिख गुरु रामदासजी ने की थी। हरमंदिर साहिब बनाने का मुख्य उद्देश्य पुरुष और महिलाओं के लिये एक ऐसी जगह को बनाना था जहाँ दोनों समान रूप से भगवान की आराधना कर सकें। पिछले वर्ष मुझे स्वर्ण मंदिर जाने का मौक़ा मिला। मंदिर के अंदर घुसते ही आप शांति की भावना महसूस कर पाते हो।

स्वर्ण मंदिर की कुछ रोचक बातें

१. इस मंदिर में सभी जाति-धर्म के लोग बिना किसी भेदभाव के आते हैं और भगवान की भक्ति करते हैं।

२. इस मंदिर के बारे में एक और रोचक बात यह है कि आप चारों दिशाओं से इस मंदिर में प्रवेश कर सकते हो क्योंकि चारों दिशाओं में इस मंदिर के प्रवेश द्वार बने हुए हैं और यह लोगों की एकता को दर्शाता है।

३. अमृत सरोवर के बीच में ही स्वर्ण मंदिर को बनाया गया है। अमृत सरोवर को सबसे पवित्र सरोवर भी माना जाता है।

४. इस मंदिर को बार-बार कई बार उजाड़ा गया था, पहले मुगल और अफगानों ने और फिर भारतीय आर्मी और आतंकवादियों के मनमुटाव में, और इसी वजह से इसे सिख धर्म की विजय का प्रतीक भी माना जाता है।

५. स्वर्ण मंदिर का मुख्य हॉल गुरु ग्रन्थ साहिब का घर था।

६. स्वर्ण मंदिर आज एक वैश्विक धरोहर है, जहाँ देश ही नहीं बल्कि विदेशों से भी लोग आते हैं और इसकी लंगर सेवा भी दुनिया की सबसे बड़ी सेवा है। यहाँ ४०००० से भी ज्यादा लोग रोज़ सेवा करते है।

७. इस मंदिर की सबसे रोचक और जानने योग्य बात यह है कि यह मंदिर सफ़ेद मार्बल से बना हुआ है और जिसे असली सोने से ढका गया है, और इसी वजह से इसे स्वर्ण मंदिर भी कहा जाता है।

ताजमहल

मेरा नाम रिया पटेल है और मेरी सहयोगी अनीषा तेहबिलदार है। हम उच्चस्तर-२ की विद्यार्थी हैं।

ताज महल हम दोनों का मनपसंद ऐतिहासिक स्थान है। यह बहुत ही सुन्दर इमारत है। ताजमहल दुनिया के सात महान आश्चर्यों में से एक है। ताजमहल का निर्माण १६३१ AD में मुगल बादशाह शाहजहाँ ने करवाया था। यह उत्तर प्रदेश के आगरा शहर में यमुना नदी के तट पर स्थित है। इसे शाहजहाँ ने अपनी पत्नी मुमताज़ की याद में बनवाया था। ताजमहल सुंदर सफेद संगमरमर से बना है। ताजमहल में २२ विभिन्न रत्न शामिल हैं। इसके चार मीनार और केंद्र में एक गुंबद है। ताजमहल को २२ वर्षों में २० हजार मजदूरों ने बनाया था। १००० से अधिक हाथियों का उपयोग निर्माण के लिए भारी सामग्री और आपूर्ति के परिवहन के लिए किया गया था। ताजमहल रोशनी में बहुत खूबसूरत लगता है। दुनिया भर से हजारों पर्यटक हर वर्ष भारत आते हैं। ताजमहल सभी तरफ से एक जैसा दिखता है। ताजमहल को २००७ में विश्व के नए सात अजूबों में से एक घोषित किया गया, जिसे १०० मिलियन से अधिक वोट मिले।

जगन्नाथ पुरी का इतिहास

मेरा नाम आरुषी ठाकुर है और मेरी सहयोगी का नाम दिव्यांशा कर है। हम उच्चस्तर -२ में पढ़ते हैं। भारतीय इतिहास हमें बहुत ही रोचक लगता है। हमारा लेख जगन्नाथ पुरी मंदिर के बारे में है। इस मंदिर का निर्माण ११६१ में हुआ। यह मंदिर ओडिसा में स्थित है। पुरी चार धाम में से एक धाम है। यह मंदिर श्री जगन्नाथ जी का मंदिर है।

रहस्यमय तथ्य -

- जगन्नाथ पुरी मंदिर की चोटी पर फहराया जाने वाला झंडा हमेशा पवन की उल्टी दिशा में उड़ता है।
- विश्व में सभी जगह दिन के समय समुद्र से पवन धरती की ओर और शाम को धरती से समुद्र की ओर चलती है परन्तु पुरी में इसका उल्टा होता है।
- मंदिर के ऊपर किसी पक्षी या हवाई जहाज को उड़ते हुए नहीं देखा गया है जो एक बहुत बड़ा रहस्य है।
- जगन्नाथ पुरी मंदिर का मुख्य गुंबद कुछ इस प्रकार से निर्माण किया गया है कि दिन भर में इसकी छाया एक बार भी धरती पर नहीं दिखती है।
- प्रतिवर्ष जगन्नाथ रथयात्रा पुरी में लाखों श्रद्धालु भगवान श्री जगन्नाथ, बलराम और सुभद्रा का रथ खींचने और उनका दर्शन लेने विश्व के कोने-कोने से यहाँ पहुंचते हैं।

मीनाक्षी अम्मन मंदिर

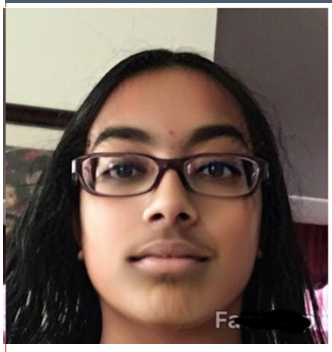

मेरा नाम स्नेहा बुरकले है। मैं उच्चस्तर-२ की छात्रा हूँ। मुझे हिंदी पढ़ना और लिखना पसंद है।

मीनाक्षी अम्मन मंदिर एक ऐतिहासिक हिन्दू मंदिर है जो भारत के तमिलनाडु राज्य के मदुराई शहर की वैगई नदी के दक्षिण किनारे पर स्थित है। यह मंदिर माता पार्वती और शिव जी को समर्पित है जो मीनाक्षी के नाम से जानी जातीं हैं और शिव जी सुन्दरेश्वर के नाम से जाने जाते हैं। यह मंदिर तमिलनाडु के मुख्य आकर्षणों में से भी एक है। कहा जाता है कि इस मंदिर की स्थापना इंद्र ने की थी। इस मंदिर को कई बार लूटा गया। १४वीं शताब्दी में मुगल मुस्लिम कमांडर मलिक काफूर मंदिर से मूल्यवान आभूषण और रत्न लूटकर ले गया था। बाद में १६वीं शताब्दी के आस-पास नायक शासक विश्वनाथ नायकर द्वारा इसे पुनर्निमित किया गया। विश्वनाथ नायक ने ही इसे शिल्प शास्त्र के अनुसार पुनः बनवाया था।

"न्यू सेवन वंडर्स ऑफ़ द वर्ल्ड" के लिये नाम निर्देशित की गयी ३० मुख्य जगहों की सूची में यह मंदिर भी शामिल था। यह मंदिर शहर का सबसे मुख्य केंद्र और आकर्षण का केंद्र बिंदु रहा है।

इंडिया गेट

इंडिया गेट भारत की राजधानी नई दिल्ली में स्थित है, जो कि स्वतंत्र भारत का राष्ट्रीय स्मारक है। भारतीय युद्ध स्मारक के रूप में जाना जाने वाला यह विशाल स्मारक अंग्रेज शासकों द्वारा उन १०,००० भारतीय सैनिकों की स्मृति के लिए तैयार किया गया था, जो कि ब्रिटिश सेना में भर्ती होकर प्रथम युद्ध और अफगान युद्ध के दौरान शहीद हुए थे। इंडिया गेट की आधारशिला १९२१ में डयूक आफ कनाट ने रखी थी। इस स्मारक को १० वर्ष बाद लार्ड इर्विन ने राष्ट्र को समर्पित कर दिया था। यहाँ मेहराज के नीचे अमर ज्योति दिन रात लगातार जलती रहती है जो कि शहीदों की याद में जलाई गयी थी और जो कि हमें शहीदों के बलिदान की याद दिलाती है। नई दिल्ली का यह विशाल स्मारक लाल और पीले रंग की बलुई मिट्टी से बना है। यह स्मारक देखने में किसी विशाल दरवाजे के समान लगता है जो वाकई दर्शनीय है। शाम के समय इंडिया गेट के चारों ओर लगी रोशनियों से इसे प्रकाशमान किया जाता है, जिससे एक भव्य दृश्य बनता है। स्मारक के पास खड़े होकर राष्ट्रपति भवन का नज़ारा लिया जा सकता है। इंडिया गेट पेरिस के आर्क डे ट्रॉयम्फ़ के समान दिखता है। इंडिया गेट पर १३३०० भारतीय सैनिकों के नाम है।

स्टैमफोर्ड हिंदी पाठशाला – उच्चस्तर-२

मौर्य साम्राज्य

गौरव बंसल
कार्तिका सिवा
रिया
इशिता सुजन

भारतीय इतिहास का एक शक्तिशाली एवं महान राजवंश मौर्य साम्राज्य था। ३२२ ई.पू. में चंद्रगुप्त मौर्य ने मौर्य साम्राज्य की स्थापना की। मौर्यों ने एक सौ चालीस वर्षों तक भारत पर शासन किया। चंद्रगुप्त ने एक बड़े साम्राज्य को नियंत्रित किया। उनका साम्राज्य बंगाल की खाड़ी से हिंदू कुश पर्वत तक फैला था। शासन करने में मदद करने के लिए उन्होंने हजारों अधिकारियों का चयन किया। उनमें कर संग्राहक, चरवाहे, और व्यापारी शामिल थे। टैक्स एकत्रित करने वाले किसानों की एक चौथाई फसलें कर के रूप में ले लेते थे। चरवाहों और व्यापारियों ने पशुओं और व्यापार वस्तुओं से करों का भुगतान किया। सम्राट चंद्रगुप्त के साम्राज्य की राजधानी पाटलिपुत्र थी। वह एक व्यस्त शहर था और एक बड़ी दीवार से घिरा हुआ था। इसमें ५७० मीनार और ६४ द्वार थे। महल में चंद्रगुप्त ने दुश्मनों से अपनी रक्षा का प्रबन्ध किया था। वह कभी भी एक ही बिस्तर पर दो बार नहीं सोये और कोई और उनके खाने से पहले उनका भोजन चखता था। साम्राज्य में शांति थी और व्यापार अच्छा था। जब चंद्रगुप्त की मृत्यु हुई, उनका पोता, अशोक, राजा बन गया। २६९ ईसा पूर्व से २३२ ईसा पूर्व तक अशोक ने शासन किया। अपने शासनकाल में उन्होंने साम्राज्य को बहुत बदल दिया और मौर्य साम्राज्य को सत्ता की ऊंचाई तक पहुंचाया। अशोक ने कई वर्षों तक कठोर शासन किया और दक्षिण में कलिंग को प्राप्त करने के लिए युद्ध छेड़े। कलिंग की लड़ाई उनके जीवन में एक निर्णायक मोड़ साबित हुई और उनका मन युद्ध में हुए नरसंहार से ग्लानि से भर गया। उन्होंने बौद्ध धर्म को अपनाया और कठोर शासन करना छोड़ दिया। वह अपने लोगों के लिए एकता चाहते थे और उन्होंने बौद्ध आदर्शों के अनुसार शासन करने की कोशिश की, जिसमें अहिंसा और सभी जीवित प्राणियों की सुरक्षा शामिल थी। अशोक ने अपने कानूनों को देखने के लिए चट्टानों और खंभों पर नक्काशी की थी। सम्राट अशोक के कारण ही मौर्य साम्राज्य सबसे महान एवं शक्तिशाली बनकर विश्वभर में प्रसिद्ध हुआ। अशोक के उदाहरण ने वर्तमान के भी भारतीय नेताओं को प्रभावित किया है। सम्राट अशोक भारत के ही नहीं बल्कि विश्व के इतिहास के सबसे महान शासकों में से एक हैं। २३२ ई.पू. में अशोक की मृत्यु के बाद मौर्य साम्राज्य का पतन आरम्भ हुआ। अगले ५०० वर्षों में भूमि एक युद्ध का मैदान बन गई और आक्रमणकारियों ने इस क्षेत्र पर क़ब्ज़ा कर लिया। बैक्ट्रिया से ग्रीक, फारस से पहलव और मध्य एशिया से कुषाण जैसे बहुत से आक्रमणकारी आये। उनकी संस्कृति बाद में हिंदू संस्कृति में समाहित हो गई। दक्षिण में छोटे छोटे राज्य थे और ऐसे तमिल राज्य जहां व्यापार अच्छा चलता था उन राज्यों से, हाथी दांत, कपास, काली मिर्च, जवाहरात निर्यात किया जाने लगा। अन्तिम मौर्य सम्राट वृहद्रथ की मृत्यु के बाद दो सदियों (३२२ - १८४ ई.पू.) से चले आ रहे शक्तिशाली मौर्य साम्राज्य समाप्त हो गया। मौर्य साम्राज्य के बाद गुप्त साम्राज्य एक और प्रमुख साम्राज्य बना।

चैस्टरफील्ड हिन्दी पाठशाला

उच्चस्तर - २

भारतीय इतिहास

मेरा नाम रुजूला वराडे है। मैं आठवीं कक्षा में पढ़ती हूँ और चैस्टरफील्ड हिंदी पाठशाला की उच्चस्तर-२ कक्षा में पढ़ रही हूँ। मुझे किताबें पढ़ना बहुत पसंद है। में बांसुरी और गिटार बजाना सीख रही हूँ। मुझे तैरना बहुत पसंद है। मुझे गर्व है के मैं हिन्दी यू.एस.ए. की छात्रा हूँ।

भारतीय इतिहास बहुत ही अद्भुत और रोमांचकारी रहा है। देश का भारत नाम महाराज भरत के नाम से रखा गया है जो कि श्री राम के एक भाई थे। भारत की सबसे पहली सभ्यता इंडस वैली के नाम से जानी जाती थी। इसी सभ्यता से भारत को इंडिया भी कहा जाता है। मोहनजोदारो-हड़प्पन सभ्यता पांच हजार बी.सी. में भारत में बसा करती थी। धीरे-धीरे भारत पर कई राजाओं ने राज किया। चन्द्रगुप्त मौर्य भारत के पहले हिन्दू राजा थे जिन्होंने ने मौर्य सभ्यता की शुरुआत की। भारतीय इतिहास के पन्नों पर कई वीर राजाओं के नाम हैं जैसे अशोक, शिवाजी महाराज, और महाराणा प्रताप। महारानी लक्ष्मी बाई भी एक महान रानी थी जो बड़ी वीरता से युद्ध में लड़ी। सन १८५८ में ब्रिटिशों ने इंडिया में अपना राज चलाना शुरू किया। ब्रिटिशों ने भारत में अपनी ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना की। ब्रिटिश राज की वजह से भारतीय जनता में नाराजगी और क्रोध की भावनाएँ जागृत हुईं। सब लोग अपना देश स्वतन्त्र करना चाहते थे। इस वजह से बहुत सारी लड़ाइयाँ हुईं। बहुत सारे वीर लोगों ने बलिदान किया। महात्मा गांधी, सुभाष चंद्र बोस, भगत सिंह, चंद्र शेखर आज़ाद, मंगल पांडे, लाला लाजपत राय और अनेक लोगों की वीरगति से भारत १५ अगस्त १९४७ में स्वतंत्र हुआ। जवाहरलाल नेहरू भारत के पहले प्रधानमंत्री थे। राजेंद्र प्रसाद भारत के पहले राष्ट्रपति थे। हर वर्ष भारत में अगस्त १५ बड़े धूम-धाम से मनाया जाता है। हम बड़े गर्व से अपना तिरंगा लहराते हैं। भारतीय तिरंगा नारंगी, सफेद और हरे रंग में सजाया गया है जिसके मध्य में नीले रंग का अशोक चक्र है। आज सन २०१९ तक भारत की बहुत प्रगति हुई है। भारत सभी क्षेत्रों में आगे बढ़ रहा है। मनोरंजन में बॉलीवुड का नाम पूरी दुनिया में मशहूर है। क्रिकेट खेल में भारत का नाम मान से लिया जाता है। मुझे अपने देश पर गर्व है।

"इतिहास जीतने वालों द्वारा लिखा जाता है"
- विंस्टन चर्चिल (अंग्रेज राजनीतिज्ञ)

पोरस - एक महान योद्धा

मेरा नाम सारा सिंघल है। मैं १२ वर्ष की हूँ और सातवीं कक्षा में पढ़ रही हूँ। मैं हिन्दी यू. एस. ए. में उच्च स्तर २ की क्षात्रा हूँ। मैं चैस्टरफील्ड में अपने पापा, मम्मी और छोटी बहन के साथ रहती हूँ।

मुझे पोरस और सिकंदर की कहानी से बहुत प्रेरणा मिली है। यह कहानी २००० वर्ष पुरानी है। पोरस का जन्म पंजाब के एक जिले में हुआ था, जो उस समय पौरव राष्ट्र कहलाता था। पोरस केवल गुणवान और शक्तिशाली योद्धा ही नहीं बल्कि एक बहुत ही सक्षम राजा भी था। सभी बाधाओं के बावजूद उसने भारत देश को सिकन्दर के आतंक से बचाया।

तक्षशिला का राजा अभिराज पोरस का सबसे बड़ा दुश्मन था और उसने घृणा के अंधेपन में ऐलेग्ज़ँडर (जिसे सिकंदर के नाम से भी जाना जाता है) को भारत में आसरा दिया। सिकंदर एक बहुत ही निर्दयी और महत्वाकांक्षी राजा था। उसका यह सपना था कि वह भारत पर राज करे। भारत उस समय "सोने की चिड़िया" भी माना जाता था।

सिकंदर और पोरस के बीच हुए युद्ध को 'Battle of the Hydaspes' कहते हैं। यह युद्ध ३२६ ईसा पूर्व में लड़ा गया था। कहा जाता है कि सिकन्दर की सेना पोरस की सेना के मुकाबले तीन से पांच गुना ज्यादा थी। सिकंदर एक ऐसा योद्धा था जिसकी ताकत के आगे बड़े-बड़े राजा-महाराजा भी बिना युद्ध लड़े ही हार मान लेते थे। ऐसे में पोरस का उससे युद्ध करना वीरता का एक सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है।

इस लड़ाई से केवल मुझे ही नहीं बल्कि हर इन्सान को यह प्रेरणा मिलती है कि अपने देश के लिए हमेशा खड़े रहना चाहिए और दुश्मन की ताक़त से कभी नहीं घबराना चाहिए। (इतिहास में यह लिखा गया है कि सिकंदर ने पोरस को हरा दिया था। और भारत के कई इतिहासकारों का मानना है कि इस युद्ध में पोरस की विजय हुई थी।)

डॉक्टर येलाप्रगादा सुब्बा राव

नमस्ते! मेरा नाम सिद्धार्थ सुनेजा है और मैं A-२ कक्षा का छात्र हूँ। मैं विल्टन, कनेटिकट की हिन्दी पाठशाला में पढ़ता हूँ। मेरे घर में ४ सदस्य हैं। हमारे पास एक कुत्ता भी है। मेरी माताजी का नाम तनु है। मेरे पिताजी का नाम बलराज है। मेरी बहन का नाम सुहानी है और मेरे कुत्ते का नाम सिम्बा है। क्या आप जानते हैं कि एक महत्वपुर्ण कैंसर का विनाश करने की दवाई, मिथोट्रेक्सेट, जो आज भी कीमोथेरेपी में प्रयोग की जाती है, उसका आविष्कार किसने किया था? उन महान आविष्कारक का नाम डॉक्टर येलाप्रगादा सुब्बा राव है।

डॉक्टर येलाप्रगादा सुब्बा राव ने अपनी शिक्षा मद्रास मेडिकल विद्यालय और हार्वर्ड मेडिकल विद्यालय से प्राप्त की। अपनी शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात डॉक्टर येलाप्रगादा सुब्बा राव ने अनेक दवाइयाँ - जैसे मिथोट्रेक्सेट और ऑरोमैकिन एवं टेट्रासाइक्लिन जैसी एंटीबायोटिक्स दवाइयों का आविष्कार किया। हमें डॉक्टर येलाप्रगादा सुब्बा राव पर बहुत गर्व है और हम उनके इन महत्वपूर्ण आविष्कारों के लिए उनके बहुत आभारी हैं।

अनिशा सूद

झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई

मेरा नाम अनिशा सूद है। मैं सातवीं कक्षा मे पढ़ती हूँ और चेस्टरफ़ील्ड हिंदी पाठशाला की उच्चस्तर-२ कक्षा मे पढ़ रही हूँ। मुझे किताबें पढ़ना बहुत पसंद है। मैं फ्लूट और पियानो बजाना सीख रही हूँ। मुझे स्विमिंग करना बहुत पसंद है। मुझे गर्व है कि मैं हिन्दी यू.एस.ए. की छात्रा हूँ।

भारत का इतिहास बहुत ही गौरवपूर्ण और कई हजार वर्ष पुराना है, चाहे वह सिंधु घाटी की सभ्यता हो या आजादी का संग्राम। इसके इतिहास के पीछे अनेक कथाओं के साथ–साथ आंदोलन और संघर्ष की कहानी सुनने को मिलती है। उन्ही कथाओं में से एक है महारानी लक्ष्मीबाई की।

झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई का जन्म १५ जून, १८३४ ई॰ को बिठूर में हुआ था, जो उन दिनों पेशवाओं की राजधानी था। माँ-बाप ने उनका नाम मनुबाई रखा था। बचपन में ही उन्होंने घुड़सवारी और अस्त्र-शस्त्रों का संचालन सीख लिया था। वे घुड़सवारी और तीरंदाजी में इतनी कुशल थीं कि बड़े-बड़े योद्धा उनका मुकाबला करने में घबराते थे।

२० वर्ष की आयु में उनका विवाह झांसी के राजा गंगाधार राव से हो गया। दुर्भाग्य से वे अपना वैवाहिक जीवन बहुत दिनों तक नहीं चला पाईं। अपने विवाह के दो वर्ष के भीतर ही वे विधवा हो गईं। रानी लक्ष्मीबाई की कोई संतान नहीं थी। इसलिए उन्होंने किसी बालक को गोद लेने का फैसला किया। भारत के तत्कालीन गवर्नर जनरल लॉर्ड डलहौजी ने उन्हें ऐसा नहीं करने दिया। वे झांसी को ब्रिटिश साम्राज्य में मिलाना चाहते थे।

लक्ष्मीबाई ने अंग्रेजों के इस अन्याय को बरदाश्त नहीं किया और उनके विरुद्ध उठ खड़ी हुईं। उन्होंने भारत में विदेशी शासन के विरुद्ध क्रांति का नेतृत्व किया। उन्होंने गर्वनर जनरल के आदेशों को मानने से इंकार कर दिया। उन्होंने एक बालक को गोद लेकर अपने राज्य को स्वतंत्र घोषित कर दिया। नाना साहब, तात्या टोपे और कंवर सिंह जैसे देशभक्त पहले से ही अंग्रेजों का विरोध कर रहे थे और मौके की तलाश में थे। उन्होंने रानी लक्ष्मीबाई का साथ दिया। सितम्बर, १८५७ में अंग्रेजों ने झांसी पर धावा बोल दिया। रानी से आत्मसमर्पण करने को कहा गया। उन्होंने ऐसा करने से साफ इंकार कर दिया। परिणामस्वरूप विशाल अंग्रेजी सेना ने झांसी पर धावा बोल दिया और उस पर कब्जा कर लिया। इस पर भी रानी ने हिम्मत नहीं हारी। उन्होंने ऐलान किया कि "जब तक मेरे शरीर में रक्त की एक बूंद भी शेष है और मेरे हाथ में तलवार है, तब तक झाँसी की पवित्र भूमि पर कोई विदेशी पैर रखने का साहस नहीं कर पायेगा।" इसके कुछ ही दिन बाद लक्ष्मीबाई और नाना साहब ने मिलकर ग्वालियर पर हमला कर लिया। लेकिन उनके एक प्रधान दीवान दिनकर राव धोखा देकर अंग्रेजों से मिल गया। उसके देशद्रोह ने रानी की कमर तोड़ दी ओर उन्हें ग्वालियर छोड़ने पर मजबूर होना पड़ा। ग्वालियर छोड़ने के बाद रानी लक्ष्मीबाई ने नई सेना गठित करना प्रारंभ की, लेकिन उनके पास ऐसा करने को पर्याप्त समय नहीं था। कर्नल

. . . . . .

महात्मा गाँधी

मेरा नाम कुश गांधी है और मैं इस अद्भुत हिंदी विद्यालय में ७ वर्ष तक अध्ययन करने के लिए आभारी हूँ। मैं आठवीं कक्षा में बोर्डेनटाउन क्षेत्रीय स्कूल में पढ़ता हूँ। फ़ुटबॉल खेलना और पढ़ना मेरे शौक हैं।

मेरा नाम उदिति त्रिपाठी है और मैं इस अद्भुत हिंदी विद्यालय में ७ वर्षों तक अध्ययन करने के लिए आभारी हूँ। मैं बोर्डेनटाउन रीजनल स्कूल डिस्ट्रिक्ट में आठवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। जिमनास्टिक और रीडिंग मेरे शौक हैं।

भारत की स्वतंत्रता में बहुत सारे क्रांतिकारियों ने अपना योगदान दिया है। महात्मा गांधी भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के नेता थे। महात्मा गांधी का पूरा नाम मोहनदास करमचंद गांधी था। उनका जन्म २ अक्टूबर १८६९ के दिन पोरबंदर शहर में हुआ था। उन्होंने अपनी वकालत की पढ़ाई लंदन से की थी। वकालत की पढ़ाई करने के बाद उन्होंने अपना पहला काम साउथ अफ्रीका में शुरू किया। साउथ अफ्रीका में गांधी जी ने लोगों को अपने हक के लिए लड़ने के लिए प्रेरित किया। इस आंदोलन के लिए उन्होंने अहिंसा का मार्ग अपनाया था। इस आंदोलन की सफलता के बाद गांधी जी १९१४ में भारत वापस लौट आये। उस समय भारत में स्वतंत्रता को लेकर काफी आंदोलन चल रहे थे। गाँधीजी स्वराज हासिल करने के विभिन्न सामाजिक कारणों के लिए राष्ट्रव्यापी अभियान चलाते हैं। आजादी के लिए गांधीजी ने काफी अभियानों की शुरुआत की। १९२० में असहयोग आंदोलन, १९३० में नगरी अवज्ञा अभियान और अंत में १९४२ में भारत छोड़ो आंदोलन। उन्होंने नमक आंदोलन के लिए दांडी यात्रा की और बहुत संघर्ष के बाद भारत को ब्रिटिश राज्य से आजादी मिली। भारत को आजादी दिलाने में गांधी जी ने सत्य और अहिंसा का मार्ग अपनाया। गांधी जी ने अपना पूरा जीवन देश को स्वतंत्रता दिलाने में व्यतीत किया। गांधीजी की 30 जनवरी को प्रार्थना सभा में नाथूराम गोडसे ने गोली मारकर हत्या कर दी। महात्मा गांधी जी की समाधि राजघाट दिल्ली पर बनी हुई है। महात्मा गांधी अपने अमूल्य योगदान के लिए ज्यादातर राष्ट्रपिता और बापू के नाम से जाने जाते हैं। आज भी लोग उन्हें महान और अतुल्य कार्यों के लिए याद करते हैं। महात्मा गांधी रंगभेद और जाति भेद को नहीं मानते थे। उन्होंने अछूतों को हरिजन का नाम दिया।

झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई...

स्मिथ ने सेना के साथ उन पर हमला कर दिया, वे बड़ी बहादुरी से लड़ीं। युद्ध में वे बुरी तरह से घायल हो गईं। जब तक वे जीवित रहीं, उन्होंने स्वतंत्रता का झंडा नीचे नहीं गिरने दिया ।

स्वतन्त्रता का पहला संग्राम भारतीय हार गए। लेकिन रानी लक्ष्मीबाई ने भारत भूमि पर स्वतंत्रता और बहादुरी के ऐसे बीज बो दिए, जिनसे भारत स्वाधीन हुआ।

चंद्रगुप्त मौर्य

अदिति बोहरे

मेरा नाम अदिति बोहरे है। मैं उच्चस्तर-२ की छात्रा हूँ। हिन्दी यू.एस.ए. में मेरा यह सातवाँ वर्ष है। इन छह वर्षों में मैंने हिंदी के अध्ययन के अलावा भारतीय संस्कृति भी सीखी है जो मुझे मेरी भारतीय संस्कृति से जोड़ती है। मैं हिन्दी यू.एस.ए. में स्वयंसेवक का योगदान देना चाहता हूँ। मुझे हिन्दी यू.एस.ए. के छह वर्ष हमेशा स्मरण रहेंगे।

चंद्रगुप्त मौर्य एक भारतीय सम्राट थे जो ३४०-२९८ ईसा पूर्व में रहते थे। वे मौर्य साम्राज्य के पहले शासक थे। उन्होंने ३२२-२९८ ईसा पूर्व शासन किया। वे सम्राट बिन्दुसार के पिता और सम्राट अशोक के दादा थे। उन्होंने भारत के एकीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

चंद्रगुप्त क्षत्रिय जाति के थे। चाणक्य की मदद से चंद्रगुप्त ने एक छोटी सेना खड़ी की। चंद्रगुप्त के बल में सैन्य शक्ति का अभाव था, लेकिन चाणक्य की चालाक रणनीतियों से संतुलित था। चंद्रगुप्त ने मगध साम्राज्य की राजधानी पाटलिपुत्र में प्रवेश किया, जहाँ उन्होंने चाणक्य की बुद्धिमत्ता का उपयोग करते हुए एक गृहयुद्ध की शुरुआत की। अंत में, ३२२ ईसा पूर्व में उन्होंने नंद वंश का शासन समाप्त करके मगध के सिंहासन पर कब्ज़ा कर लिया, और मौर्य वंश की स्थापना की। इस जीत के बाद चंद्रगुप्त ने गांधार में स्थित सिकंदर के सेनापतियों से लड़ाई लड़ी और उन्हें हराया। चाणक्य की मदद से उन्होंने जल्द ही मौर्य साम्राज्य को उस समय की सबसे शक्तिशाली सरकारों में बदल दिया। चंद्रगुप्त द्वारा नियंत्रित क्षेत्र पूरे उत्तर भारत में पश्चिम में सिंधु नदी से लेकर पूर्व में बंगाल की खाड़ी तक फैला हुआ था।

सिकंदर की मृत्यु के बाद, ३२३ ईसा पूर्व में, मेसीडोनियन द्वारा नियंत्रित पूर्वी क्षेत्र जनरल सेल्यूकस के हाथों में आ गए। सेल्यूकस पश्चिमी सीमाओं पर होने के साथ व्यस्त था। चंद्रगुप्त ने एक मौका देखा और सेल्यूकस पर हमला किया। उसने आज के पाकिस्तान और अफगानिस्तान के एक बड़े हिस्से पर कब्जा कर लिया। चंद्रगुप्त ने ३०५ ईसा पूर्व में सेल्यूकस के साथ एक संधि पर हस्ताक्षर किए, जिसमें दोनों शासकों ने सीमाएं स्थापित कीं और पंजाब को ५०० युद्ध हाथियों के बदले में चंद्रगुप्त को दिया गया था। सभी उत्तरी भारत के मास्टर बनने के बाद चंद्रगुप्त ने भारत के दक्षिणी हिस्से को जीतना शुरू किया। मौर्य सेना ने अधिकांश स्वतंत्र भारतीय राज्यों पर विजय प्राप्त की। आखिरकार, ३०० ईसा पूर्व में, मौर्य साम्राज्य की सीमाएं दक्कन के पठार में विस्तारित हुईं। चंद्रगुप्त ने स्वेच्छा से २९८ ईसा पूर्व में सिंहासन छोड़ दिया और उनका बेटा बिन्दुसार सम्राट बन गया। चंद्रगुप्त जैन धर्म के एक तपस्वी और अनुयायी के रूप में बदल गए। चंद्रगुप्त दक्षिण की ओर चले गए और जैन धर्म की मान्यताओं के अनुरूप एक गुफा के अंदर समाधी में चल बसे।

General Dentistry | Cosmetic Dentistry
Invisalign ® | & More..

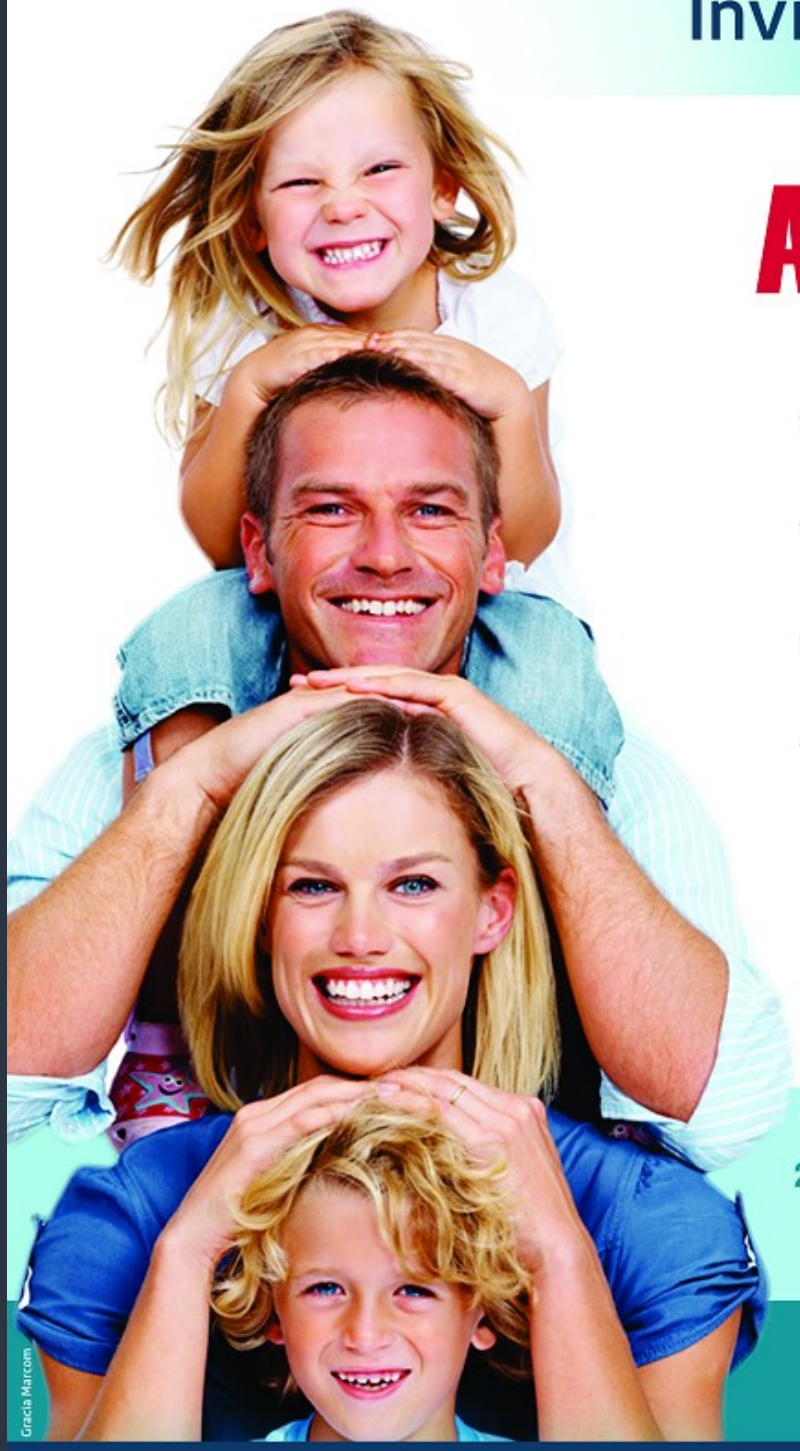

A-1 DENTAL

- Comfortable And Relaxed Environment
- Friendly Personalized Staff
- Brand New Office & New Equipments
- In-house Financing Available

Most insurance plans accepted, Saturday & Evening Appointments Available

Dr. Bhavi Bhagia, DDS
253 Talmadge Rd., Edison, NJ 08817
732-650-9999
www.a1dental.com

3000 Route 27, Suite #10
Kendall Park, NJ 08824

HEALTHY SMILE FOREVER IS..
HEALTHY FAMILY FOREVER

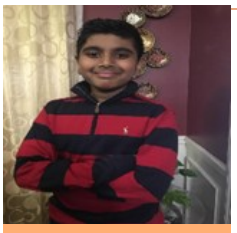

नील गरग

छत्रपति शिवाजी महाराज

नमस्ते, मेरा नाम नील गरग है। मैं एवन हिंदी स्कूल में मध्यमा-३ कक्षा में पढ़ता हूँ। मुझे भारतीय इतिहास पढ़ने का शौक है। मुझे छत्रपति शिवाजी महाराज की कहानियाँ और इतिहास पढ़ने में बहुत मजा आता है।

शिवाजी की माता का नाम जीजाबाई और उनके पिता का नाम शाहजी था। बचपन से ही उन्हें अपनी माँ से रामायण और महाभारत की कथाएँ सुनना अच्छा लगता था। जब शिवाजी महाराज युवा थे, तब पूरे भारत में मुगलो का साम्राज्य था। मुगल साम्राज्य के सैनिक और योद्धा हिंदूओं पर अत्याचार कर रहे थे। उन्होंने हिंदूओं के मंदिर गिरा दिये और बच्चों, बूढ़ों और औरतों के साथ उनका गैर व्यवहार बढ़ रहा था। शिवाजी महाराज ने मुगलों के कार्यों का तिरस्कार किया। उन्होंने बहुत ही कम उम्र से युद्ध का प्रशिक्षण लिया था। भविष्य में एक सफल राजा बनने की उन्होंने शुरुआत की। उन्होंने प्रतिज्ञा ली थी कि वे मराठा को स्वतंत्र राज्य बनाएंगे। उनके सबसे अच्छे प्रशिक्षकों में से एक थे दादोजी कोंडदेव, जिन्होंने शिवाजी को लड़ना सिखाया।

जब शिवाजी १७ वर्ष के थे तो उन्होंने तोरण किले पर कब्जा कर लिया। शिवाजी के सैनिकों का यह साहस देख कर मुगलों का राजा आदिल शाह भी डर गया। उन्होंने शिवाजी को पकड़ने का फैसला किया।

एक बार आदिल शाह ने शिवाजी को मारने के लिये अफजल खान जैसे बलवान सिपाही को भेजा, लेकिन शिवाजी ने बहुत ही चतुराई से अफजल खान जैसे बलवान सरदार को मार गिराया। तब आदिल शाह और भी गुस्सा हो गये। शिवाजी महाराज ने मुगलों के कई किलों पर अपना कब्ज़ा किया। उन्होंने सभी हिंदूओं को मुगलों के अत्याचार से बचाया। उनकी यह ख्याति मुगलों के राजा औरंगज़ेब तक पहुंची। उन्होंने एक बार शिवजी महाराज को अपने दरबार में आमंत्रित किया और उन्हें नजरबंद बना लिया। शिवाजी महाराज औरंगज़ेब के सैनिकों को चकमा दे कर वहाँ से निकल गये, तब औरंगज़ेब बहुत ही क्रोधित हो गया। औरंगज़ेब ने शिवाजी महाराज पर हमला बोल दिया, तब शिवाजी के सैनिकों ने औरंगज़ेब के सैनिकों को धूल चटाई। शिवाजी महाराज के सैनिक बहुत ही पराक्रमी और वफादार सेनानी थे। उनमें से बाजीप्रभु, तानाजी, वामहाल जैसे और भी सिपाही थे जो शिवाजी महाराज के लिए अपनी जान भी देने के लिए तैयार थे। शिवाजी महाराज ने पूरी प्रजा को मुगलों से मुक्ति दिलवाई और प्रजा की सुरक्षा और खुशहाली की ओर हमेशा ध्यान दिया। प्रजा ने उन्हें अपना राजा घोषित कर उनका रायगढ़ किले पर राज्याभिषेक किया और उन्हें छत्रपति शिवाजी महाराज से सम्मानित किया गया। छत्रपति शिवाजी महाराज की जय।

उत्तराखंड यात्रा

नमस्कार, मेरा नाम अनन्या गुप्ता है। मैं हिंदी यू.एस.ए., स्टैमफोर्ड में उच्चस्तर-१ कक्षा में पढ़ती हूँ। यह लेख मेरी उत्तराखंड, भारत यात्रा के दौरान नैनीताल और कौसानी मे बिताये समय और मेरे व्यक्तिगत अनुभव के बारे में है।

मेरी उत्तराखंड यात्रा एक बहुत खूबसूरत यात्रा थी। हमने यह यात्रा अपने परिवार के साथ लखनऊ से प्रारम्भ की और नैनीताल, अलमोड़ा होते हुए हम लोग कौसानी पहुँचे (यह हिमालय क्षेत्र में आता है)। पहाड़ों के ऊपर और नीचे जाते हुए हमने कई तरह के जानवरों जैसे गायों और कुत्तों को देखा। ऊपर पहाड़ों पर जाकर आप यह भी देख सकते हैं कि सड़कें बहुत घुमावदार होती हैं। हमने पहाड़ों के सीढ़ीदार हरे भरे खेत देखे और जैसे-जैसे आप ऊपर जाएँगे, वैसे-वैसे ठंड बढ़ती जाएगी।

जब हम नैनीताल पहुँचे तो वहाँ बहुत सुंदर दृश्य था। एक सुंदर झील के आसपास कई बड़े पहाड़ थे जहाँ आप नाव की सवारी कर सकते हैं। जब हम वहाँ पहुंचे तो हमने माल रोड का आनंद लिया। अगले दिन हम नाव को एक छोर से दूसरे छोर तक ले गए। मॉल रोड पर आप को स्वादिष्ट भारतीय भोजन मिल सकता है और आप बाजार में माहिर हाथों से बुने हुए कपड़ों के साथ-साथ लकड़ी के काम के कई सुन्दर सामान देख सकते हैं। नैनीताल उत्तराखंड में आता है। यहाँ से आप हिमालय पर्वतों की चोटियाँ देख सकते हैं।

एक और तरीका है जिससे आप नैनीताल का नजारा देख सकते हैं। यह है रोपवे जिसके माध्यम से पहाड़ के ऊंचे स्थान पर जाकर वहाँ का अत्यंत सुंदर दृश्य दिखाई देता है, और वहाँ कई दुकानें और मजेदार चीजें हैं। एक और मज़ेदार गतिविधि जो आप उस पर्वत पर कर सकते हैं, वह है नैनीताल की पारंपरिक पोशाक में तस्वीरें खींचना।

नैनीताल के बाद अगले दिन हम कौसानी गए। कौसानी हिमालय में है, जिसका मतलब है कि हम काफी पहाड़ी क्षेत्रों में थे। हम लंबे समय तक वहाँ नहीं रहे, हालांकि दृश्य सुंदर था। यदि आप जल्दी उठते हैं तो आप हिमालय के सुंदर सूर्योदय और बर्फ से ढके पहाडों को देख सकते हैं।

हम लोग कौसानी जाते समय एकल विद्यालय के कार्यकर्ताओं से भी मिले और उनसे गांव के एकल विद्यालय के बच्चों के विषय में चर्चा की। हमने कौसानी में हस्तशिल्प तथा शाल बनाने का कारख़ाना भी देखा तथा कुछ गरम शालें भी खरीदीं।

मैं आशा करती हूँ आपको मेरा लेख पसंद आया होगा। धन्यवाद।

"इतिहास विश्वास की नहीं, विश्लेषण की वस्तु है। इतिहास मनुष्य का अपनी परंपरा में आत्म-विश्लेषण है।"

मौर्यकालीन भारत

साऊथ ब्रुन्स्विक उच्चस्तर-२

साऊथ ब्रुन्स्विक उच्चस्तर-२ अ कक्षा के छात्रों ने मिलकर ऐतिहासिक भारत के मौर्य काल के ऊपर शोध किया और अपनी जानकारी को इस लेख के माध्यम से सब तक पहुँचाने की चेष्टा की है।

चन्द्रगुप्त मौर्य

ईशान माहेश्वरी

चन्द्रगुप्त मौर्य का जन्म ३४० ईसा पूर्व में पाटलिपुत्र नगर में हुआ था। पाटलिपुत्र आज के समय में भारत के बिहार राज्य में है। वे बचपन से ही बहुत अच्छे नेता और शिकारी थे। चंद्रगुप्त मौर्य, मौर्य साम्राज्य के संस्थापक और पहले राजा थे। चंद्रगुप्त के मुख्य सलाहकार चाणक्य एक रणनीतिकार थे जिन्होंने चन्द्रगुप्त को शिष्य के रूप में अपनाया और एक वीर राजा बनाया। उन्होंने अपनी राजधानी पाटलिपुत्र में शासन किया था। चन्द्रगुप्त ने नन्द सेना को हराया और उसके बाद यूनानी सेना को भी हराया। उनकी विजय से उन्होंने भारतीय उपमहाद्वीप में सबसे बड़ा साम्राज्य स्थापित किया। चंद्रगुप्त के बेटे बिंदुसर और पोते सम्राट अशोक थे। चन्द्रगुप्त मौर्य ने २९८ ईसा पूर्व में अपने बेटे को सिंहासन दिया। कुछ लोगों का मानना है कि वे जैन धर्म में परिवर्तित हो गए और अपनी मृत्यु तक जीवन को एक तपस्वी के रूप में जिया।

बिन्दुसार

संजोग दंदोना

बिन्दुसार का जन्म ३२० ईसा पूर्व में हुआ था। उनका असली नाम सिमसेवा था। उनके गुरु पिंगलवस्ता थे। उनकी मृत्यु सैंतालिस वर्ष की उम्र में हो गयी थी। वे चन्द्रगुप्त मौर्य के दूसरे पुत्र थे औए भारत के दूसरे मौर्य सम्राट बने। बिन्दुसार ने अपने राज्य को बढ़ाने के लिए १६ राज्यों पर जीत हासिल की और उनका सम्राज्य दक्षिण में मैसूर तक फैला था। वे बौध धर्म के अनुयायी थे और उन्होंने अहिंसा को बढ़ावा दिया।

सम्राट अशोक

मान्या चतुर्वेदी

सम्राट अशोक मौर्य राज्य के आखिरी राजा थे। उनके पिता जी का नाम बिन्दुसार तथा और माता शुबद्रंगी था। राजा बिन्दुसार के १०१ बेटे थे। उनमें से एक ही मगध का राजा बन सकता था। राजा ने अपने सारे बेटों की परीक्षा ली और वे अशोक को राजा नहीं बनने देना चाहते थे। अशोक ने राजा बनने के बाद अपने राज्य को बहुत बढ़ाया। उनका राज्य आसाम से ले कर ईरान तक फैला था। कलिंग के युद्ध के पश्चात अशोक का दिल बदल गया जब उन्होंने देखा कि युद्ध ने बहुत सारी बर्बादी की है। उन्होंने बौध धर्म अपना लिया और शांति को प्रचार करने लगे। उनकी मृत्यु ७२ वर्ष की उम्र में हुई।

चाणक्य

सना जैन

चाणक्य, जो कि विष्णुगुप्त और कौटिल्य के नाम से भी जाने जाते थे, बहुत बुद्धिमान और होशियार सलाहकार थे। शुरुआत में वे इतने प्रभावशाली नहीं थे। चाणक्य एक ब्राह्मण परिवार में पैदा हुए थे और पैदा होने के समय उनके मुँह में दांत थे। पाठशाला में उन्हें राजनीतिक अध्ययन में रूचि थी। उस समय के राजा धनानंद ने विष्णुगुप्त पर बहुत सारे आरोप लगाए। चाणक्य को बुरा लगा। उन्होंने ठान लिया कि वे विष्णुगुप्त को उनकी पदवी से उतार कर दम लेंगे और अपने कार्य की पूर्ति के लिए एक शासक को ढूंढने लगे। चाणक्य को चन्द्रगुप्त मिल गए। चाणक्य के साथ मिल कर उनका राज्य बहुत फैला। चाणक्य एक अत्यंत बुद्धिमान प्रधान मंत्री थे और अपनी कूटनीति के लिए विख्यात हैं।

मौर्य साम्राज्य की उपलब्धियाँ एवं योगदान

अदित्री चौहान

मौर्य साम्राज्य की बहुत सारी उपलब्धियाँ और योगदान हैं। उनका व्यापार बहुत दूर तक फैला था। ख़ैबर पास के द्वारा रेशम एवं मसाले यूरोप जाते थे। उन्होंने अर्थव्यवस्था में काफी सुधार किया था। किसानों को राजा को उचित व्यवस्था के लिए कर देना पड़ता था। चंद्रगुप्त मौर्य ने पूरे भारत में एक ही मुद्रा स्थापित की थी। और तो और, मौर्य साम्राज्य की सेना काफ़ी बड़ी थी। उसमें ६००,००० पैदल सैनिक, ३०,००० घोड़े पर बैठे सैनिक और १,००० हाथी थे। इन सब के अलावा, धर्म और समाज में कई प्रगति हुई। हिन्दू धर्म के साथ जैन और बुद्ध धर्म भी स्थापित हुए। साम्राज्य में लोग अहिंसा को मानने लगे। अपराध एवं संघर्ष कम होने लगे। मौर्य साम्राज्य के इन्हीं योगदान के कारण हम उन्हें याद और सम्मान करते हैं।

मौर्य साम्राज्य का पतन

शगुन अरोड़ा

अशोक की मृत्यु के बाद मौर्य साम्राज्य का पतन शुरू हुआ। पतन का सबसे बड़ा कारण यह था कि अशोक के उत्तराधिकारी कमजोर थे। वे बहुत बड़ा साम्राज्य नहीं बचा पाए तथा राज्य कई हिस्सों में बंट गया। पतन के कुछ मुख्य कारण थे:

१- धार्मिक नीतियां: जब अशोक ने पशु बलिदान पर रोक लगाई तब ब्राह्मण उसके विरोधी हो गए क्योंकि इस रोक से उनकी कमाई पर बुरा असर आया।

२- सेना और नौकरशाही पर भारी खर्च: मौर्य काल में सेना और नौकरशाही पर भारी खर्च किया जाता थ। राजा अशोक बौद्ध भिक्षुओं को बहुत सारा धन दान में दिया करते थे जिससे शाही खजाने में कमी होने लगी।

३- प्रांतों में यमनकारी शासन: मगध प्रान्त के शासक बहुत भ्रष्ट और यमनकारी थे। अशोक एवं बिन्दुसार ने इन शासकों को नियंत्रण में लाने की कोशिश की परन्तु कामयाब नहीं हो पाए।

४- उत्तर पश्चमी सीमा पर लापरवाही: मौर्य साम्राज्य के उत्तर पश्चिम सीमा पर अशोक ने कभी ध्यान नहीं दिया जिसका फायदा ग्रीस ने उठाया और अपना राज्य उत्तर अफगानिस्तान में स्थापित किया। धीर-धीरे बहुत विदेशी ताकतों ने वहाँ पर जड़ें जमा लीं।

कलिंग का युद्ध

निकिता मजीठिया

भारतीय इतिहास में कलिंग के युद्ध का एक प्रमुख स्थान है। यह युद्ध महान मौर्य सम्राट अशोक और राजा अनंत पद्मनाभन के बीच 262 ईसा पूर्व में कलिंग (जो आज ओडिशा राज्य है में लड़ा गया था।) अशोक ने युद्ध में राजा अनंत पद्मनाभन को पराजित किया, जिसके परिणामस्वरूप कलिंग पर विजय प्राप्त की और मौर्य साम्राज्य में इसको मिला लिया। इस युद्ध में कलिंग के १५०,००० योद्धाओं और १००,००० मौर्य योद्धाओं का जीवन दाव पर लग गया था। युद्ध का दृश्य बहुत भयानक था, पूरे इलाके सैनिकों की लाशों के साथ भरे हुए थे, गंभीर दर्द में घायल सैनिक पड़े हुए थे, गिद्धों ने उनके मृत शरीर पर आश्रय कर लिया था, बच्चे अनाथ हो गए थे। वे अपने सगे सम्बन्धियों को खो चुके थे। विधवा शांत और निराश दिखाई दे रही थीं। युद्ध के मैदान के आगे बहने वाली दया नदी बहते रक्त के कारण पूरी तरह से लाल हो गई। इस घटना का सम्राट अशोक पर गहरा प्रभाव पड़ा और उन्होंने बौद्ध धर्म को अपनाया और आचार्य उपगुप्त के शरण में अहिंसा के रास्ते पर चले गए।

नालंदा महाविहार

समर्थ गोयल

नालंदा महाविहार दुनिया के सबसे पुराने विश्वविद्यालयों में से एक है। प्राचीन भारत में दो प्रकार की शिक्षा होती थी: गुरुकुल और विहार (विद्यालय)। विश्वविद्यालयों में भाषा, व्याकरण, औषधि और विज्ञान की कक्षाएँ चलती थीं। वहाँ महायान, बौद्ध धर्म, महा शास्त्र, अर्थवेद, विनय और सूत्र भी पढ़ाए जाते थे। नालंदा महाविहार साम्राज्य की दो राजधानियों के बीच स्थित है। सारी दुनिया से विद्वान इस विश्वविद्यालय में आते थे। नालंदा में चार मठों: नालंदा, विक्रमशिला, ओदंतपुरी और वल्लभी के लिए कक्षाएँ लगाई जाती थीं। नालंदा आज भी मौजूद है।

नालंदा के प्राचीन विश्वविद्यालय के अवशेष

मेघस्थनीज

राघव सेंथिल्कुमार

मेघस्थनीज एक प्राचीन इतिहासकार था और ग्रीस देश का निवासी था। उन्हें हेलेनिस्टिक राजा सेल्यूकस ने भारत में राजा चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में राजदूत के रूप में भेजा। उन्होंने "इंडिका" नाम की पुस्तक लिखी थी और अपनी किताब में मौर्यकालीन भारत का विस्तृत विवरण लिखा जिसे पढ़ कर इतिहासकारों को प्राचीन भारत की विस्तृत जानकारी मिली।

भारतीय इतिहास की विदुषी और महान बेटियाँ

आरुषि अग्रवाल

मैं विल्टन कनेक्टिकट में सातवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मुझे किताबें पढ़ने का बहुत शौक है। यह मेरा हिन्दी यू.एस.ए. के साथ आखिरी वर्ष है। मैं उन सभी अध्यापक और अध्यापिकाओं का धन्यवाद करती हूँ जिन्होंने मुझे हिंदी भाषा का ज्ञान दिया और मुझे पढ़ना, लिखना और बोलना सिखाया। हिन्दी यू.एस.ए. को मेरी तरफ से बहुत शुभकामनाएं और धन्यवाद।

हमारे देश का इतिहास यह बताता है कि स्वतंत्रता के लिए अनेक राजाओं ने लड़ाइयाँ लड़ी और इस कोशिश में हमारे देश की वीर तथा साहसी स्त्रियों ने भी इनका साथ दिया।

इसमें **वीरांगना रानी लक्ष्मी बाई** का नाम सबसे पहले दिमाग में आता है। उनकी उल्लेखनीय लड़ाई सन १८५७ की स्वतंत्रता संग्राम की है। रानी लक्ष्मी बाई ने हमारे देश और अपने राज्य झाँसी की स्वतंत्रता के लिए ब्रिटिश राज्य के खिलाफ लड़ने का निडर साहस किया और अंत में वीरगति को प्राप्त हुई।

इसके बाद में **कस्तूरबा गांधी** जी का नाम लेना चाहूंगी। वे अपने पति महात्मा गांधी जी की संस्था के साथ एक राजनैतिक कार्यकर्ता और नागरिक हक़ के लिए लड़ने वाली भारतीय स्वतंत्रता सेनानी थीं। निश्चित ही कस्तूरबा गांधी जी आज की महिलाओं के लिए भी प्रेरणा स्रोत हैं।

इसके बाद में **सरोजनी नायडू** जी का नाम लेना चाहूंगी। भारत कोकिला सरोजनी नायडू उस अमर आत्मा का नाम है जिसने आज़ादी के संग्राम में अपना अमूल्य योगदान दिया है। भारत में महिला सशक्तिकरण और महिला अधिकार के लिए भी उन्होंने आवाज़ उठाई। उन्होंने राज्यस्तर से लेकर छोटे शहरों तक में हर जगह महिलाओं को जागरूक किया। "**सविनय अवज्ञा आंदोलन**" में वे गांधी जी के साथ जेल भी गईं। वर्ष १९४२ के "**भारत छोड़ो आंदोलन**" में भी उन्हें २१ महीने के लिए जेल में रहना पड़ा था और बहुत सारी यातनाएं सहनी पड़ी थीं।

कमला नेहरू भारत के प्रथम प्रधान मंत्री जवाहर लाल नेहरू की पत्नी थीं। वे एक निडर और निष्कपट महिला थीं। वे नेहरू जी के राजनैतिक लक्ष्यों को समझती थीं और उसमे यथाशक्ति मदद भी करती थीं। १९२१ के "**असहयोग आंदोलन**" के साथ वे स्वाधीनता आंदोलन में कूदीं। इस आंदोलन के दौरान उन्होंने इलाहाबाद में महिलाओं का एक समूह गठित किया और विदेशी वस्त्र तथा शराब की बिक्री करने वाली दुकानों का घेराव किया। एक बार जब नेहरू जी को सरकार विरोधी भाषण देने के आरोप में गिरफ्तार किया गया तो कमला नेहरू ने आगे बढ़ कर उस भाषण को पूरा किया।

भारत की महान समाज सुधारक **सावित्री बाई फुले** का जन्म महाराष्ट्र में १८३१ में एक किसान परिवार में हुआ था। सावित्री बाई फुले ने एक पाठशाला की शुरुआत की थी और विधवाओं के लिए एक केंद्र की भी स्थापना की थी। उन्होंने अछूतों के अधिकार के लिए भी संघर्ष किया था। वे आधुनिक शिक्षा प्रणाली की पहली महिला अध्यापिका थीं और उन्होंने आधुनिक मराठी कविता में भी अपना योगदान दिया।

अगर भारत में 'भरत' जैसे वीर बेटे हुए हैं तो साहसी बेटियों का इतिहास भी कुछ कम नहीं है।

मैं परमात्मा से प्रार्थना करती हूँ कि मैं भी बड़े होकर भारत व विश्व कल्याण में अपना योगदान दे सकूँ।

एडिसन हिन्दी पाठशाला

उच्चस्तर-२

भारत

मेरा नाम तनिष्क खेतान है। मैं १३ वर्ष का हूँ। मैं वूद्रो विल्सन मिडिल स्कूल की सातवीं कक्षा में पढ़ता हूँ। मैं न्यू जर्सी में रहता हूँ। मैं एडिसन उच्च स्तर-२ का छात्र हूँ। मुझे नृत्य करने का बहुत शौक है और तैरना भी अच्छा लगता है। मुझे गाना गाना पसंद है और गाना सुनना अच्छा लगता है। मेरे मन पसंद विषय गणित और विज्ञान हैं।

भारत एक उपद्वीप है जो पश्चिम में अरब सागर, दक्षिण में भारतीय महासागर और पूरब में बंगाल की खाड़ी से घिरा हुआ है। भारत ६ देशों से घिरा है: पाकिस्तान, नेपाल, भूटान, बांग्लादेश, बर्मा और चीन। लगभग १.३४ अरब लोगों के साथ भारत दुनिया का दूसरा सबसे अधिक आबादी वाला देश है। भारत देश में बोली जाने वाली २२ मुख्य भाषाओं और उन भाषाओं की ७२० से अधिक बोलियों को मान्यता देता है; वास्तव में, हिंदी दुनिया में स्पेनिश और मंदारिन के बाद तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। भारत को १५ अगस्त १९४७ को अंग्रेजो से आज़ादी मिली थी और २६ जनवरी १९५० को गणतंत्र बना था। भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू और पहले राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद थे। अभी भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी हैं और वर्तमान राष्ट्रपति राम नाथ कोविंद हैं। भारत में २९ राज्य और ७ केंद्र शासित प्रदेश हैं और इसकी राजधानी नई दिल्ली है।

भारत में कई नदियाँ हैं लेकिन कुछ मुख्य हैं: गंगा, सिंधु, यमुना, ब्रह्मपुत्र और गोदावरी। कुंभ मेला आस्था का एक प्रमुख हिंदू तीर्थ है, जिसमें हिंदू नदी में स्नान करने के लिए इकट्ठा होते हैं। ऐसा हर ३ वर्ष में होता है और हर १२ वर्षों में एक ही जगह पर होता है। इस वर्ष इलाहाबाद में प्रयाग कुंभ मेला शुरू हो रहा है। भारत में निम्नलिखित धर्मों के लोग है - हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म, इस्लाम, सिख धर्म, जैन धर्म और ईसाई धर्म।

भारत के भीतर कई खूबसूरत और दिलचस्प पर्वत श्रृंखलाएं हैं। उनमें से कुछ हिमालय, पूर्वांचल श्रेणी और पश्चिमी और पूर्वी घाट हैं। हिमालय पर्वतमाला हिमालय की एक पर्वत श्रृंखला है जो २४०० कि.मी. (१५०० मील) की दूरी तय करती है और भारत, पाकिस्तान, नेपाल और चीन जैसे कुछ देशों से होकर गुजरती है। सबसे ऊंची चोटी माउंट एवरेस्ट (२९०२९ फुट) है और यह पूरी दुनिया की सबसे ऊंची चोटी भी है। हिमालय सिंधु, गंगा और ब्रम्हपुत्र नदियों के लिए भी स्रोत है। अंत में, हिमालय सियाचिन ग्लेशियर का घर है जो ध्रुवों के बाहर सबसे बड़ा ग्लेशियर है।

भारत बहुत सारी आकर्षक और दिलचस्प चीजों को देखने की भी जगह है। कुछ संरचनाएं इंडिया गेट, कुतुब मीनार, लाल किला, ताज महल और बृहदीश्वर मंदिर हैं। बृहदीश्वर मंदिर एक हिन्दू मंदिर है जो तमिलनाडु, भारत में शिव को समर्पित

है। यह भारत के सबसे बड़े मंदिरों में से एक है। लाल किला भारत के दिल्ली शहर में है। यह लगभग २०० वर्षों तक १८५६ तक सभी तरह से मुगल वंश के सम्राटों का मुख्य निवास था। हर १५ अगस्त को भारतीय ध्वज लहराया जाता है।

याद है कि हमने भारत के २२ राज्यों का उल्लेख कैसे किया था? खैर, इन २२ राज्यों को उत्तर, पूर्व, दक्षिण और पश्चिम भारत में विभाजित किया गया है। उत्तर भारत में बहुत गर्म ग्रीष्मकाल के साथ-साथ बहुत ठंडक का अनुभव होता है। जम्मू और काश्मीर के पास की जगहों पर सर्दियों में कई फीट बर्फ का अनुभव होता है। उत्तर भारत सर्वोत्तम समोसे, तंदूरी और अन्य तले हुए खाद्य पदार्थों के लिए जाना जाता है। पश्चिम भारत का वातावरण बहुत शुष्क है और हमेशा १८ डिग्री सेंटीग्रेड से ऊपर रहता है। पश्चिम भारत बेहतरीन चटनी और आचार के लिए जाना जाता है। दक्षिण भारत गर्म जलवायु का क्षेत्र है, लेकिन उतना गर्म नहीं जितना उत्तर भारत में गर्मियों में मिल सकता है। हालांकि तट के पास रहने वाले लोगों को हर समय ताज़ा और ठंडी हवा मिलती है। दक्षिण भारत सर्वोत्तम करी और डोसा के लिए जाना जाता है। अंत में, पूर्वी भारत में पूरे वर्ष ठंड का अनुभव होता है और इसे सबसे अच्छी मिठाइयों के लिए जाना जाता है।

देश का गौरव प्रसिद्ध वीरांगना झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई

नमी जैन

झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई का नाम कौन नहीं जानता। बचपन से ही तलवारबाजी और युद्ध में श्रेष्ठ झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई ने अपने पति के देहांत के बाद झाँसी राज्य की बागडोर संभाली। सन्तान न होने के कारण अंग्रेजी सरकार ने झाँसी को अपने कब्जे में लेना चाहा। परन्तु रानी ने इन्कार कर बुन्देलखण्ड की फौज का नेतृत्व करते हुए क्रांति का ऐलान किया। युद्ध में हारते हुए भी उन्होंने आत्मसमर्पण नहीं किया तथा वहाँ से भागने में कामयाब हुईं। इसके बाद उन्होंने ग्वालियर के युद्ध में आदमी की पोशाक में डट कर लड़ाई करते हुए वीरगति पाई। मेरा मानना है कि आज की हर लड़की को झाँसी की रानी की तरह आत्मसम्मानी बनना होगा और शिक्षा तथा आत्मविश्वास की तलवार ले अपने ऊपर हो रहे अत्याचारों से लड़ना होगा।

स्वतंत्रता दिवस

अन्या बंसल

भारत १५ अगस्त को अपना स्वतंत्रता दिवस मनाता है। १५ अगस्त १९४७ को भारत को ब्रिटिश सरकार के २०० वर्षों के शासन के बाद आज़ादी मिली थी। इस दिन हर वर्ष भारत के प्रधान मंत्री लाल किले पर राष्ट्रीय ध्वज फहराते हैं। हमारे झंडे पर तीन रंगों का अपना महत्व है। नारंगी रंग शक्ति और बलिदान का प्रतीक है, सफेद शांति और सच्चाई को दर्शाता है और हरा रंग दृढ़ संकल्प और गर्व के लिए है। इस दिन पर प्रधान मंत्री राष्ट्र की जनता को संबोधित करते हैं। इस भाषण में प्रधान मंत्री पिछले वर्ष की उपलब्धियों, महत्वपूर्ण मुद्दे और आगामी विकास के बारे में बात करते हैं। वे देश के शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। इस दिन २१ बंदूकों की सलामी दी जाती है। यह एक विशेष परंपरा है। यह दिन पूरे देश में खुशी और उत्साह के साथ मनाया जाता है। लोग पतंग उड़ाते हैं, राष्ट्र गीत गाते हैं और राष्ट्रीय ध्वज को फहराते हैं। यह एक राष्ट्रीय अवकाश है। स्कूलों और कॉलेजों में विभिन्न कार्यक्रम, नाटक और मेले आयोजित किए जाते हैं। छात्र गर्व से राष्ट्रगान गाते हैं।

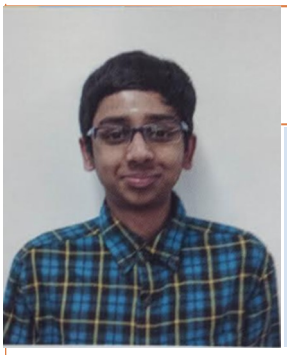

नेहरू की विदेश नीति

मेरा नाम कृष्णा नागराजन है। मैं John P. Stevens High School में पढ़ रहा हूँ। मैं दसवीं कक्षा में पढ़ रहा हूँ। मेरा मन पसंद विषय विज्ञान और गणित है। मैं इतिहास अपने जोश के लिए पढ़ता हूँ। मैं अपनी माता और पिता के साथ एडिसन में रहता हूँ। मुझे अन्य भाषाएँ सीखना पसंद है।

भारत के प्रथम प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू थे। उनका जन्म नवंबर १४, १८८९ को हुआ। हम सब जानते हैं कि उनका जन्मदिन भारत में बाल -दिवस के नाम से मनाया जाता है। वे एक स्वतंत्रता सेनानी भी थे। गाँधीजी ने सबसे पहले भारत के प्रथम प्रधान मंत्री के पद के लिए नेहरू जी को चुना। राजनीतिक विचारों में गाँधीजी और नेहरू अलग थे। नेहरू धर्म निरपेक्ष थे और गाँधीजी परंपरावादी थे। नेहरू ने "मॉडर्न इंडिया" की कल्पना की। उन्होंने आधुनिक विचारों और सोचने के तरीकों को भारत में लाने कि कोशिश की। १९४७ तक अन्य राष्ट्रों ने बहुत प्रगति की थी। इसलिए नेहरू ने भारत में आधुनिक वैज्ञानिक खोज और प्रौद्योगिकीय विकास पर ज़ोर दिया।

तटस्थतावाद (Neutralism) और अंटीकोलोनिअलिस्म (Anti-colonialism)

शीत युद्ध (कोल्ड वॉर) के समय साम्यवाद (Communism) से स्वतंत्रता पाने के लिए हंगरी ने अक्टूबर १९५६ में कोशिश की। एक नया राष्ट्र होने के कारण भारत ने तटस्थतावाद (adiaphorism) चुना, और हंगरी के विरोध के समय संयुक्त राष्ट्र (UN) में भारत ने सोवियत यूनियन को समर्थन दिया। इस के कारण १९५६ के बाद तटस्थतावाद रखने में नेहरू को कठिनाई हुई। उसके बाद नेहरू अंटीकोलोनिअलिस्म की तरफ मुड़ गए। बांडुंग कांफ्रेंस एक कांफ्रेंस है जहाँ पर भारत, पाकिस्तान, म्यांमार और सीलोन मिले और कोलोनियलस्म पर अपना विरोध प्रकट किया। इस कांफ्रेंस में नेहरू ने अपने प्रसिद्ध पंचशील विचार का प्रस्ताव रखा। इससे अंटीकोलोनिअलिस्म, भारत की विदेशी नीति हो गयी। १९६२ में चीन और भारत के युद्ध के समय तटस्थतावाद पूरी तरह से बिखर गया। चीन और भारत के बीच अरुणाचल प्रदेश की सीमा के बारे में विवाद था। १९६२ में चीन ने भारत पर आक्रमण करने की धमकी दी। नेहरू ने पश्चिमी देशों से मदद माँगी ताकि चीन अपनी फौज को वापस ले ले। उस समय से भारत ने तटस्थतावाद को छोड़ दिया।

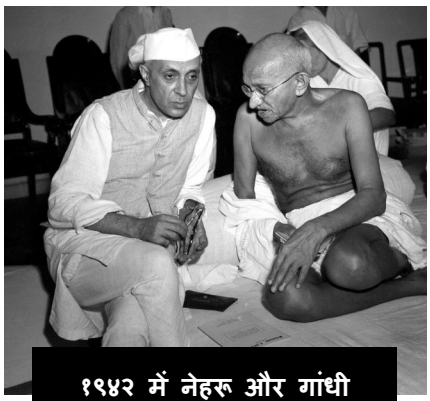

१९४२ में नेहरू और गांधी

गोवा: पुर्तगाल से आजादी:

अंग्रेज भारत से चले गए लेकिन पुर्तगाल गोवा पर राज कर रहा था। गोवा को आजाद करने के लिए अहिंसा का संघर्ष चल रहा था। नेहरू पुर्तगाल से गोवा की आजादी की बातचीत कर रहे थे। जब बातचीत सफल नहीं हुई तो १९६१ में नेहरू ने भारतीय सेना को भेजकर गोवा को आजाद किया। कुछ विफलताओं के बावजूद इसमें कोई संदेह नहीं है कि नेहरू एक सफल प्रधान मंत्री थे। उन्होंने भारत को सिखाया कि दूसरों देशों पर भी नजर रखनी चाहिए।

आधुनिक भारत के जनक राजा राम मोहन राय

ध्रुव आयंगर

राजा राम मोहन राय एक समाज सुधारक थे। उनका जन्म एक कट्टर वैष्णव परिवार में हुआ था। १५ वर्ष की छोटी उम्र में किताब लिख कर मूर्ति पूजा का विरोध किया। वे अंधविश्वासों और कुरीतियों के विरुद्ध थे। उनका विवाह बचपन में ही कर दिया गया था इसलिए वे बाल विवाह के खिलाफ थे। भाई की मौत के बाद उनकी भाभी को सती कर दिया गया था। इस घटना ने उन्हें सती प्रथा के खिलाफ आवाज बुलंद करने की ताकत दी और इस आन्दोलन में वे सफल भी हुए। उन्होंने न केवल सती प्रथा को रोका बल्कि विधवा विवाह का भी समर्थन भी किया। उन्होंने महिलाओं की स्वतंत्रता व महिलाओं की शिक्षा की वकालत करते हुए ब्रिटिश कानून में परिवर्तन लाने के लिए अंग्रेजी सरकार को मजबूर कर दिया। उनको राजा का खिताब अकबर द्वितीय ने दिया था। आज भी उनका नाम भारतीय इतिहास के स्वर्णिम पन्नों में अंकित है।

भारतीय इतिहास

हर्ष चोकशी

भारत एक रहस्यमय देश है जिसमें कई आकर्षक और असाधारण स्मारक हैं। हम में से बहुत से लोग भारत के बारे में सही जानते हैं, लेकिन यह सब कैसे शुरू हुआ? भारत कहाँ से शुरू हुआ और इसकी उत्पत्ति क्या है? इतिहासकारों और पुरातत्वविदों का मानना है कि सिंधु घाटी की मानव प्रगति लगभग ३००० ईसा पूर्व शुरू हुई थी। प्राचीन भारत और मेसोपोटामिया के बीच विनिमय का प्रमाण ३२०० ईसा पूर्व के रूप में समय पर सही है। यह एक अन्य प्रमाण प्राचीन भारत का प्रस्ताव करता है जो अन्य प्रारंभिक नागरिक प्रतिष्ठानों की तुलना में एक बड़े मार्ग का आदान-प्रदान करता है। वैदिक विकास भारत की अब तक की सबसे अधिक मानवीय प्रगति है। पुराने भारतीय इतिहास के इस समय को वैदिक युग के रूप में जाना जाता है, क्योंकि इसे सबसे अधिक भारतीय रचनाओं में चित्रित किया गया था, जिसे वेद कहा जाता है। इस अवधि में भारतीय उप महाद्वीप में शहरी मानव उन्नति और इसके साथ एक शिक्षित संस्कृति का पुनरुत्थान हुआ। भारत का नाम वेदों के नाम पर रखा गया है, जो हिंदूओं का प्रारंभिक लेखन है। वैदिक सभ्यता सरस्वती नदी के साथ संपन्न हुई, एक ऐसे स्थान पर, जिसमें वर्तमान में हरियाणा और पंजाब की अत्याधुनिक क्षेत्र सम्मिलित हैं।

भारत का इतिहास – कुछ वाक्यों में

भूमी पाटणी

भारत का इतिहास बहुत बड़ा है। भारत में कई विविध संस्कृतियां शामिल हैं। भारत बहुत विकसित सभ्यता थी। भारत का इतिहास सिंधु घाटी सभ्यता और आर्यों के जन्म के साथ शुरू होता है। वैदिक काल में हिंदू धर्म आ गया था। फिर अशोक राजा बना और बौद्ध धर्म में परिवर्तित हो गया जो एशिया के कई हिस्सों में फैल गया था। आठवीं शताब्दी में इस्लाम भारत में आया था। ग्यारहवीं शताब्दी तक वे एक राजनीतिक ताकत बन गए थे। वे मुगल साम्राज्य स्थापित करने में सफल हो गए थे। सत्रहवीं शताब्दी में अंग्रेज भारत आए थे। भारत में लंबे समय तक उनका वर्चस्व था। भारत ने स्वतंत्रता के लिए लंबे समय तक संघर्ष करने के बाद १९४७ में इसे हासिल कर ली।

बादल गुप्ता का जीवन

मेरा नाम दिया जयदेवन है। मैं हिंदी कक्षा में उच्चतर-२ स्तर पर हूं। मैं चौदह वर्ष की हूँ। मैं एडिसन में रहती हूं। मैं जे. पी. स्टीवंस हाई स्कूल में पढ़ती हूँ। मुझे पढ़ना और चित्रकारी करना पसंद है। मैं नौवीं कक्षा में पढ़ती हूँ।

बादल गुप्ता एक बंगाली भारतीय स्वतंत्रता सेनानी और क्रांतिकारी थे। उनका जन्म बांग्लादेश के पुरबा शिमुलिया गाँव में हुआ था। स्कूल में मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद उन्होंने सर सलीमुल्लाह मेडिकल कॉलेज (तत्कालीन मिटफोर्ड मेडिकल स्कूल) में दाखिला लिया। ढाका स्थित क्रांतिकारी हेमचंद्र घोष से प्रभावित होकर बेनोय मुक्ति संघ 'में शामिल हो गए, जो एक क्रांतिकारी समाज है, जो क्रांतिकारी जुगंटार पार्टी से जुड़ा था, साथ ही साथ बंगाल स्वयंसेवक भी। इस प्रकार बंगाल के स्वयंसेवकों ने कुख्यात ब्रिटिश अधिकारियों को नष्ट करने की अपनी खोज को आगे बढ़ाया। गुप्ता ने मिदनापुर में समय बिताया और स्थानीय क्रांतिकारियों को बन्दूक के उपयोग में प्रशिक्षित किया। 'ऑपरेशन फ्रीडम' ने १९३० में विभिन्न बंगाली जेलों में पुलिस दमन का विरोध किया। अगस्त १९३० में समूह ने पुलिस महानिरीक्षक लॉमैन को निष्पादित करने की योजना बनाई। बंगाल के स्वयंसेवकों में से एक ने ढाका के मेडिकल स्कूल अस्पताल में उसे गोली मार दी और फिर कोलकाता भाग गया। बादल ने बेनोय कृष्ण बसु और दिनेश चंद्र गुप्ता के साथ कोलकाता के डलहौजी स्क्वायर में राइटर्स बिल्डिंग पर एक सशस्त्र हमला किया। यह कोलकता में था और थॉमस लियोन द्वारा १७७७ में बनाया गया था। गुप्ता ने जेल के इंस्पेक्टर जनरल, एन.एस.सिम्पसन को मार डाला। पुलिस आई लेकिन फिर भी तीनों को गिरफ्तार करने की इच्छा नहीं हुई। बादल ने पोटेशियम साइनाइड लिया, जबकि बेनॉय और दिनेश ने अपने ही रिवाल्वर से खुद को गोली मार ली। बादल की मौके पर ही मौत हो गई। इस घटना ने बंगाल में, विशेष रूप से और भारत में, सामान्य रूप से आगे की क्रांतिकारी गतिविधियों को प्रेरित किया। स्वतंत्रता के बाद वर्ग का नाम बी.बी.डी. बाग - बेनोय-बादल-दिनेश तिकड़ी रखा गया।

तीन निडर देशभक्त

रमा देशपांडे

तीन निडर बहादुर देशभक्तों की कहानी जो इतिहास के पन्नों में न जाने कहाँ दबकर खो गई। ये तीन देशभक्त थे बादल गुप्ता, बिनोय बासु और दिनेश गुप्ता। दिसम्बर आठ उन्नीस सौ तीस, कलकत्ता के राइटर्स बिल्डिंग में रोज की तरह काम चल रहा था कि वहाँ की शांति को इन तीन मतवालों ने इस तरह झकझोर दिया कि उनकी गूंज युगों युगों तक सुनाई पड़ेगी। तीनों यूवक यूरोपियन कपड़ों में भरी हुई बंदूक लेकर बिल्डिंग में दाखिल हुए और कुख्यात इंस्पेक्टर जरनल आफ पुलिस, कर्नल एन. एस. सिम्पसन (जो राजनैतिक कैदियों पर जुल्म करने के लिए मशहूर था), की गोरी मार कर हत्या कर दी। तीनों समर्पण करने को तैयार नहीं थे इसलिए बादल ने सायनाइड खाकर मात्र बाईस वर्ष की आयु में मौत को गले लगा लिया। बिनोय तथा दिनेश ने खुद को गोली मार कर मौत को दावत दी, परन्तु पाँच दिन के बाद केवल बाईस वर्ष की उम्र में बिनोय ने अस्पताल में आखिरी सांस ली। केवल दिनेश गोली खाकर भी बच गया और उन्नीस वर्ष के इस युवक को अंग्रेजी सरकार ने फांसी की सजा दे दी। ऐसे जाबांज देशभक्तों को हम नमन करते हैं।

नाथूराम गोडसे एक देशभक्त या देशद्रोही

क्रिश पटेल

नाथूराम विनायक गोडसे एक कट्टर हिन्दू समर्थक थे जिन्होंने ३० जनवरी १९४८ को महात्मा गांधी की गोली मारकर हत्या कर दी थी। नाथूराम गोडसे का जन्म १९ मई १९१० को भारत के महाराष्ट्र राज्य में पुणे के पास बारामती नामक स्थान में चित्तपावन मराठी परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम विनायक वामनराव गोडसे और माता का नाम लक्ष्मी गोडसे था। नाथूराम का जन्म का नाम रामचंद्र था। गोडसे राष्ट्रीय सेवक संघ के सदस्य थे। गोडसे का मानना था कि भारत विभाजन के समय गाँधी जी ने मुसलमानों का साथ दिया था, जबकि हिन्दुओं पर हो रहे अत्याचारों को उन्होंने अनदेखा कर दिया। गोडसे ने नारायण आप्टे तथा ६ और लोगों के साथ मिलकर गांधी जी की हत्या की योजना बनाई थी। एक वर्ष से अधिक चले मुकदमे के बाद ८ नवम्बर १९४९ को उन्हें मृत्युदंड दिया गया था। मेरे विचार में नाथूराम गोडसे व गांधी जी दोनों ही उस समय हो रही अमानवीयता के कारण बहुत दुखी थे और नाथूराम गोडसे ने गांधी जी की हत्या हर तरफ हो रहे दर्दनाक अत्याचारों के कारण भावनात्मक तनाव के कारण की होगी। वे सच्चे व्यक्ति थे परन्तु उनका कार्य गलत था।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम

आदित्य शहानी

नमस्ते, मेरा नाम आदित्य शहानी है। मैं १४ वर्ष का हूँ। मैं एडिसन हिंदी पाठशाला में पढ़ता हूँ। मैं उच्चस्तर-२ में पढ़ता हूँ। मुझे पढ़ना बहुत पसंद है और कभी-कभी मैं कहानी लिखता हूँ। मेरा मन पसंद विषय इतिहास है। आज मैं भारत के इतिहास पर बात करूँगा।

भारत के इतिहास में बहुत सारी मुख्य घटनाएँ हैं, पर एक घटना है जहाँ भारत एक देश बना है। यह घटना भारत की स्वतंत्रता की है। भारत की स्वतंत्रता देश की सबसे मुख्य घटना है। १९४७ के पूर्व ब्रिटेन भारत पर राज करता था। इस समय में ब्रिटेन एक साम्राज्य था और ब्रिटेन के राजा जॉर्ज VI थे। भारत के लोगों को ब्रिटेन से अलग होना था। भारतीयों को स्वतंत्रता चाहिए थी क्योंकि वे स्वराज (स्वयं राज करना) चाहते थे। महात्मा गांधी जी एक स्वतंत्रता सेनानी थे जिन्होंने भारत की स्वतंत्रता आंदोलन को आगे बढ़ाया। वे अहिंसा से ब्रिटिश से लड़े थे और दूसरे स्वतंत्रता सेनानियों के लिए प्रेरणा बन गए। गांधीजी और उनके साथ भारतीयों ने विरोध किया तो ब्रिटेन ने भारत को आजादी दी।

जब भारत विरोध कर रहा था, उस समय दूसरा विश्व युद्ध चल रहा था और ब्रिटेन उस युद्ध में लड़ रहा था। इस युद्ध से ब्रिटेन बहुत कमजोर हो गया और भारत पर राज नहीं कर सका, इसीलिए अंग्रेज भारत से चले गए। १५ अगस्त १९४७ को भारत एक स्वतंत्र देश बन गया। तीन वर्ष बाद भारत एक गणतंत्र बन गया। अतः भारत के लोग अपने विचार से सरकार और देश को चला सकते हैं।

कबीर

मेरा नाम हर्ष नाइक है। मैं जे.पी. स्टीवंस हाई स्कूल एडिसन, न्यू जर्सी में ग्यारहवीं का छात्र हूं। मुझे अपने दोस्तों के साथ तैरना और बाहर जाना पसंद है।

कबीर १५वीं सदी के भारतीय कवि और संत थे। कबीर का जन्म कब हुआ था यह तो नहीं पता लेकिन लगता है कि यह १३९८ में था। कबीर पढ़े-लिखे नहीं थे। उन्होंने अपनी किताबें नहीं लिखीं, दूसरों ने उनके भाषण से पुस्तकें लिखीं। यह "बीजक" पुस्तक बन गई जिसमें तीन भाग थे। पहले को "सखी" कहा जाता था। कबीर की अधिकांश शिक्षाएँ यही थीं। दूसरे को "सबद" कहा जाता था। यह कबीर के प्रेम और अन्य प्रथाओं के बारे में एक कविता थी। तीसरे को "रमानी" कहा जाता है। यह एक कविता में कबीर के दर्शन और विचारों को दर्शाता है। कबीर ने हिंदुत्व और इस्लाम की आलोचना की। वे अंधविश्वास और सामाजिक बुराइयों के खिलाफ थे। उन्होंने कहा कि एक ही भगवान है और वे अनुष्ठान पसंद नहीं करते थे। उन्होंने ईद और दीवाली जैसी छुट्टियां नहीं मनाईं। आज कबीर हिन्दुओं और मुस्लिमों की एकजुटता की तरह दिखते हैं। सिखों के लिए वे धर्म के संस्थापक नानक से पहले आते हैं। मुसलमानों के लिए वे एक सूफी हैं। हिंदुओं के लिए वे वैष्णव हैं।

महात्मा गांधी

लक्ष्य गौर

महात्मा गांधी भारतीय इतिहास में एक महान नेता थे। वे एक महान व्यक्ति थे जो अहिंसा में विश्वास करते थे। उन्होंने भारतीयों को अंग्रेजों के खिलाफ आवाज उठाने की प्रेरणा दी। आज भी लोग उन्हें उनके महान और अतुल्य कार्यों के लिए याद करते हैं। उन्होंने काफी अभियानों की शुरुआत की जैसे १९२० में असहयोग आन्दोलन, १९३० में अवज्ञा अभियान और १९४२ में भारत छोड़ो आंदोलन और उनके द्वारा किए गये ये सभी आन्दोलन भारत को आज़ादी दिलाने में कारगर साबित हुए। उनके द्वारा किए गये संघर्षों की बदौलत भारत को ब्रिटिश राज से आज़ादी मिल ही गयी। महात्मा गांधी का देश के लिए किया गया अहिंसात्मक संघर्ष कभी भुलाया नहीं जा सकता। उनकी याद में हम ३० जनवरी को शहीद दिवस के रूप में मनाते हैं। मार्टिन लूथर किंग ने महात्मा गांधी से प्रेरणा लेकर अमेरिका में आंदोलन किया था।

१९३० में दांडी यात्रा पर जाते हुए गांधी जी

भारत का इतिहास

अर्चिशा शर्मा

भारत सदियों से धर्म, जीवन पद्धति और परंपराओं के साथ एक बहुत ही सुंदर देश है। इस पारंपरिक जगह का इतिहास ३३०० ईसा पूर्व में इंडस घाटी में शुरू होता है, जहां पहली सभ्यता ने जन्म लिया। भारत का कांस्य युग ऐसा समय था जब अन्य धर्मों के लोग भारत की भूमि पर दावा करने आए थे। यह युग १५०० ईसा पूर्व के आसपास था। कांस्य युग के बाद, लौह युग (जैसे वैदिक काल) एक और बहुत महत्वपूर्ण समय अवधि था। भारतीय इतिहास का यह वह हिस्सा था जब लोग देवताओं की पूजा करने लगे थे। हिन्दू देवता भारतीय कटुता, धार्मिकता का एक बड़ा हिस्सा हैं, और भारत को एक बहुत ही धार्मिक देश मानते हैं। छुट्टियों और शिक्षा के साथ इन परंपराओं ने हमें नहीं छोड़ा है। हम अभी भी भगवान, परंपराओं और पवित्र पुस्तकों में विश्वास करते हैं। इस समय सबसे महत्वपूर्ण पुस्तकों में से एक है जिसे गीता कहा जाता है। यह पुस्तक स्वयं भगवान (कृष्ण) और अर्जुन के बीच हुई बातचीत के बारे में है। इसके साथ गीता में कई अन्य पाठ भी पढ़ाये जाते हैं। एक अच्छे जीवन को कैसे जीना चाहिए, यह दिखाने के लिए उस समय कई महाकाव्य और कहानियां लिखी गई थीं।

बाद में भारत के इतिहास में देश में कई धर्मों और संस्कृतियों का बड़ा प्रभाव था। उदाहरण के लिए, बुद्धवाद, तमिल साहित्य, संगट काल इत्यादि। इन संस्कृतियों और धर्मों ने भारत को आज आकार दिया है। व्यापार को अन्य स्थानों जैसे चीन, यूरोप, या भारत के निकट स्थान द्वारा लाया गया था। इसके बाद, गुप्त साम्राज्य भारत के इतिहास में एक बड़ी सफलता थी कि लोग इसे "स्वर्ण युग" भी कहते हैं। इस समयावधि में लोग विज्ञान, गणित, तकनीक आदि से जुड़ गए। वे धर्म के अलावा विभिन्न चीजों से आकर्षित हुए। गुप्त साम्राज्य के दौरान भारतीयों ने क्षेत्र का दावा करना शुरू कर दिया था जो जल्द ही राज्यों में बनाया जाएगा।

गुप्त वंश के अंत के बाद फिर से विभिन्न धर्मों और संस्कृतियों को भारत में लाया गया। विभिन्न प्रकार की भाषाएं बनाई गईं। एक धर्म था इस्लाम। इस्लामिक धर्म को भारत में लाया गया। धर्म ने भारत के अधिकांश हिस्सों को अपने कब्ज़े में ले लिया और अधिकांश स्मारक भारत पर इस्लामी प्रभाव के समय से हैं। जब इस्लामिक धर्म भारत में था, मराठा साम्राज्य का विस्तार हुआ। इसने अधिकांश भारत पर अधिकार कर लिया। ब्रिटेन भारत में सबसे शक्तिशाली साम्राज्यों में से था। भारत में सिख साम्राज्य भी एक बहुत प्रभावशाली साम्राज्य था। इन सब के बाद कई अन्य देश भारत पर अधिकार करने की कोशिश करने लगे। भारत और ब्रिटेन के बीच युद्ध हुआ और भारत ने शांति के लिए लड़ाई लड़ी। ब्रिटेन ने भारत को विभाजित किया और पाकिस्तान बनाया। १५ अगस्त, १९४७ को भारत ब्रिटेन से मुक्त हो गया। महात्मा गांधी जैसे नेताओं को उनकी सेवा के लिए बहुत सराहना मिली।

"इतिहास में कभी भी विचार-विमर्श से कोई ठोस परिवर्तन नहीं हासिल किया गया है"

सुभाष चन्द्र बोस

स्टैमफोर्ड – उच्चस्तर-१

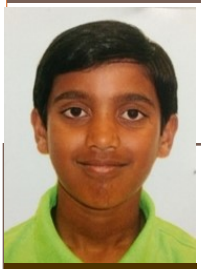

रोहन साहू

कोणार्क सूर्य मंदिर

कोणार्क सूर्य मंदिर ओडिशा के कोणार्क में स्थित है। यह मंदिर तेरहवीं शताब्दी के दौरान गंगा वंश द्वारा बनाया गया था। राजा नरसिंहदेव ने मुस्लिमों पर अपनी सेना की जीत का जश्न मनाने के लिए मंदिर का निर्माण किया। मैंने इस मंदिर को अपने जीवन में देखा है, जब मैं ओडिशा गया था। मंदिर बहुत सुंदर है। मंदिर सूर्य भगवान पर केंद्रित है क्योंकि राजा नरसिंहदेव सूर्य भगवान की पूजा करते थे। यह क्षेत्र विभिन्न लोगों की बहुत विस्तृत नक्काशी से भरा हुआ है। मुख्य मंदिर के आसपास कई वनस्पति उद्यान भी हैं। ये उद्यान विभिन्न फूलों और पौधों से भरे हुए हैं। साथ ही, मंदिर के सामने कई मूर्तियां हैं। इनमें से ज्यादातर मूर्तियां शेर, हाथी और अन्य जानवरों की हैं। विभिन्न नक्काशी के पहिए मंदिर में अधिकांश दीवारों को भर देते हैं। वहाँ का मुख्य आकर्षण मुख्य मंदिर है। यह एक विशाल मंदिर है जिसके शीर्ष पर छोटे-छोटे शेरों की मूर्तियां हैं। कहा जाता है कि मंदिर के शीर्ष पर ५२ टन वजन का एक चुंबक हुआ करता था। चूंकि मूर्ति में लोहे की बहुत सारी सामग्री थी, इसलिए सूर्य देव हवा में तैर रहे थे। मंदिर को इस तरह से आवंटित किया गया था कि सूर्य की पहली किरण हवा में तैरती हुई सूर्य देवता की मूर्ति के मुकुट पर रखे हीरे को दर्शाएगी।

कुछ के अनुसार, मंदिर को पंद्रहवीं शताब्दी के दौरान एक मुस्लिम यवन सेना ने नष्ट कर दिया था। अन्य स्रोतों ने अठारहवीं शताब्दी की शुरुआत में जहांगीर के शासन काल के दौरान मुगलों पर मंदिर के विनाश का दोष लगाया। मंदिर को किसी भी स्थिति में छोड़ दिया गया और मंदिर रेत के नीचे दब गया। यह केवल उन्नीसवीं शताब्दी/ बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में मंदिर के अवशेषों की खुदाई और फिर ब्रिटिश पुरातत्वविदों द्वारा बहाल किया गया था। यह अब एक यूनेस्को धरोहर है।

आर्यन माहेश्वरी

लोटस मंदिर

दो हजार अठारह की सर्दियों में मैं और मेरा परिवार भारत गया। हमने एक आकर्षक लोटस टेंपल देखा। यह दिल्ली में स्थित एक बहु-पूजा गृह है, जो दिसंबर १९८६ में दस मिलियन डॉलर की लागत से बना था। यह दुनिया में सबसे अधिक देखी जाने वाली इमारतों में से एक है। इसे फारिबोरज़ साहब ने बनवाया था। २७ संगमरमर की पंखुड़ियों से बने मंदिर में नौ भुजाएँ हैं, जिन्हें तीन समूहों में व्यवस्थित किया गया है। नौ दरवाजे एक केंद्रीय प्रार्थना कक्ष का नेतृत्व करते हैं, जिसमें २५०० लोगों के बैठने की क्षमता है और यह लगभग ४० मीटर ऊंचा है। बहाई शास्त्र के अनुसार हाउस ऑफ उपासना के अंदर कोई चित्र और प्रतिमा नहीं हो सकती है।

वदान्य पालीवाल

वेद

वेद प्राचीन भारत के सबसे पुराने ग्रंथ हैं। वेद संस्कृत में रचित हैं और हिन्दू धर्म के सबसे महत्वपूर्ण ग्रंथ हैं।

महाभारत में वेद के निर्माण का श्रेय भगवान् ब्रम्हा को दिया गया है लेकिन माना जाता है कि वेद ऋषि मुनियों द्वारा लिखे गए हैं। परंपरा के अनुसार व्यास ने वेद के मंत्रों को चार संहिता में विभाजित किया था। उन्हें कभी-कभी वेद व्यास ("वेदों को वर्गीकृत करने वाला") भी कहा जाता है। उन्हें “महाभारत” का लेखक भी माना जाता है। गुरु पूर्णिमा का त्यौहार उन्हें समर्पित है। इसे व्यास पूर्णिमा के रूप में भी जाना जाता है, क्योंकि यह दिन उनके जन्मदिन और वेदों को विभाजित करने वाले दिन के रूप में माना जाता है।

चार वेद हैं: ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। प्रत्येक वेद को चार प्रमुख प्रकारों में वर्गीकृत किया गया है:

१. संहिता (मंत्र और सूत्र)
२. अरण्यक (अनुष्ठानों, समारोहों, बलिदानों और प्रतीकात्मक-बलिदानों पर पाठ)
३. ब्राह्मण (अनुष्ठानों, समारोहों और बलिदानों पर टिप्पणी)
४. उपनिषद (ध्यान, दर्शन और आध्यात्मिक ज्ञान पर चर्चा करने वाले ग्रंथ)
५. कुछ विद्वान पाँचवीं श्रेणी को जोड़ते हैं - उपासना

अठारहवें हिंदी महोत्सव के लिए मेरी शुभकामनाएँ!

एडिसन टाउनशिप काउंसिलमैन अजय पाटिल

LITTLE SPRING MONTESSORI ACADEMY

We believe that all children are very unique and special in their own way. We promote social, intellectual, physical, and emotional development.

Circle Time - Read Aloud - Art and Craft - Gross Motor Skills
Fine Motor Skills - Cooperative Learning - Dramatic Play

Core values and goals: Independence, Leadership, Integrity, Responsibility, Diversity, Citizenship, Critical thinking, Creativity, Communication, Collaboration and Confidence

We offer Before School, After School and homework support.

1460 Livingston Ave, Bldg. 400, North Brunswick, NJ 08902
Phone # (908) 818-9668 or (732) 640-1588
www.littlespringmontessori.com – littlespringacademy@gmail.com

आमेर किला - ऐतिहासिक स्थल की यात्रा

ऐशानी वालिया

मेरा नाम ऐशानी वालिया है और मैं ११ वर्ष की हूँ। हिंदी पाठशाला में मैं मध्यमा-३ कक्षा में पढ़ती हूँ और मैं छठीं कक्षा में हूँ। मेरे कुछ मुख्य शौक ड्राइंग, रीडिंग, बेकिंग और टेनिस खेलना है।

मैं हर तीन वर्ष में एक बार भारत जाती हूं। पिछली बार जब मैं गई थी तब मैं सात वर्ष की थी। मैं और मेरा परिवार दिल्ली में हमारे चचेरे भाइयों से मिलने गए थे। हमारी यह यात्रा बहुत रोमांचक रही। हम जिन ऐतिहासिक स्थानों पर गए उनमें से एक आमेर किला था - जिसे अंबर पैलेस के नाम से भी जाना जाता है। आमेर किले का रंग और बनावट बहुत सुन्दर हैं। इस किले में हरे रंग के बिंदु, पीले आकार और लाल रेखाएँ थीं। हम प्रवेश द्वार से चले और खोजबीन शुरू की। हमने अद्भुत नक्काशियों को देखा जो क्रीम रंग के स्तंभों में अंकित थीं। स्तंभों के शीर्ष को सुंदर आकृतियों और डिजाइनों में उकेरा गया था। आगे, हमने सुंदर बगीचा देखा। बगीचे के बीच में झाड़ी जैसा एक सितारा है जिसके बीच में एक फव्वारा है। झाड़ी जैसा तारा वर्ग, त्रिकोण और अन्य आकार की झाड़ियों से घिरा हुआ है। आमेर किले के एक तरफ एक नीली हरी झील है। इस झील को माथा झील कहा जाता है। आमेर किले में हमने बहुत अच्छा समय व्यतीत किया और मुझे उम्मीद है कि आपको भी किसी दिन इसे देखने का अवसर मिलेगा।

झाँसी की रानी – भारतीय इतिहास का एक हिस्सा

तनिशा मित्रा

सन् १८५७ में झाँसी की आज़ादी का युद्ध शुरू हो गया था। उमसे सैकड़ों सिपाही लड़े थे। उन में एक सिपाही झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई थीं। उन्होंने अपने नवजात शिशु को पीठ पर बंद कर यह लड़ाई लड़ी। लक्ष्मीबाई झाँसी के महराजा से विवाह करने के बाद झाँसी की महारानी बनी। जब लक्ष्मीबाई गर्भवती थीं तभी झाँसी के राजा की मृत्यु हो गयी इसलिये रानी लक्ष्मीबाई को झाँसी का ताज पहनना पड़ा। जब फिरंगी भारत पर कब्ज़ा करने आये तब लक्ष्मीबाई बोलीं "मैं झाँसी की रानी हूँ और ये प्रण लती हूँ की मैं झाँसी की रक्षा करूंगी"। इसके बाद झाँसी की सेना और रानी लक्ष्मीबाई ने आज़ादी के लिये युद्ध प्रारंभ किया। हर जगह से रक्त की गंध और बंदूकों की आवाज़ आ रही थी। दो सप्ताह के कठिन युद्ध के बाद दुर्भाग्यवश अंग्रेजों की सेना ने झाँसी की सेना को पराजित कर दिया और रानी लक्ष्मीबाई को युद्ध का मैदान छोड़ना पड़ा। अंग्रेजों की सेना ने रानी लक्ष्मीबाई का पीछा किया और उनपर हमला कर दिया। रानी लक्ष्मीबाई बहुत बहादुरी के साथ लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुईं। वह अपने पीछे कभी न मरने वाली विरासत छोड़ गयीं। इतिहास के अनुसार रानी लक्ष्मीबाई सबसे बहादुर योद्धाओं में एक थीं।

कत्थक - एक परंपरा

अनुशा गुप्ता

मैं पिछले ६ वर्षों से कत्थक सीख रही हूँ। कत्थक उत्तर भारत का मुख्य शास्त्रीय नृत्य है। कत्थक की उत्पत्ति भगवान कृष्ण की रास लीला नृत्य से हुई, इसलिए कत्थक को नटवारी नृत्य भी कहा जाता है। हज़ारों वर्षों तक कथाकार हिन्दू पौराणिक कथाओं का वर्णन नृत्य और संगीत के द्वारा करते रहे और फिर जल्दी ही यह कला का एक रूप बन गया। समय के साथ साथ कत्थक में बहुत परिवर्तन आये। भक्ति काल में कत्थक मुख्यतयः कृष्ण लीला पर केंद्रित रहा। मुग़लों के समय में कत्थक राज दरबार का एक प्रमुख अंग बना। मुग़ल राजाओं ने कत्थक को बहुत सराहा और बढ़ावा दिया। बाकि कलाओं की तरह कत्थक भी मुग़ल समाज से प्रभवित हुआ - कत्थक में तेज चक्कर और तत्कार जुड़ गए।

१९वीं शताब्दी कत्थक का सबसे पिछड़ा समय था - अंग्रेज़ जब भारत आये तो उन्होंने कत्थक नर्तकों पर दबाव डाला कि वे कत्थक को हिन्दु धर्म से अलग कर के ईसा मसीह के बारे में कथा कहें। जिन नर्तकों ने अंग्रेज़ों की बात नहीं मानी, उन्हें नौकरियों से निकाल दिया गया और उनका सामाजिक बहिष्कार कर दिया गया। नवाब वाजिद अली शाह और अन्य कई लोगों ने अंग्रेज़ों को कत्थक को मिटाने नहीं दिया। आज़ादी के बाद अनेक कत्थक गुरुओं के प्रयास से आज कत्थक अपनी खोयी हुई गरिमा को वापस पा रहा है। कत्थक से मुझे नृत्य के अलावा बहुत कुछ सीखने को मिला है। भारतीय सभ्यता और इतिहास से मेरी एक नई पहचान हुई। कत्थक में मैंने अलग अलग नृत्यों में भगवान शिव, कृष्ण-राधा, श्रीराम-सीता के किरदार निभाए जिनके द्वारा हिन्दू धार्मिक कथाओं को सीखा। बचपन से मैंने रानी लक्ष्मी बाई का नाम कई बार सुना था। वे मेरे लिए बस एक स्वतंत्रता सैनानी थीं - परन्तु जब मैंने मंच पर झाँसी की रानी नृत्य नाटिका में भाग लिया तब मैंने उनके बारे में और अच्छे से जाना और उनकी कहानियों को विस्तार से समझा ताकि मैं मंच पर यह नृत्य सही भाव के साथ कर सकूँ। ऐसा अनुभव मैंने पहले कभी नहीं किया था।

पिछले वर्ष दिसंबर में मुझे और मेरी सहेलियों को हमारी गुरु श्रीमती देबजानी जी के साथ कोलकाता, भारत में नृत्य करने का मौका मिला। यह मेरे लिए एक बहुत ही यादगार यात्रा थी। वहाँ भारतीय और विदेश के कई प्रसिद्ध नृत्यकारों ने अपने कत्थक नृत्य प्रस्तुत किये। कत्थक के लिए उनकी लगन, उनका उत्साह और मंच पर उनका आत्मविश्वास देखकर मैं बहुत प्रभावित हुई। मैं भी अपने जीवन में यह आत्मविश्वास लाना चाहती हूँ जिससे मुझे भविष्य में हर जगह मदद मिलेगी। कत्थक ने मुझे एक अनुशासन सिखाया है। गुरु शिष्य परंपरा से मैंने गुरु और शिक्षा का आदर करना सीखा है। मुझे गर्व है कि अमेरिका में रह कर भी मैं भारतीय संस्कृति और परंपरा से जुड़ी हूँ।

भारत की आज़ादी

गौरी भाटिया

मेरा नाम गौरी भाटिया है। मैं उच्चस्तर-२ की छात्रा हूँ। मुझे हिंदी भाषा सीखने में विशेष रुचि है क्योंकि हिंदी मुझे हिन्दू संस्कृति, सभ्यता एवं परिवार जनों से जुड़ने का अवसर प्रदान करती है। मुझे नृत्य कला, पुस्तकें पढ़ने और संगीत सुनने में भी अत्यधिक रुचि है।

सोने की चिड़िया कहलाने वाले भारत ने
एक दिन जब खुद को
अंग्रेजी के तमंचे वाले हाथों में पाया
अमीरी और खुशी से खुद को बेजार पाया
गरीबी और उदासी के दामन में लिपटा पाया
छोटे-छोटे राज्यों का नियंत्रण गवाया
और इस तरह अँग्रेज़ों ने
पूरे भारत पर अपना हक जमाया
पर इक दिन ऐसा आया
जब भारत ने क्रूरता न सहने का निर्णय उठाया
और अपनी हिम्मत और खुद्दारी का परिचय दिया
अपनी सोई हुई आवाज को जगाया
और अंग्रेजों तक पहुंचाया
थोड़ा समय जरूर लगाया
पर अपनी अंतर शक्ति से
महात्मा गांधी के नेतृत्व में
अहिंसा के पथ पर चलते
उस चुनौती को अपनाया
आखिर स्वतंत्रता ने दस्तक दी
और विजय तिलक माथे पर चमका
१५ अगस्त १९४७ के दिन
भारत ने फिर अपना झंडा लहराया
और खुशी का जश्न मनाया

लोहड़ी

अनुशा गुप्ता

लोहड़ी उत्तर भारत में मनाया जाने वाला त्योहार है। मुख्यतः पंजाब में यह एक व्यापक रूप से मनाया जाने वाला त्योहार है। यह प्रत्येक वर्ष १३ जनवरी को मकर संक्रांति के त्योहार से एक दिन पहले होता है। हम इसे सर्दियों की संक्रांति के बाद मनाते हैं, क्योंकि सूरज उत्तर की ओर यात्रा करना शुरू कर देता है। लोहड़ी का त्योहार हर वर्ष आग के प्राकृतिक तत्व की पूजा करने के लिए मनाया जाता है और यह रबी फसलों के लिए फसल के मौसम की शुरुआत का प्रतीक है। इस दिन खाया जाने वाला मुख्य भोजन सरसों का साग और मक्के की रोटी है। रात में गांव के मुख्य वर्ग के लोग एक बड़ी आग को जलाते हैं। पूजा के लिए तिल, मुरमुरे एवं मक्के का भोग चढ़ाते हैं और मूंगफली और रेवड़ी प्रसाद की तरह बांटते हैं!! सभी लोग आग के चारों तरफ नाचते हैं और गाते हैं।

बच्चों की सोच, इतिहास के बारे में

मेरा नाम सार्थक है। मैं १३ वर्ष का हूँ, पिता जी मुंबई से हैं, और मेरी माता जी इंदौर से हैं। मुझे फुटबॉल खेलना, किताब पढ़ना बहुत पसंद है। मुझे दादी-दादा के साथ, अपने रिश्तेदारों और परिवार के साथ समय बिताना अच्छा लगता है। मुझे लगता है कि भारत का इतिहास बहुत ही रोचक है। अशोक एक शक्तिशाली राजा थे। उन्होंने भारत पर शासन किया था। उनका राज्य पाटलीपुत्र था। लोग उन्हें सबसे अच्छा राजा मानते थे। वे बड़े ही प्रभावशाली राजा थे। उन्होंने ४० वर्ष तक राज्य किया था। अपने राज्य काल में उन्होंने बहुत कुछ किया। पहले वे बहुत हिंसावादी थे लेकिन बाद में ये शांत स्वभाव के हो गए और बौद्ध धर्म धारण कर लिया।

मेरा नाम रवि है। मैं १३ वर्ष का हूँ। मैं कुमोन कोचिंग सेंटर में पढ़ने जाता हूँ। इससे मुझे गणित में अच्छे अंक मिलते हैं। मुझे विडियो गेम खेलना, किताब पढ़ना, गेम देखना बहुत पसंद है। मेरा मनपसंद खेल फूटबाल है। वह बहुत ही मजेदार और दिलचस्प खेल है। खेल स्वास्थ्य के लिए अच्छा होता है। आपको बहुत कसरत करना पड़ता है और इससे आपके मन की शक्ति के साथ तन की शक्ति भी बढ़ती है। मेरे मनपसंद खिलाड़ी का नाम है केम न्यूटन। वह है। वह केरोलिना पैंथर के लिए फुटबॉल खेलता है। उसका काम फुटबॉल फेंकना है। वह उमसे बहुत अच्छा है। वह बहुत ही प्रसिद्ध खिलाड़ी है। वह अफ्रीकन अमेरिकन राइट्स के लिए काम और मदद करता है। मुझे अपने कहे खिलाड़ी पर गर्व है। काश में भी उनके जैसा खेल सकता।

मेरा नाम अद्विक लाल है। मैं आठवीं कक्षा में पढ़ता हूँ। मैं हिन्दी यू.एस.ए. में उच्च स्तर का छात्र हूँ। मुझे हिंदी सीखना और सिखाना अच्छा लगता है। मुझे पढ़ना और लिखना दोनों पसंद हैं। मेरे मनपसंद विषय गणित और विज्ञान हैं। मुझे चित्रकारी करना भी पसंद है। मुझे टेबल टेनिस खेलना भी बहुत पसंद है। छुट्टियों में अपने छोटे भाई के साथ खेलना पसंद करता हूँ। मुझे मेरे भाई के साथ समय बिताना बहुत अच्छा लगता है।

भारत एक महान देश है। इसका इतिहास वर्षों पहले रचा गया था। कहा जाता है कि भारत का इतिहास विश्व का सबसे लम्बा इतिहास है। इस इतिहास का प्रसिद्ध अध्याय गाँधी जी के बारे में रहा है, जिन्हें प्यार से बापू कहते हैं। बापू जी का जन्म २ अक्टूबर को पोरबंदर में हुआ था। गाँधी जी के पिताजी का नाम करम चंद्र गाँधी था और माता जी का नाम पुतली बाई था। गाँधी जी वकालत सीखने के लिये इंग्लैंड गए थे। लोटने के बाद उन्होंने मुंबई में वकालत शुरू की। भारत लोटने के बाद उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ आंदोलन शुरू किया। उन्होंने सत्याग्रह और दांडी मार्च किया। सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चल कर १५ अगस्त १९४७ को भारत को आज़ादी दिलाई जिसे हम स्वतंत्र दिवस के रूप में जानते हैं। ३० अक्टूबर १९४८ को उनको नाथूराम गोडसे ने गोली मार दी। आज अगर हम गाँधी जी के जैसा अहिंसा का मार्ग अपनाएँ तो देश में होने वाले दंगे फसाद कम हो सकते हैं।

मकर संक्रांति

हम दोनों बहने रश्मि (कक्षा ११वीं) और रूचि कापसे (कक्षा ८वीं) उच्चस्तर-२ में साथ में पढ़ते हैं। हम दोनों ने मिलकर इस बार कर्मभूमि के लिए मकर संक्रांति के बारे में कुछ लिखने का प्रयास किया है। आशा है आप इसे पसंद करेंगे।

सारे भारत में जनवरी के मास में १४/१५ को मकर संक्रांति का उत्सव मनाया जाता है। शास्त्रीय सिद्धांतों के अनुसार सूर्य के उत्तर दिशा की ओर होने वाले संक्रमण को उत्तरायण कहते हैं। सूर्य जब मकरवृत्त को पार करके विषुववृत्त की ओर संक्रमण करता है तो यह उत्सव मकर संक्रांति के नाम से जाना जाता है। सूर्य की पूजा के लिए यह बहुत ही पुण्य काल माना जाता है। मकर राशी का स्वामी शनि होने के कारण इस दिन दान करने का भी महत्व होता है। इस दिन पवित्र नदियों में स्नान करके सूर्य की उपासना का विशेष महत्व है। पूरा भारत देश इस उत्सव को नाचते-गाते, बड़े ही उल्लास से मनाता है। मनाने के तरीके चाहे जितने भी अलग हों लेकिन इस त्यौहार का सबसे बड़ा आकर्षण है पतंगबाजी!!! बड़े-छोटे, मित्र तथा रिश्तेदार सब इस क्रीड़ा में भाग लेते हैं और दिल से आनंद लेते हैं। भारत के विभिन्न क्षेत्रों में यह त्यौहार विभिन्न नामों से जाना जाता है। जैसे आंध्र प्रदेश, केरल, कर्नाटक और महाराष्ट्र में इसे मकर संक्रांति कहते हैं। गुजरात में इसे उत्तरायणी कहते हैं तथा असम और पश्चिम भारत में इसे बिहू कहते हैं और धूमधाम से नृत्य के साथ इसे खिचड़ी खा कर मनाते हैं। तमिलनाडु में इस पोंगल के नाम से जानते हैं और पूजा करके मनाते हैं। पंजाब और हरियाणा में नई फसल के स्वागत में इसे लोहड़ी के नाम से जाना जाता है। ज्यादातर भारत में इस त्यौहार के साथ तिल के व्यंजन बनाये जाते हैं। इस त्यौहार पर तिल को गुड़ के साथ मिला कर लड्डू बनाये जाते हैं और खिचड़ी खा कर धूमधाम से नृत्य के साथ इसे मनाते हैं। भारत में इन दिनों ठन्डे मौसम की वजह से तिल खाने से बहुत सारे स्वास्थय लाभ भी बताये जाते हैं। यूँ तो इस उत्सव की विशेषताओं और इसके महत्व के बारे में बहुत कुछ और भी कहा जा सकता है, लेकिन यह जानकारी मुख्य रूप से इस त्यौहार का विवरण करती है।

दक्षिण भारत के प्राचीन राज्य

लॉरेंसविल हिन्दी पाठशाला, मध्यमा-१

नमस्ते, मेरा नाम सुमति श्रीधर है और मेरी सह-शिक्षिका संयोगिता शर्मा हैं। हम लॉरेंसविल हिन्दी पाठशाला में मध्यमा-१ स्तर को पढ़ाते हैं। जब हम अपने छात्रों को मात्रा के पाठ में 'केरल' शब्द का अर्थ सिखा रहे थे, तब हमने उनसे दक्षिण भारत के राज्यों के बारे में बात की थी। यह निबंध उस बातचीत के आधार पर लिखा गया है। हमारे छात्र उन राज्यों के इतिहास से बहुत प्रभावित थे और प्राचीन समय की कला और संस्कृति से चकित थे। हमें बहुत अच्छा लगा कि उन्हें दक्षिण भारत के इतिहास के बारे में जानने का मौका मिला।

चोला - राज वंश के शासक थे **राजाराज चोल** और उनके पुत्र **राजेन्द्र I, और राजेन्द्र II** 'तंजावुर' से 'ओडिशा' और 'मध्य प्रदेश' तक उनका राज्य आगे बढ़ गया, और श्रीलंका तथा मालदीव तक भी फैला था उनके राज्य को 'चोल मंडल' कहा गया था। तंजावुर का **'पेरिय कोविल'** (शिव जी का मंदिर) के बनने में चोल राजाओं का बहुत योगदान है।

शिल्पकला - महाबलीपुरम, तमिलनाडु

पल्लव - कांची शहर के राज वंश में **राजा सिंहविष्णु** और उनके पुत्र **नरसिंह वर्मन, महेन्द्र वर्मा पल्लव** थे। समुद्रतट में **महाबलीपुरम** नाम का एक नगर पल्लव राज वंश का बहुत प्रसिद्ध समुद्री बंदरगाह था। वहाँ यूनानी लोग (Greeks) और रोम देशवासी (Romans) भारतियों के साथ व्यापार कर रहे थे। बहुत सारी शिल्पकला, शिला मंदिर और शिला प्रतिमाएँ हम आज भी वहाँ देख सकते हैं।

पंड्या - राजा मरवर्मन सुंदरा पांडियन, जटवर्मन सुंदरा पांडियन, उनके राज्य की राजधानी मदुरै शहर था। मदुरै में मीनाक्षी अम्मन मंदिर उनके द्वारा बनाया गया था। पुरानी दुनिया के 'संगम' साहित्य' में कई कविताओं और ग्रंथों में पंड्या राजाओं की प्रशंसा की गई है। यह हैरानी की पर गर्व की बात है कि रोम देश के राजा **ऑगस्टस सीज़र** (Augustus Caesar) को पंड्या राजाओं की ओर से कई उपहार भेजे गए थे।

चेरा साम्राज्य के सिक्के

पंड्या - राजा मरवर्मन सुंदरा पांडियन, जटवर्मन सुंदरा पांडियन, उनके राज्य की राजधानी मदुरै शहर था। मदुरै में मीनाक्षी अम्मन मंदिर उनके द्वारा बनाया गया था। पुरानी दुनिया के 'संगम' साहित्य' में कई कविताओं और ग्रंथों में पंड्या राजाओं की प्रशंसा की गई है। यह हैरानी की पर गर्व की बात है कि रोम देश के राजा **ऑगस्टस सीज़र** (Augustus Caesar) को पंड्या राजाओं की ओर से कई उपहार भेजे गए थे।

दक्षिण भारत के राज्यों के बारे में जानकर बहुत अच्छा लगा। हम उनकी खूबसूरत कलाकृतियों और उन पुराने समय में बने विशाल मंदिरों से चकित हैं। ये विशाल मंदिर ताजमहल से कई वर्ष पहले बने थे। हम इन खूबसूरत मंदिरों को देखना चाहते हैं।

भारत का इतिहास

स्वागता माने, ईस्ट ब्रुंस्विक, उच्चस्तर-१

उच्चस्तर-१ की कक्षा में मेरा यह चौथा वर्ष है। पिछले ग्यारह वर्षों से ईस्ट ब्रुंस्विक में हिंदी यू.एस.ए. के साथ मेरा सफर अभूतपूर्व रहा। इस वर्ष "भारत का इतिहास" विषय पर हमारी कक्षा के बच्चों के विचार उन्होंने अपने शब्दों में लिखे हैं। बच्चों को लिखने के लिए प्रोत्साहित करने का उद्देश्य सफल रहा।

नाम - कपिला माने

नमस्ते.

मैं कपिला माने ईस्ट ब्रुंस्विक की A-1 की कक्षा के साथ युवा कार्यकर्ता के रूप में काम करने का यह मेरा दुसरा साल है। भारत में पुणे शहर में हमेशा मेरा जाना-आना रहा है। वहाँ महाविद्यालयों में भ्रमण दौरान अनुकंपा से मुझे कुछ जानकारी मिली थी।

भारत का इतिहास विषय पर लिखने के लिए कहा गया तो मेरे मन में सबसे पहला विचार आया "सावित्रीबाई फुले" के बारे में, जिस दौर में महिलाओं की शिक्षा भी दूभर थी, ऐसे में जिन्होंने सामाजिक अति विपरीत कठिन परिस्थिती का सामना करके भारतीय महिलाओं को शिक्षणक्षेत्र का द्वार खोला। वह भारत की प्रथम महिला शिक्षिका एवं मराठी कवयित्री थीं। पुणे शहर में महाविद्यालयों की स्थापना की। भारतीय महिलाओंको आज उन्हें स्मरण रखना चाहिए। और दूसरी आनंदीबाई जोशी, जो पुणे शहर में जन्मी, विदेश जाकर डॉक्टरी की डिग्री हासिल करके अपने - आप में एक मिसाल कायम की है। वह पहली भारतीय हिन्दू महिला थीं, जिन्होंने डॉक्टरी की डिग्री ली थी।

मेरा उनको शतशः प्रणाम।

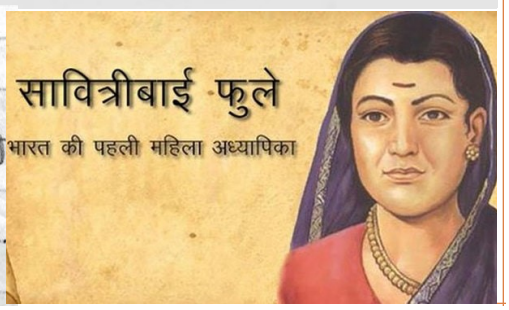

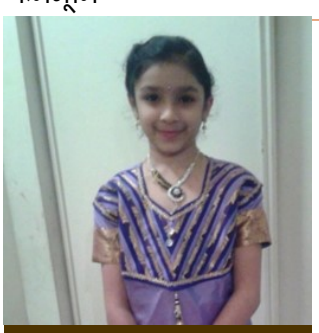

संजीता कैलाशनाथन

मेरा नाम संजीता कैलासनाथन है। मैं १२ वर्ष की हूँ। मैं छठवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मैं ईस्ट ब्रंसविक हिंदी पाठशाला में उच्चस्तर-१ की छात्रा हूँ। मुझे हिंदी सीखना बहुत अच्छा लगता हैं। मेरी शिक्षिका स्वागताजी और मेरी कक्षा की युवा-स्वयंसेविका कपिला माने मेरी बहुत मदद करते हैं। मुझे कला करना और टेनिस खेलना पसंद हैं। हर शुक्रवार, हमें हिंदी पाठशाला आने पर कुछ नया सीखने को मिलता हैं। वेद दुनिया के प्रथम धर्मग्रंथ है। गर्व की बात यह है की मेरे घर में हम यजुर वेद के नियमों का पालन करते हैं।

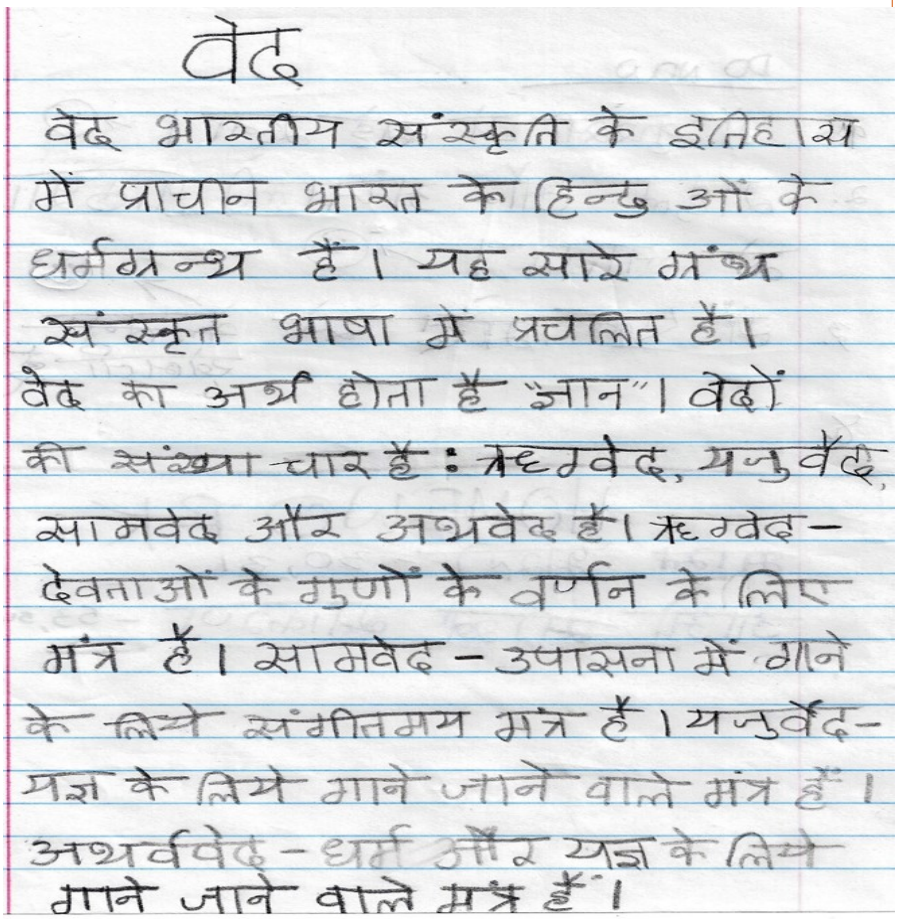

वेद

वेद भारतीय संस्कृति के इतिहास में प्राचीन भारत के हिन्दुओं के धर्मग्रन्थ हैं। यह सारे ग्रंथ संस्कृत भाषा में प्रचलित हैं। वेद का अर्थ होता है "ज्ञान"। वेदों की संख्या चार है: ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद है। ऋग्वेद - देवताओं के गुणों के वर्णन के लिए मंत्र है। सामवेद - उपासना में गाने के लिये संगीतमय मंत्र है। यजुर्वेद - यज्ञ के लिये गाने जाने वाले मंत्र हैं। अथर्ववेद - धर्म और यज्ञ के लिये गाने जाने वाले मंत्र हैं।

नन्हे बच्चे और छुट्टी का दिन

अध्यापिका - क्षमा सोनी

चेरी हिल पाठशाला के कनिष्ठ-१ स्तर के बच्चों ने एक परियोजना के दौरान विभिन्न पोस्टर बनाए। इस परियोजना के माध्यम से उन्होंने अपना छुट्टी का दिन कैसे व्यतीत किया, पूरा दिन क्या-क्या खेल खेले तथा कहाँ -कहाँ घूमें, यह दर्शाया है। इस कार्य में उन्होंने बहुत कुछ सीखा और सब को बहुत आनंद आया।

नाम - केशव माने

सम्राट अशोक, 'चक्रवर्ती सम्राट अशोक' के नाम से बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए जाने जाते हैं। अशोक स्तंभों को 'अशोक चिह्न' के नाम से जानते हैं, वह आज भारत का राष्ट्रीय चिह्न है। सम्राट अशोक के बहुत से शिलालेखों पर एक चक्र बना हुआ है। इसे अशोक चक्र कहते हैं। यह चक्र धर्मचक्र का प्रतीक है। भारत के राष्ट्रीय ध्वज में अशोक चक्र को स्थान दिया गया है।

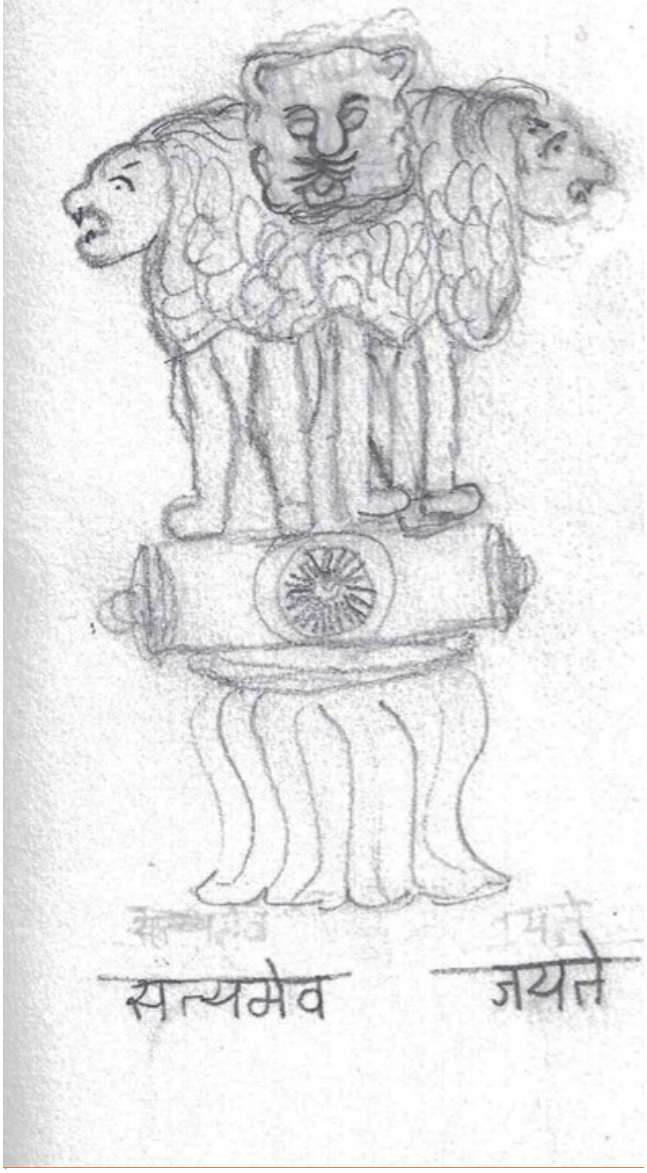

नाम - दिया सिनकर

महात्मा गांधी एक वकील, सामाजिक कार्यकर्ता, और लेखक थे जो अंग्रेजों के खिलाफ राष्ट्रवादी आंदोलन के नेता बने। उनका जन्म २ अक्टूबर, १८६९ को हुआ था। महात्मा गांधी का पूरा नाम मोहनदास करमचंद गांधी है। यह रबींद्रनाथ टैगोर थे जिन्होंने गांधीजी को महात्मा की उपाधी दी थी। वह अहिंसक नीतियों के साथ ब्रिटिश से लड़े। वे स्वदेशी वस्तुओं को प्राधान्य देते थे इसलिए वे खुद चरखा भी चलाते थे। उन्हें राष्ट्र का पिता माना जाता था। उनकी नीतियां पूरी दुनिया में पढ़ी जाती है। वह सभी मानव जाति के लिए एक प्रेरणा है।

सक्षम भारद्वाज

महाराणा प्रताप

महाराणा प्रताप, मेवाड़ राजस्थान के प्रतापी राजा थे। उन्होंने अपना जीवन में वीरता और साहस का परिचय दिया था। दूसरे राजपूती राजाओं का साथ न देते हुए भी, महाराणा प्रताप ने मुगल साम्राज्य के आगे हार नहीं मानी थी। "हल्दी घाटी के युद्ध" में उन्होंने अकबर को जोरदार टक्कर दी थी और पराजय के बाद भी वह मुगलों के हाथ नहीं आये थे। बाद में कई बार उन्होंने मुगल साम्राज्य पर हमले किये थे। भारत के इतिहास में महाराणा प्रताप का नाम वीर राजाओं में आता है।

भारत भ्रमण

नमस्ते, मेरा नाम यश्वी परीख है। मैं ग्यारह वर्ष की हूँ। नवंबर २०१८ में मैं भारत में चार अलग-अलग जगहों पर गयी थी: जयपुर, आगरा, फतेहपुर सीकरी और दिल्ली। जयपुर में मै हवा महल, आमेर का किला, शहर का महल, जंतर मंतर पर गयी थी और मैने जयपुर के सबसे प्रसिद्ध बाजार में खरीददारी की। आगरा में मैं ताज महल गयी थी। ताज महल बहुत खूबसूरत था, जितना मैंने कभी सोचा भी नहीं था। मैंने दिल्ली में इंडिया गेट का दौरा किया और फतेहपुर सीकरी में मैं अकबर और उनकी तीन पत्नियों के महल देखने गयी। मुझे भारत की अपनी यात्रा बहुत पसंद आई। मैं इन स्थानों को कभी नहीं भूलूंगी जिसका मैंने दौरा किया। मैं नई जगहों पर जाने के लिए भारत वापस जाना पसंद करूंगी। मेरा सुझाव है कि हर किसी को भारतीय संस्कृति के बारे में अधिक जानना चाहिए और जीवन के समय में एक बार इन ऐतिहासिक स्थानों की यात्रा करनी चाहिए।

तेनालीराम

रानी लक्ष्मीबाई

सिद्दर्थ कैलाशनाथन

प्रणव असरपोटा

तेनाली रामा

तेनाली रामा एक आंध्र प्रदेश के कवि थे। उनको पंडित रामकृष्ण के रूप में भी जाना जाता है, वे कवि, विद्वान, विचारक और श्री कृष्णदेवराय के दरबार में विशेष सलाहकार थे। वे उस दरबार के आठ कवीयों में से एक थे। तेनाली हास्य कवि के रूप में बहुत प्रसिद्धि प्राप्त की थी। उन्होंने अपनी बुद्धिमत्ता और चतुराई से विजयनगर को दिल्ली सल्तनत से बचाया था।

तेनाली रामकृष्ण का झुकाव धर्म के प्रति लगाव होने की वजह से उन्हे तेनालीरामलिंग कवि के नाम से भी जाना जाता था। उनको अक्सर विकटकवि के नाम से भीजाना जाता था।

रानी लक्ष्मीबाई

रानी लक्ष्मीबाई को झाँसी की रानी के नाम से भी जाना जाता है।

रानी लक्ष्मीबाई का जन्म १९ नवंबर १८३५ में काशी में हुआ था।

इनके पिता का नाम मोरोपंत तांबे और माता का नाम भागीरथी बाई था।

लक्ष्मीबाई के बचपन का नाम मणिकर्निका था और प्यार से सब इन्हें मनु बुलाते थे।

बचपन में शास्त्रों की शिक्षा के साथ शस्त्र की शिक्षा भी ली थी।

चौदह वर्ष से कम आयु में इनका विवाह झाँसी के राजा गंगाधर राव से कर दिया गया था।

इन्होंने १८ वर्ष में ही झाँसी की बागडोर संभाल ली थी।

यह बहुत ही सुंदर, चतुर और शास्त्र कला में निपुण थी।

इन्होंने १८५७ के स्वतंत्रता संग्राम में अहम योगदान दिया था।

लक्ष्मीबाई ने कभी भी खुद को लड़कों से कम नहीं समझा था।

१८ जून १८५८ को लड़ते लड़ते ग्वालियर में उन्हें वीरगति की प्राप्ती हुई थी।

महाराणा शासित झाँसी राज्य की रानी और १८५७ के प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की वीरांगनी थीं।

"मेरी झाँसी नहीं दूंगी" कहके उन्होंने अंग्रेजो का सामना किया था।

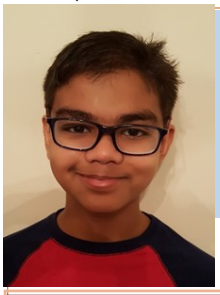

भारत का इतिहास

श्लोक गांगुली हिन्दी यू.एस.ए. में कक्षा उच्चस्तर-१ के छात्र हैं। इन्हें गणित, विज्ञान, हिन्दी, और इतिहास में रुचि है। इसके अलावा इन्हें कराटे और तैरना अच्छा लगता है। खाली समय में वे उसका चेलों बजाते हैं।

भारत एक बहुत ही विविध देश है, जो संस्कृति और विविधता से समृद्ध है। भारत में कई अलग-अलग धर्म, संस्कृतियाँ और लोग हैं जो विभिन्न होते हुए भी एक समान हैं। भारत में सभी लोगों को जोड़ने वाली यह समानता ही भारत का इतिहास है। भारतीय इतिहास ज्ञान का एक विशाल स्त्रोत है। हालाँकि, यह उससे कहीं अधिक है। भारत का इतिहास भारत के लोगों का एक हिस्सा है, जो सभी भारतीयों को विशेष बनाता है। भारत के इतिहास की भारत को आकार देने में बहुत बड़ी भूमिका थी और इसकी भारत के भविष्य को आकार देने में भी एक बड़ी भूमिका होगी।

भारत का इतिहास बहुत ही अनोखा है। श्री राम जी से लेकर शिवाजी तक, मुगल से लेकर गांधी जी तक, भारतीय इतिहास का हर टुकड़ा खास है। यह एक ऐसी चीज है जिसे कोई हमसे नहीं ले सकता, कोई भी हमें इससे अलग नहीं कर सकता है। भारत की मेजबानी हमारे लिए एक हिस्सा है ओर एक ऐसा हिस्सा है जो हमेशा के लिए हमारे साथ रहेगा। लेकिन आजकल लोग अपने इतिहास को भूल जाते हैं। वे अपनी विरासत को भूल जाते हैं और अपनी पहचान का हिस्सा भूल जाते हैं। वे पश्चिम की परंपराओं का पालन करना शुरू करते हैं। लेकिन लोगों को याद करना शुरू कर देना चाहिए। उन्हें अपनी स्वयं की विरासत को अच्छी तरह से जानना चाहिए, इससे पहले कि वे अन्य परंपराओं का पालन करें। अगर हम चाहते हैं कि हमारा देश जिए, हमें अपनी पहचान याद रखनी चाहिए। हमें अपना इतिहास याद रखना चाहिये।

आरित हुंडी

दांडी यात्रा

नमक मार्च (दांडी यात्रा) भारत के इतिहास में प्रमुख अहिंसावादी प्रदर्शन था। यह विरोध मोहनदास करमचंद गांधी जी के नेतृत्व में हुआ था। दांडी यात्रा की शुरुवात मार्च १२, १९३० को अनेक स्वयं सेवकों के साथ गांधी जी के आश्रम अहमदाबाद से हुई और अरब सागर तट तक पैदल यात्रा से समाप्त हुई। यह नमक क़ानून तोड़ो के नाम से भी जाना जाता है। यह पैदल मार्च अहिंसा निवेदन के रूप में शुरू हुआ, लेकिन जल्द ही इसने अंग्रेजी साम्राज्य को हिलाकर रख दिया।

मेरा जन्म ब्रिटिश साम्राज्य का नाश करने के लिए ही हुआ है। मैं कौवे की मौत मरूँ या कुत्ते की मौत, पर स्वराज्य लिए बिना आश्रम में पैर नहीं रखूँगा। - गांधी जी (दांडी यात्रा की पूर्व शाम)

शाहजहाँ

मेरा नाम अवनी गुप्ता है। मैं आठवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मैं आठ वर्षों से हिंदी पढ़ रही हूँ और इस वर्ष हिंदी यू.एस.ए. से ग्रैजुएट करूंगी।

शाहजहाँ भारत के इतिहास में बहुत महत्वपूर्ण है। शाहजहाँ या शिहाब अल-दिन मुहम्मद खुर्रम, जनवरी ५, १५९२ को पैदा हुए थे। वे महाराजा जहाँगीर और राजकुमारी मनमती के तीसरे बेटे थे। १६२८ में वे महाराजा बन गये। शाहजहाँ को भवन-निर्माण का बहुत शौक था।

उनकी सबसे प्रसिद्ध इमारत ताज महल है। ताज महल उनकी मनभावन रानी - मुमताज़ - की याद में बनाया गया है। मुमताज़ वहाँ दफन है। ताज महल का निर्माण १६३२ में शुरू हुआ और २२ वर्ष बाद खत्म हुआ। जब ताज महल का निर्माण खत्म हुआ, वह मुगल निर्माण का सबसे बेहतरीन उदाहरण बन गया। शाहजहाँ को खुद के लिए एक काला ताज महल बनाना था, परंतु उनके बेटे ने उनको आगरा किले में कारावासी कर दिया। शाहजहाँ का सपना कभी पूरा नहीं हुआ। आजकल, दस लाख लोग प्रतिवर्ष ताज महल देखने जाते हैं।

बहुत लोगों को पता है कि शाहजहाँ ने ताज महल बनाया लेकिन अधिकांश लोगों को यह नही पता है कि शाहजहाँ ने लालकिले का भी निर्माण किया। लालकिला लाल भुरभुरे पत्थर से बना है और उसके निर्माण में करीब-करीब दस वर्ष लग गए। भारत ने उसकी स्वतंत्रता लालकिले में मनाई थी। इस वजह से लालकिला एक राजनैतिक महत्वपूर्ण इमारत बन गया है।

शाहजहाँ ने तीन मस्जिदें भी बनवाई। उसने आगरा में दो मस्जिदें बनवाईं - मोती मस्जिद एवं जामा मस्जिद। दिल्ली में उसने एक और जामा मस्जिद बनवाई। दिल्ली जामा मस्जिद भारत की सबसे बेहतरीन मस्जिदों में से एक है।

शाहजहाँ के समय में मुगल साम्राज्य उसके शीर्ष बिंदु पर पहुँचा। शाहजहाँ के राज्य में बहुत साहित्यिक गतिविधि थी। जैसे की पदशनमा लिखा गया और बहुत चित्रकारी भी हुई। १६५७ में शाहजहाँ बीमार पड़ गए और उन्होंने अपना राज्य अपने ज्येष्ठ बेटे डारा को दे दिया। उनके अन्य बेटे शुजा, औरंगज़ेब, तथा मुराद ने डारा को सिंहासन के लिए चुनौती दी। उस युद्ध में औरंगज़ेब जीता। उसने शाहजहाँ को आगरा किले में कारावासी बना दिया और अपने को महाराज बना लिया। शाहजहाँ आगरा किले में अंत समय तक रहे।

अठारहवें हिन्दी महोत्सव के अवसर पर

हिन्दी यू.एस.ए. को हार्दिक शुभकामनाएँ

NIRAV®

Thank You for years of continued brand loyalty!

INDIAN GROCERIES & SPICES INC.,

8051 N. Central Park, Skokie, IL 60076. USA

Tel: 847-674-2480 Fax: 847-674-2490

www.niravproducts.com

हिंदू मर्द मराठा शिवबा

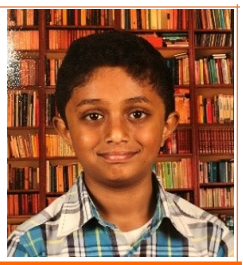

शार्दुल कुलकर्णी शुभ कुलकर्णी

यह लेख दो भाइयों द्वारा लिखा गया है जिनके नाम शार्दुल कुलकर्णी और शुभ कुलकर्णी हैं। शार्दुल ११ वर्ष के हैं और शुभ ९ वर्ष के हैं। वे साउथ ब्रंसविक के स्कूलों में पढ़ते हैं। शार्दुल को फुटबॉल खेलना बहुत पसंद है। शुभ को विज्ञान पसंद है। वे अपने माता-पिता के साथ डेटन में रहते हैं। दोनों को भारतीय इतिहास और पौराणिक कथाएँ बहुत पसंद हैं।

हम भारत की समृद्ध संस्कृति और विरासत के बारे में जानते हैं तथा भारत "अखण्ड भारत" के आदर्शवाद के तहत समृद्ध होने वाले सैकड़ों रियायतों में एक देश रहा है।

भारत ने अपने पूरे इतिहास में कई आक्रमणों का सामना किया, जैसे कई विभिन्न शासक थे जो भारत को दुश्मनों से बचाने के लिए खड़े हुए थे। छत्रपति शिवाजी महाराज उनमें से एक ऐसे मराठा शासक थे, जिन्होंने खड़े होकर मुगल साम्राज्य के खिलाफ लड़ाई लड़ी। इस लेख के माध्यम से हम आपको इस महान योद्धा के बारे में बताएंगे।

शिवाजी का जन्म १९ फरवरी, १६३० को शाहजी राजे भोंसले और जीजाबाई के घर जुन्नार शहर के शिवनेरी किले में हुआ था। शाहजी राजे बीजापुर के सुल्तान की सेवा में थे, शिवाजी की माँ जीजाबाई सिंधखेड़ के नेता लखुजीराव जाधव की बेटी थीं और एक गहरी धार्मिक महिला थीं। शिवाजी विशेष रूप से अपनी माँ के करीब थे जिन्होंने उन्हें सही और गलत की सख्त समझ दी। क्योंकि शाहजी अपना अधिकांश समय पुणे के बाहर बिताते थे, शिवाजी की शिक्षा की देखरेख की ज़िम्मेदारी मंत्रियों की एक छोटी परिषद के कंधों पर टिकी हुई थी, जिसमें शिवाजी को सैन्य और मार्शल आर्ट में प्रशिक्षित करने के लिए आवश्यक कला में सबसे चतुर लोग शामिल थे। शिवाजी का विवाह १६४० में सईबाई के साथ हुआ था। शिवाजी महाराज बहुत कम उम्र से एक जन्मजात नेता बन गए। १६४७ तक उन्होंने कोंडाना और राजगढ़ किलों पर कब्जा कर लिया था और दक्षिणी पुणे क्षेत्र के अधिकांश हिस्से पर उनका नियंत्रण था।

१६७४ की गर्मियों में, शिवाजी ने एक स्वतंत्र संप्रभु स्थापित किया था। दलित हिंदू बहुमत ने उन्हें अपना नेता माना। उन्होंने आठ मंत्रियों के मंत्रिमंडल के माध्यम से अपने डोमेन पर छह वर्ष तक शासन किया। एक धर्माभिमानी हिंदू, जिसने अपने धर्म के रक्षक के रूप में खुद को प्रतिष्ठित किया, उसने यह आदेश देकर उस परंपरा को तोड़ दिया जो उसके दो रिश्तेदारों, जिन्हें जबरन इस्लाम में परिवर्तित कर दिया गया था, को वापस हिंदू धर्म में लेने में रुकावट थी। फिर भी भले ही ईसाइयों और मुसलमानों ने अकसर आबादी के आधार पर अपने पंथों को लागू किया, लेकिन उन्होंने विश्वास का सम्मान किया और दोनों समुदायों के पूजा स्थलों की रक्षा की। बहुत से मुसलमान उनकी सेवा में थे। उनके राज्याभिषेक के बाद उनका सबसे उल्लेखनीय अभियान दक्षिण में था, जिसके दौरान उन्होंने सुलतानों के साथ गठबंधन किया ।

शिवाजी का बीजापुरी सल्तनत के साथ संघर्ष और उनकी लगातार जीत ने उन्हें मुग़ल सम्राट औरंगज़ेब के रडार पर ला दिया। औरंगजेब ने उसे अपने शाही इरादे के विस्तार के लिए एक खतरे के रूप में देखा और मराठा खतरे को मिटाने के अपने प्रयासों को केंद्रित किया। १६५७ में टकराव शुरू हुआ, जब सभी के लिए स्वराज्य का विस्तार शिवाजी महाराज का प्रमुख उद्देश्य बन गया। यह आम लोगों के लिए आम लोगों द्वारा उठाया गया साम्राज्य था जहां कोई धार्मिक या जाति बाधाएं नहीं थीं, कोई अमीर या शक्तिशाली कभी इष्ट नहीं थे। यह शासन का नियम था, जिसे राम राज्य भी कहा जाता है। शिवाजी महाराज ने दमनकारी मुगल शासन के खिलाफ दृढ़ता से लड़ाई लड़ी और आर्थिक रूप से अपना धन हासिल करने के लिए मुगल धन के स्रोतों को लूट लिया। बदनाम औरंगजेब ने अपने प्रमुख जनरल जय सिंह को १५०,००० की सेना के साथ भेजा। मुगल सेना ने शिवाजी के नियंत्रण में किलों को घेरे हुए धन को निकालने और सैनिकों को मारने के लिए उनके दांत काट दिए। शिवाजी ने औरंगजेब के साथ एक समझौते पर आने के लिए सहमति व्यक्त की ताकि जीवन की और हानि को रोका जा सके और पुरंदर की संधि पर ११ जून, १६६५ को शिवाजी ओर जय सिंह के बीच हस्ताक्षर किए गए। शिवाजी ने २३ किलों को आत्मसमर्पण करने और मुगल को मुआवजे के रूप में ४००,००० की राशि का भुगतान करने पर सहमति व्यक्त की।

औरंगजेब ने अफगानिस्तान में मुगल साम्राज्यों को मजबूत करने के लिए अपनी सैन्य कौशल का उपयोग करने के उद्देश्य से शिवाजी को आगरा में आमंत्रित किया। शिवाजी ने अपने आठ वर्ष के बेटे संभाजी के साथ आगरा की यात्रा की और नाराज औरंगजेब ने उसे नजरबंद कर दिया। लेकिन शिवाजी ने एक बार फिर कारावास से बचने के लिए अपनी बुद्धि और चालाकी का इस्तेमाल किया। उन्होंने गंभीर बीमारी का बहाना किया और प्रार्थना के लिए प्रसाद के रूप में मिठाई की टोकरी को मंदिर भेजने की व्यवस्था की। अपने बेटे को एक मिठाई की टोकरी में छिपा कर भगा दिया और अगस्त १६६६ में खुद भाग गए। बाद के समय में, मुगल और मराठा शत्रुता को मुगल सरदार जसवंत सिंह की निरंतर मध्यस्थता द्वारा काफी हद तक शांत किया गया था। शांति १६७० तक चली, जिसके बाद शिवाजी ने मुगलों के खिलाफ चौतरफा हमला किया। उन्होंने चार महीनों के भीतर मुगलों द्वारा जब्त किए गए अपने अधिकांश क्षेत्रों को बरामद किया। शिवाजी महाराज की मृत्यु ५२ वर्ष की आयु में ३ अप्रैल, १६८० को पेचिश से पीड़ित होने के बाद रायगढ़ किले में हुई थी।

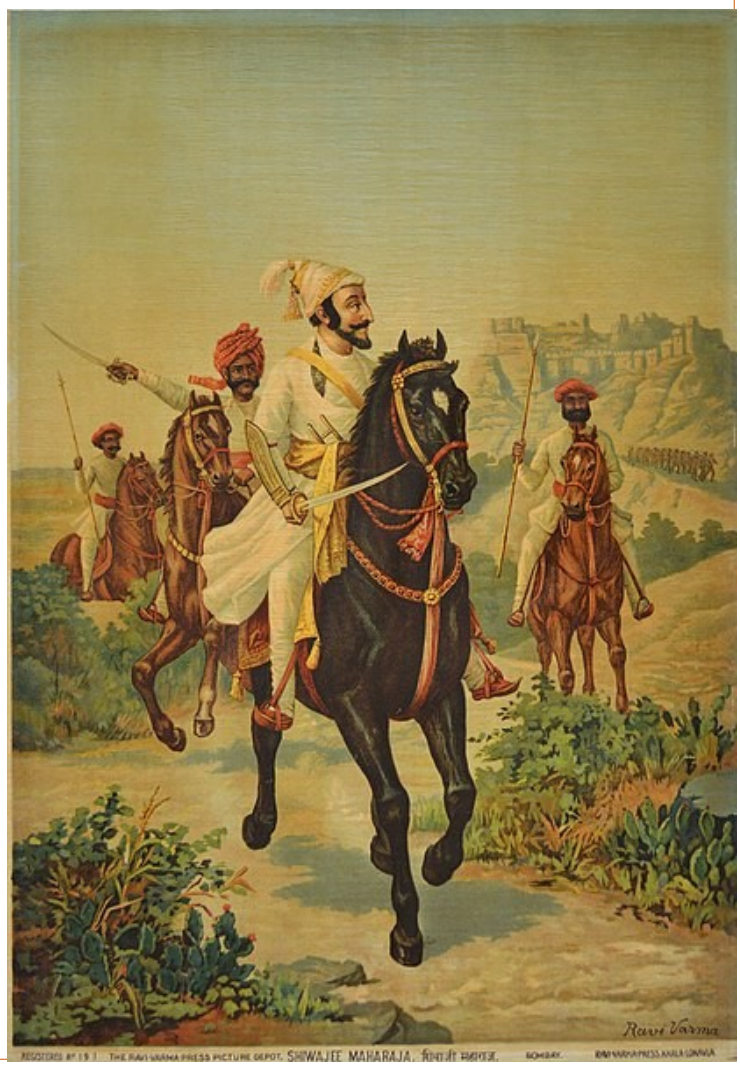

भारतीय इतिहास की झलकियाँ

ऋचा खरे शिक्षिका - साऊथ ब्रंस्विक हिन्दी पाठशाला - मध्यमा-२

देव पटेल

ताजमहल

ताजमहल विश्व के सात महान अजूबों में से एक है। ताजमहल को मुगल बादशाह शाहजहाँ ने सन् १६३१ ई॰ में बनवाया था। ताजमहल आगरा शहर में यमुना नदी के किनारे स्थित है। इसे शाहजहाँ ने अपनी बेगम मुमताज की याद में बनवाया था। ताजमहल सफ़ेद संगमरमर पत्थरों से बना है। इसके चारों कोनों में चार मीनारें तथा बीच में एक गुम्बद है। ताजमहल को २० हजार मजदूरों द्वारा २२ वर्षों में बनाया गया। चन्द्रमा की रौशनी में ताजमहल बहुत सुन्दर दिखता है। इसे देखने दुनियाभर के हजारों पर्यटक हर वर्ष भारत आते हैं।

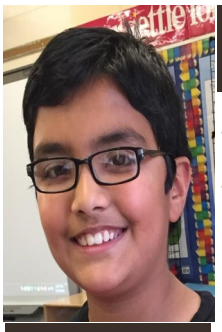

समर्थ शर्मा

इंडिया गेट

इंडिया गेट भारत का प्रसिद्ध युद्ध स्मारक है जो नई दिल्ली में है। यह ४३ मीटर उँचा है जिसे १९३३ में अंग्रेज़ शासकों ने अपनी सेना के शहीद भारतीय सैनिकों की स्मृति में बनाया था। इस को भारत के आजाद होने के बाद भारतीय सैनिकों के मक़बरे में तब्दील कर दिया गया था। मैं इस इमारत को अपनी अगली भारत यात्रा के दौरान देखना चाहता हूँ।

पानीपत की लड़ाई

हम सब भारतीय हैं। हमारी कर्मभूमि भारत है। भारत के इतिहास में पानीपत के तीन युद्धों का वर्णन किया गया है।

- पानीपत की पहली लड़ाई - यह लड़ाई 1526 में बाबर और इब्राहिम लोदी के बीच में लड़ी गई। इस युद्ध में बाबर की सेना विजयी हुई।
- पानीपत की दूसरी लड़ाई - यह लड़ाई 1556 में अकबर और हेमू के बीच हुई। इस युद्ध में अकबर विजयी हुए।
- पानीपत की तीसरी लड़ाई - यह लड़ाई 1761 में दुरानी साम्राज्य और मराठा साम्राज्य के बीच हुई, जिसमें दुरानी साम्राज्य ने विजय प्राप्त की।

लेखक - खनक बिन्दल

मेरा नाम खनक बिन्दल है। मेरी उम्र ८ वर्ष है। मै हिन्दी यू.एस.ए में मध्यमा २ की छात्रा हूँ। मेरी रुचि किताबें पढ़ना, नृत्य एवं संगीत कला में है।

भारत के ऐतिहासिक स्मारक

गुनताश कौर मथारू, शिक्षिका विल्टन हिंदी पाठशाला, मध्यमा-३

नमस्ते, मेरा नाम गुनताश कौर मथारू है। मैं विल्टन हिंदी पाठशाला की मध्यमा-३ की अध्यापिका हूँ। भारत की संस्कृति, परंपरा और विरासत वास्तव में भारत के भवनों, मंदिरों, किलों और महलों में समृद्ध है। इसको ध्यान में रखते हुए बच्चों ने भारत के विभिन्न ऐतिहासिक स्मारकों के बारे में लेख लिखने का प्रयास किया है। कक्षा में सीखे हुए स्थानों तथा इमारतों के नामों का उपयोग करते हुए बच्चों को लेख लिखने में बहुत मज़ा आया।

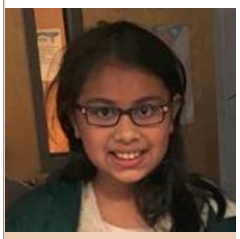

प्रियंका भंडारी

हवा महल

राजस्थान की राजधानी जयपुर में स्थित हवा महल का निर्माण महाराजा सवाई प्रताप सिंह ने १७९९ ए. डी. में कराया था। मधुमक्खी के छत्ते जैसी संरचना के लिए प्रसिद्ध हवा महल लाल और गुलाबी सेंडस्टोन से बनाया गया है। इसमें कुल ९५३ खिड़कियाँ है जो महल को ठंडा रखती हैं यह महल बिना किसी आधार के बना है। हवा महल में ऊपरी मंजिल में जाने के लिए केवल ढालू रास्ता है, वहाँ ऊपर जाने के लिये कोई सीढ़ी नहीं बनी है। इस महल को बनाने का उद्देश्य शाही महिलाओं को बाज़ार और महल के बाहर हो रहे उत्सवों को दिखाना था।

रोहक़ गुलिया

इंडिया गेट

इंडिया गेट भारत का एक प्रसिद्ध स्मारक है। पहले इंडिया गेट का नाम अखिल भारतीय युद्ध स्मारक था। इस स्मारक का प्रारूप एडविन लुत्येन्स द्वारा किया गया था। इसका निर्माण कार्य १९२१ में शुरू हुआ था और इसको पूरा बनने में १० वर्ष लगे थे। इंडिया गेट का निर्माण अंग्रेजो द्वारा उन ७०००० भारतीय सैनिकों की स्मृति में किया गया था जो १९१४-२१ में ब्रिटिश इंडियन सेना में भर्ती होकर प्रथम विश्वयुद्ध और अफ़ग़ान युद्ध में शहीद हुए थे। देश के सब भागों से लोग इस स्मारक को देखने आते हैं।

शायला बाठला

आमेर किला

गुलाबी नगरी जयपुर का आमेर क़िला पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है। यह किला लाल और सफ़ेद संगमरमर के पत्थरों को मिलाकर बनाया गया है। इसके पास एक पहाड़ी पर बने अम्बिकेश्वर मन्दिर के कारण ही इसका नाम आमेर का किला पड़ा था। आमेर के किले में बना शीश-महल अपनी सुंदर नक्काशी के लिए जाना जाता है, जिसके कारण इसे दुनिया का सबसे अच्छा काँच घर माना जाता है।

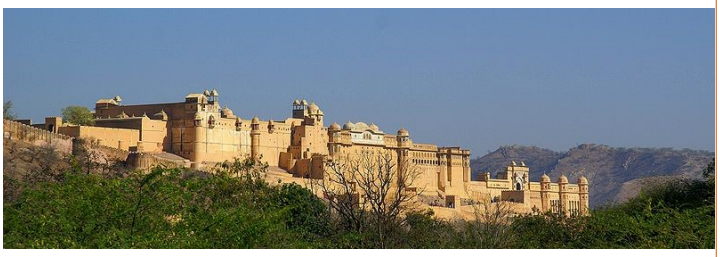

प्रस्तुत लेख स्टैमफोर्ड हिन्दी पाठशाला से मध्यमा-२ के छात्रों रचित झा, अपूर्व शर्मा, त्रिस्ता फर्नांडेस, वीरज शाह, दीप बैनर्जी, तामरा हिल, भृति वालिया ने लिख है। कुछ छात्रों ने पिछले कुछ वर्षों में ताजमहल का दौरा किया और उन्होंने सौंदर्य, इतिहास, भवन और मान्यताओं में अपने ज्ञान और रुचि को साझा किया। शिक्षकों और माता-पिता की मदद से छात्रों ने लेख बनाया।

ताजमहल

ताजमहल का मतलब महलों का ताज है। इसे शाहजहाँ ने बनवाया था। यह मुमताज महल के लिए बनाया गया था। उनकी वास्तविक कब्रें ताजमहल के निचले स्तर पर हैं। कब्र ताजमहल का मुख्य आकर्षण है। यह एक विशाल चौकोर चौखट पर खड़ा है। मकबरा ४२ एकड़ के परिसर का केंद्रबिंदु है, जिसमें एक मस्जिद और एक गेस्ट हाउस शामिल है, और एक औपचारिक दीवार द्वारा तीन तरफ से बंधे औपचारिक उद्यानों में स्थापित किया गया है। यह सात अजूबों में से एक है। यह आगरा, उत्तर प्रदेश में है। इसे १६३२ में बनाया गया था और यह संगमरमर से बना है।

ताजमहल को बनाने में २० वर्ष लगे। ऐसी मान्यता है कि शाहजहाँ ने सभी श्रमिक के हाथ कटवा दिए जिससे कि वे फिर से दूसरा ताज महल नहीं बना सकें। शाहजहाँ को उसकी पत्नी के बगल में दफनाया गया था। शाहजहाँ चाहता था कि ताजमहल काला हो, लेकिन ऐसा होने से पहले ही उसकी मृत्यु हो गई। शाहजहाँ ने अपनी पत्नी के लिए ताजमहल बनवाया था। वह उससे बहुत प्यार करता था। ताजमहल एक शाही कब्र है। ताजमहल में एक वर्ष में लगभग १,०००,००० आगंतुक आते हैं। ताजमहल की पूरी ऊंचाई १७१ मीटर है।

चेरी हिल – मध्यमा-३

ईशा कलिकिरी

भारत ने आजादी कैसे हासिल की

मेरा नाम ईशा कलिकिरी है। मैं छठी कक्षा में पढ़ती हूँ। मुझे ललित कला पसंद है। मैं भारत का इतिहास सीखने में दिलचस्पी रखती हूँ।

१५ अगस्त १९४७ वह दिन था जब भारत को ब्रिटिश राज से बहुत कठिन संघर्ष के बाद आजादी मिली। भारत में अंग्रेज आने से पहले परिस्थिति बहुत अच्छी थी। सभी लोग ख़ुशी से रहते थे। लेकिन बाद में इस देश में अंग्रेज आये और पूरे देश पर धीरे-धीरे कब्ज़ा कर लिया। उनके आने के बाद देश की हालत काफी खराब हो गयी। उन्होंने देश के लोगों को गुलाम बना डाला। उन पर अत्याचार करना शुरू किया। इस स्वतंत्रता आन्दोलन की शुरुआत असल में सन १८५७ से हुई। अंग्रेज इस देश पर केवल हुकूमत करना चाहते थे और इसलिए उन्होंने अपनी ताकत को बेहद बढ़ा दिया था। १८५७ में अंग्रेजों के खिलाफ जो लड़ाई लड़ी गयी वहाँ से ही भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन की नींव रखी गयी।

१९ वीं सदी के आखिरी में यह आन्दोलन और भी बढ़ गया था जिसकी वजह से जिन अंग्रेजों ने देश पर २०० वर्षों तक राज किया उन्हें आखिर सन १९४७ में देश छोड़ना पड़ा और भारत आजाद हो गया। १५ अगस्त १९४७ के दिन हमारे पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने पहली बार लाल किले में राष्ट्रीय ध्वज फहराया। भारत में सभी जाति, धर्म और पद के लोग इस दिन को बड़े आनन्द के साथ मनाते हैं।

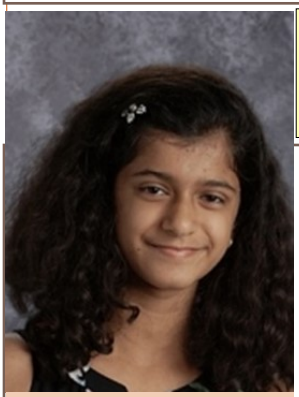

अवनी मलिक

गणित में भारत का योगदान

मेरा नाम अवनी मलिक है। मैं पाँचवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मुझे कत्थक नृत्य में रुचि है जो मैं चार वर्षों से सीख रही हूँ। मुझे टेनिस और बास्केटबोल खेलना बहुत पसंद है। मै गायिका के रूप मे रौक बैंड में दो वर्ष से भाग ले रही हूँ।

भारत ने विश्व को गणित के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। ऐसा माना जाता है कि वैदिक समय में सौ से लेकर खरब संख्या का वर्णन किया गया। सत्रहवीं सदी में ब्रह्मगुप्त ने शून्य के बारे में बताया। यह पहले संस्कृत भाषा में लिखा गया था। उन्होंने त्रिकोण के क्षेत्र की गणना करना सिखाया। छठी सदी में उन्होंने त्रिकोणमिति (trigonometry) की परिभाषा दी। उन्होंने पाई का मूल्य और महत्व बताया। उन्होंने पाई के मूल्य का उपयोग कर पृथ्वी की परिधि का अनुमान लगाया। उनके कई आविष्कारों की पुष्टि कई सदियों के पश्चात बारहवीं सदी में यूरोप में हुई जो आज भी आधुनिक गणित में महत्वपूर्ण है।

प्राचीन भारत का आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी में योगदान

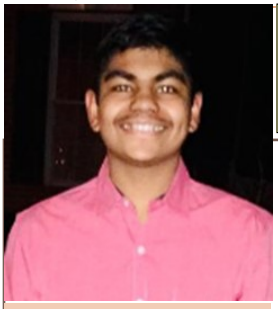

ईशान प्रभाकर

भले ही प्राचीन भारतीयों को इसका बहुत श्रेय नहीं मिला हो, परंतु वास्तव में उनकी आधुनिक विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विकास में बहुत बड़ी भूमिका रही है। सर्वप्रथम आर्यभट्ट द्वारा शून्य का आविष्कार आज के गणित और संगणक प्रणाली के लिए बहुत ही आवश्यक साबित हुआ है। शून्य ही दशमलव और नकारात्मक संख्याओं का बीजक है। दशमलव प्रणाली के आविष्कार का श्रेय भी प्राचीन भारतीयों को ही जाता है। अंक गणित से नये-नये वैज्ञानिक आविष्कार सरल और शीघ्र होने लगे। एक और महत्वपूर्ण योगदान बाइनेरी संख्या का है, जो विशिष्ट प्रणाली से एक एवं शून्य का उपयोग करती है। वर्तमान समय में संगणक प्रोग्रामिंग में इसी का प्रयोग किया जाता है। बाइनेरी संख्या का पहला उल्लेख चंदशास्त्र में पिंगला द्वारा किया गया था। दूसरा महत्वपूर्ण योगदान परमाणुओं की संभावना सिद्धांत का है। अणु का वर्णन पहली बार कणद द्वारा किया गया था। अंत में, सूर्यकेन्द्रिय सिद्धांत भी प्राचीन भारत की ही देन है, जिसकी सहायता से आज सूर्य ग्रहण जैसे घटनाओं की सटीक भविष्यवाणी सम्भव है।

अद्वैत वात्तल

हमें यह अच्छी तरह से पता है कि प्राचीन भारतीयों का विज्ञान और प्रौद्योगिकी में बहुत महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इस तथ्य के बारे में कौन नहीं जानता कि भारतीयों ने पाई के मूल्य के विकास में योगदान दिया, शून्य की अवधारणा की और उन्होंने प्लास्टिक और मोतियाबिंद सर्जरी भी विकसित की। एक अन्य महत्वपूर्ण योगदान था परमाणु का सिद्धांत जिसका आविष्कार कणाद वैज्ञानिक ने किया था। उन्होंने परमाणुओं या छोटे अविनाशी कणों के अस्तित्व की कल्पना की। उन्होंने यह भी कहा कि परमाणु में दो अवस्थाएँ हो सकती हैं-पूर्ण विश्राम और एक गति की अवस्था। उन्होंने आगे यह भी कहा कि एक ही पदार्थ के परमाणुओं को एक विशिष्ट और सिंक्रनाइज़ तरीके से द्विवुका (डायटोमिक अणुओं) का उत्पादन करने के लिए संयुक्त किया जाता है। यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान है जो विज्ञान में कई खोजों और सिद्धांतों का आधार बनता है। हम भारतीयों को अपनी विरासत पर गर्व होना चाहिए।

आदित्य सेल्वकुमार

प्राचीन भारतीय वैज्ञानिकों और गणितज्ञों का विज्ञान के क्षेत्र में बहुत योगदान रहा है। शायद सबसे महत्वपूर्ण आविष्कार हेलिओसेंट्रिक सिद्धांत की खोज थी। हेलियोसेन्ट्रिक सिद्धांत कहता है कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर जाती है। यह खगोल विज्ञान में एक महत्वपूर्ण योगदान था और पश्चिमी खगोलविदों ने इस सिद्धांत को कई शताब्दियों के बाद सीखा। प्राचीन भारत के गणितज्ञों ने खगोलीय भविष्यवाणियों को प्रमाणित बनाने के लिए अपने गणितीय ज्ञान का उपयोग किया। शायद उनमें से सबसे महत्वपूर्ण आर्यभट्ट थे। हेलियोसेन्ट्रिक सिद्धांत के साथ उन्होंने यह प्रतिपादित किया कि पृथ्वी गोल है और यह पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है। उन्होंने सौर और चंद्र ग्रहणों, दिन की अवधि और पृथ्वी और चंद्रमा के बीच की दूरी के बारे में भी भविष्यवाणी की।

पीयूष नवाडे

शिवाजी महाराज: आगरा से महान पलायन

मेरा नाम पीयूष नवाडे है। मेरी उम्र १३ वर्ष है और मैं सातवीं कक्षा में पढ़ रहा हूँ। मैं पिछले ८ वर्षों से हिंदी सीख रहा हूँ।

शिवाजी और मुगलों ने लड़ाई रोकने के लिए एक संधि पर हस्ताक्षर किए। लेकिन जब शिवाजी महाराज को आगरा में राजा औरंगजेब से मिलना था तब उनके सलाहकार ने कहा, "महाराज, यह एक जाल है। हम औरंगज़ेब पर भरोसा नहीं कर सकते!" हम आपको वचन देते हैं। आपको मुगल दरबार में एक राजा की तरह सम्मानित किया जाएगा, "जय सिंह ने शिवाजी को आश्वासन दिया।

अतः शिवाजी अपने छोटे बेटे संभाजी के साथ आगरा के लिए रवाना हुए। जब वे दरबार में पहुँचे, तो शिवाजी ने बादशाह का अभिवादन किया। इसके बाद उन्हें दरबार हॉल में अपने निर्धारित स्थान पर ले जाया गया। यह रईसों की तीसरी पंक्ति में था। उन दिनों लोगों को उनकी श्रेणी के आधार पर अदालत में जगह दी गई थी। शिवाजी क्रोधित हो गए। उन्हें आश्वासन दिया गया था कि उनके साथ राजा जैसा व्यवहार किया जाएगा, और यहाँ उन्हें कम रईसों के पीछे खड़ा किया जा रहा था!

नाराज शिवाजी गुस्से में अदालत से बाहर आ गए। दरबार में हर कोई हैरान था। औरंगजेब ने आदेश दिया कि शिवाजी को आगरा में हिरासत में लिया जाए। जिस घर में शिवाजी को रखा गया था, उसके बाहर गार्ड तैनात थे। पूरी जाँच के बिना किसी को भी अंदर या बाहर जाने की अनुमति नहीं थी।

शिवाजी आगरा में लोगों के एक छोटे समूह के साथ आए थे। शिवाजी लड़ने के लिए तैयार थे लेकिन उन्हें पुत्र संभाजी की चिंता थी।

उन्होंने मुगलों से अनुरोध किया कि वे अपने लोगों को आगरा छोड़ने दें। मुगलों ने उनके अनुरोध पर सहमति व्यक्त की। उनके एस्कॉर्ट्स चले जाने से वे शिवाजी पर कड़ी नजर रख सकते थे। तब शिवाजी ने खबर फैलाई कि वे बीमार पड़ गए हैं। वे ब्राह्मणों द्वारा अपने स्वास्थ्य के लिए प्रार्थनाएँ चाहते थे। उन्होंने महल के बाहर कई मिठाइयाँ भेजना शुरू कर दिया जहाँ उन्हें रखा गया था। यह एक दैनिक दिनचर्या बन रहा था। मिठाई से भरी दो बड़ी टोकरियाँ हर दिन महल से बाहर निकलती हैं क्योंकि महान मराठा नेता, शिवाजी महाराज, बीमार हो गए थे और शहर भर के लोग उनके शीघ्र स्वस्थ होने की प्रार्थना कर रहे थे।

एक दिन संभाजी और शिवाजी महाराज मिठाई की बड़ी टोकरी में चढ़ गए जो महल से बाहर जा रही थी। इस तरह वे आगरा से मथुरा भाग गए। मथुरा से वे अपनी माँ जीजाबाई के पास वापस चले गए।

शिवाजी ने खोए हुए साम्राज्य को वापस पाने के बाद खुद को छत्रपति शिवाजी महाराज घोषित किया।

चेस्टरफ़ील्ड हिन्दी पाठशाला, मध्यमा-१

नमस्ते, मेरा नाम सोनल विजयवर्गीय है। मैं चेस्टरफ़ील्ड हिन्दी यू.एस.ए. में अध्यापिका हूँ। यहाँ मुझे पिछले ७ वर्ष मध्यमा-१ से उच्चतर-१ तक की कक्षाओं को पढ़ाने का सु-अवसर मिला। मुझे विभिन्न प्रदेशों और संस्कृतियों से आये हुए बच्चों को हिन्दी पढ़ाना अच्छा लगता है। पढ़ाते समय मुझे बच्चों को हमारी भारतीय संस्कृति और रीति रिवाजों से अवगत कराने का अवसर भी मिलता है। जब बच्चे हिन्दी में पढ़ना, लिखना और बोलना सीख लेते हैं तो मुझे बहुत संतोष और गर्व महसूस होता है। इस वर्ष भी बच्चों ने भारतीय इतिहास और संस्कृति के बारे में कर्मभूमि के लिए हिन्दी में अपने लेख लिखे और कविता प्रतियोगिता में भी बहुत उत्साह से भाग लिया। सबने दिवाली त्यौहार के लिए ग्रीटिंग कार्ड बनाने में अपनी रुचि दिखाई और मिठाई का आनंद उठाया। बच्चों की हिन्दी सीखने की रूचि और उत्साह हम शिक्षकों को भी हिन्दी पढ़ाने के लिए प्रेरित करता है।

सरदार वल्लभ भाई पटेल

केया बकरानिया

मेरा नाम केया बकरानिया है। मैं चेस्टरफ़ील्ड हिंदी पाठशाला मध्यमा-१ में पढ़ती हूँ। मुझे हिंदी सीखना बहुत अच्छा लगता है। मै आपको भारत के इतिहास के बहुत महत्वपूर्ण नेता के बारे मे बताना चाहती हूँ। सरदार वल्लभ भाई पटेल एक बहुत गुणवान आदमी थे। उनका जन्म ३१ अक्टूबर १८७५ को हुआ था। वे कानून पढ़ने इंग्लैंड गए थे। पढ़ने के बाद वे भारत वापस आये। वे गांधी जी से मिले। गांधीजी के साथ वे भारत की आज़ादी के लिए निकले। उस समय भारत पर इंग्लैंड का राज्य था। सरदार पटेल सत्याग्रह में शामिल थे। वे आज़ादी के एक बड़े नेता थे। गांधीजी ने उनको सरदार नाम दिया। भारत को आज़ादी १९४७ में मिली। सन् २०१८ में सरदार वल्लभभाई पटेल की सबसे ऊँची प्रतिमा गुजरात में बनाई गई।

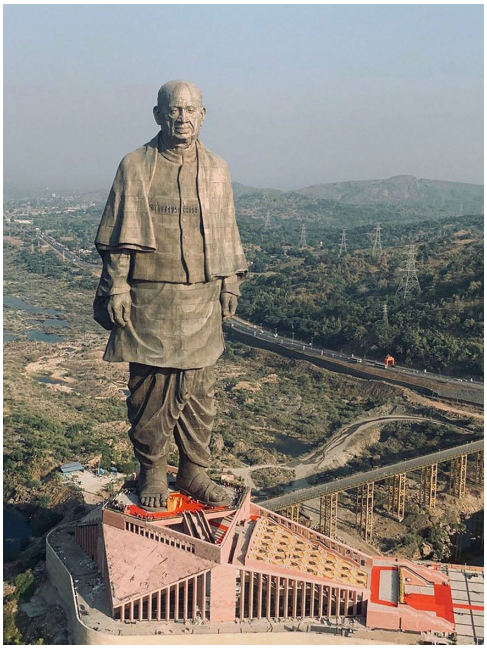

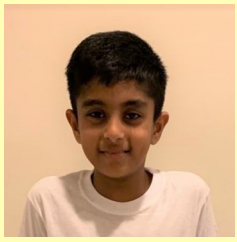

रामायण

श्रीराम प्रशांत

मेरा नाम श्रीराम प्रशांत है। मैं नौ वर्ष का हूँ। मुझे अमर चित्र कथा किताब पढ़ना पसंद है। इस आलेख से मैं आपको रामायण सुनाने वाला हूँ। रामायण एक प्राचीन भारतीय कहानी है। यह कहानी कई सदियों के पहले हुई थी। राम एक महान युवराज थे। रामायण में सात कांड हैं।

बाल कांड: राजा दशरथ और कौशल्या के पुत्र राम बहुत गुणवान थे। उन्होंने विश्वामित्र के आश्रम की रक्षा रक्षासूत्र से की थी। उन्होंने मिथिला के राजा जनक की पुत्री सीता देवी से शादी की थी।

अयोध्या कांड: राजा दशरथ चाहते थे कि राम अगले राजा बनें। लेकिन कैकेयी को इस बारे में जलन हो रही थी। उसने दशरथ से दो वरदान देने के लिए कहा। वे चाहती थीं कि भरत अगला राजा बने और राम को चौदह वर्ष के वनवास पर जंगल में भेजा जाए। राम ने एक समर्पित बेटे की तरह अपने माता पिता के आदेश पर बाहर वन जाना चुना ।

अरण्य कांड: यह कांड जंगल में राम, सीता और लक्ष्मण के बारे में बताता है। लक्ष्मण ने सूर्पनाखा की कान और नाक काट दी। उसका भाई रावण इस पर क्रोधित हो गया और उसने सीता के अपहरण की योजना बनाई। रावण ऋषि के वेश में सीता से भिक्षा मांगता है। जब सीता ने लक्ष्मण रेखा को पार किया तो रावण ने उसके उड़ते हुए रथ में उनका अपहरण कर लिया। पक्षियों के राजा जटायु ने सीता देवी को बचाने की कोशिश की, लेकिन लड़ाई में वह मर गया। राम और लक्ष्मण ने इस के बाद सीता देवी की खोज शुरू कर दी।

किष्किंधा कांड: राजा सुग्रीव ने अपने दुष्ट भाई बालि से अपने राज्य को वापस पाने के लिए राम से मदद मांगी। वापसी में सुग्रीव ने अपनी सेना के साथ राम की मदद की। जामबवा (जामवंत) राजा ने भी राम की मदद की। सुग्रीव, रावन की सभा में एक मंत्री, से हनुमान को पता चला कि सीता लंका में थीं।

सुंदर कांड: हनुमान ने सीता की खोज में सागर के पार छलांग लगाई और अंत में सीता देवी को रावण के महल में पाया। हनुमान ने राम की अंगूठी सीता देवी को दे दी। उन्होंने रावण से निवेदन किया कि सीता को मुक्त कर दे लेकिन रावण इससे सहमत नहीं था। रावण ने हनुमान की पूंछ पर आग लगवाई लेकिन हनुमान जी ने पूरे लंका शहर में आग लगा कर अपनी समझ और शक्तियां दिखाईं।

युद्ध कांड: पत्थरों के सेतु का निर्माण हुआ जो पानी पर तैरता था। यह लड़ाई राम और रावण के बीच हुई। अंततः राम ने लड़ाई जीती। सब लोग अयोध्या वापस लौट गए और राम राजा बने।

उत्तर कांड: राम ने सीता को जंगल में भेज दिया। जंगल में सीता ने लव और कुश को जन्म दिया और वाल्मीकि ऋषि के मार्गदर्शन में बच्चों को बड़ा किया।

महात्मा बुद्ध

राधा पंत

मैं, राधा पंत, चेस्टरफ़ील्ड पाठशाला में हिंदी सीख रही हूँ। मुझे हिंदी में बोलना, पढ़ना, लिखना बहुत अच्छा लगता है। मैं आपको महात्मा बुद्ध के बारे मे बताना चाहती हूँ।

भारत में महात्मा बुद्ध को विष्णु का अवतार मानते हैं। उन्होंने हमें सीख दी कि दुःख का कारण हमारी इच्छा और लालच है। अगर हम सच के मार्ग पर चलेंगे और सबसे अच्छा व्यवहार करेंगे तो हम खुश रहेंगे। बुद्ध का बचपन का नाम सिद्धार्थ था। वे एक राजा के बेटे थे। पर उनका स्वभाव कोमल था और वे लोगों और पशुओं का दुःख नहीं देख सकते थे। इसलिए वे राज पाठ, पत्नी, माता और अपने पुत्र को छोड़ कर सत्य की तलाश में जंगल चले गए। जब उन्हें ज्ञान मिला तब उनको लोग बुद्ध कहने लगे। भारत के राजा अशोक, कनिष्क और हर्षवर्धन जैसे लोग उनके शिष्य बने और उन्होंने बुद्ध की सीख को दूर देशों तक पहुंचाया। आज भी सारी दुनिया में बौद्ध धर्म के बहुत से अनुयायी हैं।

गेटवे ऑफ इंडिया

आदर्श नीलंकाविल

मेरा नाम आदर्श नीलंकाविल है। मैं ग्यारह वर्ष का हूँ। मैं छठी कक्षा में पढ़ता हूँ| मैं एडिसन हिन्दी पाठशाला में पढ़ता हूं और मध्यमा-१ स्तर की कक्षा में हूँ।

२०१७ की छुट्टियों में मैं मुंबई नगर गया था। वहाँ मैं गेटवे ऑफ इंडिया घूमने गया। यह स्मारक १९११ में राजा जॉर्ज पंचम और रानी मैरी की भारत यात्रा की याद में बनाया गया था। पहले यह अपोलो बंदरगाह/वेलिंग्टन घाट हुआ करता था। यहाँ जहाज आते जाते थे। यह १९२४ में स्कॉटलैंड के जॉर्ज विटेट की योजना से बन कर तैयार हुआ। उन दिनों इंगलैंड से भारत आने के लिये विमान नहीं था। अरब सागर से जहाज में आने का यह एक द्वार था। यहाँ से ही आखिरी जहाज १९४७ में भारत से इंगलैंड के लिये निकला। आज भी इसे देखने बहुत सारे यात्री आते हैं। जब मैं गया था तब बरसात का मौसम था। सागर में लहर ज्यादा होने की कारण नाव लेकर सैर नहीं कर सके। सामने ढेर सारे कबूतर थे। हमने कबूतरों को दाने खिलाए और फोटो ली। बहुत वर्षों बाद भी यह स्मारक मजबूत दिखता है।

भारत की प्राचीन कलाएँ

चित्र - करीना शाह (एडिसन पाठशाला, मध्यमा-३), लेख - रश्मि शाह (अभिभावक)

वारली एक स्वदेशी जनजाति या आदिवासी हैं। ये महाराष्ट्र और गुजरात की सीमा के तटीय क्षेत्रों और आसपास के पहाड़ों में रहते हैं। वारली जनजाति की अपनी खुद कि हिंदू मान्यताओं, परंपराओं, संस्कृति - संक्रमण हैं जिनको उन्होंने अपनाया है। वारली अपनी वारली चित्रकला के लिये भी प्रसिद्ध है। वारली चित्रों में बहुत ही बुनियादी ग्राफिक शब्दावली: एक चक्र और एक त्रिकोण का उपयोग किया गया है। वृत्त और त्रिकोण प्रकृति के प्रेक्षण से आते हैं, वृत्त सूर्य और चंद्रमा का प्रतिनिधित्व करता है, त्रिकोण पहाड़ों और कोणीय पेड़ों से आया है। वारली चित्रों में केंद्रीय आकृति शिकार, मछली पकड़ना और खेती करना, त्योहार और नृत्य, पेड़ और पशुओं को चित्रित करते हुए दृश्यों से घिरी हुई है। मानव और पशुओं के शरीरों का प्रतिनिधित्व सिरों से जुड़े हुए दो त्रिकोण करते हैं, ऊपरी त्रिकोण धड़ और निचला त्रिकोण पेडू को दर्शाता है। उनका अनिश्चित संतुलन ब्रह्मांड और जोड़े के संतुलन का प्रतीक है जो व्यावहारिक और मनोरंजक रूप से शरीरों को जीवंत करता है। अनुष्ठान चित्रकारी आमतौर पर झोपड़ियों के अंदर की जाती है। दीवारें शाखाओं, मिट्टी और गाय के गोबर के मिश्रण से बनी हैं जो भित्ति चित्रकारी के लिए गेरू लाल पृष्ठभूमि प्रदान करती है। वारली अपने चित्रों के लिए केवल सफ़ेद का उपयोग करते हैं। सफ़ेद रंग चावल की लई और पानी का मिश्रण है जिसे गोंद जोड़ती है। बांस की एक छड़ी को सिरे पर से चबाकर नरम करके के रूप में उपयोग करते हैं। भित्ति चित्र शादियों या फसल जैसे विशेष अवसरों के लिए ही बनाए जाते हैं। १९७० के दशक तूलिका में इस अनुष्ठान कला ने तब एक मोड़ लिया जब जीव्या सोमा माशे ने किसी विशेष अवसर के लिए नहीं बल्कि कला के लिए चित्रकारी करना शुरू किया।

मधुबनी चित्रकला अथवा **मिथिला पेंटिंग**

मिथिला क्षेत्र जैसे बिहार के दरभंगा, पूर्णिया, सहरसा, मुजफ्फरपुर, मधुबनी एवं नेपाल के कुछ क्षेत्रों की प्रमुख चित्रकला है। प्रारम्भ में रंगोली के रूप में रहने के बाद यह कला धीरे-धीरे आधुनिक रूप में कपड़ों, दीवारों एवं कागज पर उतर आई है। मिथिला की औरतों द्वारा शुरू की गई इस घरेलू चित्रकला को पुरुषों ने भी अपना लिया है। वर्तमान में मिथिला पेंटिंग के कलाकारों ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मधुबनी व मिथिला पेंटिंग के सम्मान को और बढ़ाये जाने को लेकर तकरीबन १०,००० वर्ग फुट में मधुबनी रेलवे स्टेशन की दीवारों को मिथिला पेंटिंग की कलाकृतियों से सरोबार किया। उनकी यह पहल निःशुल्क अर्थात श्रमदान के रूप में की गई। श्रमदान स्वरूप की गईं इन अद्भुत कलाकृतियों को विदेशी पर्यटकों व सेनानियों द्वारा खूब पसंद किया जा रहा है। माना जाता है ये चित्र राजा जनक ने राम-सीता के विवाह के दौरान महिला कलाकारों से बनवाए थे। मिथिला क्षेत्र के कई गांवों की महिलाएँ इस कला में दक्ष हैं। अपने असली रूप में तो ये पेंटिंग गांवों की मिट्टी से लीपी गई झोपड़ियों में देखने को मिलती थी, लेकिन इसे अब कपड़े या फिर पेपर के कैनवास पर खूब बनाया जाता है। चटख रंगों का इस्तेमाल खूब किया जाता है। जैसे गहरा लाल रंग, हरा, नीला और काला। कुछ हल्के रंगों से भी चित्र में निखार लाया जाता है, जैसे- पीला, गुलाबी और नींबू रंग। यह जानकर हैरानी होगी की इन रंगों को घरेलू चीजों से ही बनाया जाता है, जैसे- हल्दी, केले के पत्ते, लाल रंग के लिए पीपल की छाल का प्रयोग किया जाता है। भित्ति चित्रों के अलावा अल्पना का भी बिहार में काफी चलन है। इसे बैठक या फिर दरवाजे के बाहर बनाया जाता है। पहले इसे इसलिए बनाया जाता था ताकि खेतों में फसल की पैदावार अच्छी हो लेकिन आजकल इसे घर के शुभ कामों में बनाया जाता है। चित्र बनाने के लिए माचिस की तीली व बाँस की कलम को प्रयोग में लाया जाता है। रंग की पकड़ बनाने के लिए बबूल के वृक्ष की गोंद को मिलाया जाता है।

समय के साथ मधुबनी चित्र को बनाने के पीछे के मायने भी बदल चुके हैं, लेकिन यह कला अपने आप में इतना कुछ समेटे हुए हैं कि यह आज भी कला के कद्रदानों की चुनिन्दा पसंद में से है।

भारत का इतिहास

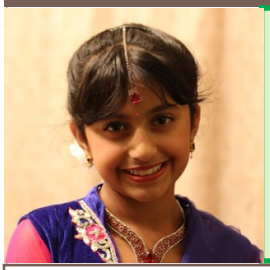

मेरा नाम ऋचा शर्मा है। मैं आठवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मुझे तैरना और बांसुरी बजाना पसंद है। मैं लॉरेन्सेविल हिंदी पाठशाला में पढ़ती हूँ। मुझे हिंदी सीखना बहुत अच्छा लगता है। मुझे पाठशाला में वालंटियर करना अच्छा लगता है। मेरा हिंदी स्कूल का सफर बहुत यादगार रहा है।

भारत-आर्य संस्कृति का उदय

दक्षिण एशिया में मनुष्यों के सबसे पुराने प्रमाण दो मिलियन वर्ष पूर्व के हैं। सिंधु घाटी सांस्कृतिक प्रणाली की शुरुआती शताब्दियों में गिरावट आई। करीब १५०० ईसा पूर्व में इंडो-आर्यन कल्चर इस क्षेत्र पर हावी होने लगे। इंडो-आर्यन कल्चर संस्कृत, ग्रीक, लैटिन, और Avestan से संबंधित भाषा के साथ जुड़ा हुआ है। ऋग्वेद (इंडो-आर्यों की जटिल रस्म प्रणाली से जुड़े ग्रंथ) इस काल में लिखा गया था। इन ग्रंथों में हिंदू धर्म का महत्वपूर्ण आधार है।

प्रारंभिक और शास्त्रीय का समय

हिंदू धर्म से बौद्ध और जैन धर्म जैसे नए धार्मिक झुकाव पैदा हुए। राजवंश गुप्ता साम्राज्य से एकजुट हुआ। यह भारतीय कला और साहित्य के शासनकाल के "शास्त्रीय" काल के रूप में जाना जाता था।

"मध्यकालीन" अवधि

इस अवधि में मजबूत क्षेत्रीय केंद्रों की वृद्धि और उपमहाद्वीप में एक अति व्यापी राजनीतिक प्राधिकरण की कमी की विशेषता थी। यह हमले तुर्की और मध्य एशियाई शासकों द्वारा शुरू किए गए थे और दिल्ली में कानून को एकीकृत किया गया था। फिर दिल्ली पेशवा बाजीराव से शासित हुआ। वर्तमान राजस्थान और पंजाब में राजपूत शासकों ने शक्तिशाली छोटे राज्य स्थापित किए थे।

मुगलों साम्राज्य

सन् १५२६ में बाबर द्वारा मुगल साम्राज्य की स्थापना हुई। उनके पुत्र हुमायूं १५४० ने भारत में मुगल शासन की स्थापना की थी और अकबर ने उत्तर में इसका विस्तार किया। पंजाब हिल्स (अब हिमाचल प्रदेश) अकबर के बेटे के शासन काल में मुगल प्रभाव में लाया गया था। भारतीयों पर इस्लाम धर्म लागू किया गया था।

ब्रिटिश शासन

यद्यपि यूरोपीय लोग दक्षिण एशिया में सत्रहवीं शताब्दी की शुरुआत से व्यापारियों के रूप में मौजूद थे, लेकिन अठारहवीं शताब्दी के मध्य तक ही ब्रिटिश इस क्षेत्र में शासन स्थापित कर पाए थे। १८५७ में भारतीय स्वतंत्रता का पहला युद्ध हुआ।

भारत के आधुनिक राष्ट्र-राज्य, पाकिस्तान, बांग्लादेश और नेपाल

१९४७ में पाकिस्तान (पूर्व और पश्चिम) और भारत के स्वतंत्र राष्ट्रों का गठन भारत में ब्रिटिश साम्राज्य से हुआ। विभाजन के कारण काफी हिंसा हुई। १९७१ में पूर्वी और पश्चिमी पाकिस्तान, पाकिस्तान और बांग्लादेश में विभाजित हो गए। हालांकि इन देशों के बीच संबंध तनावग्रस्त हैं, लेकिन वे कई सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संबंधों को साझा करते हैं।

देवेशी भारद्वाज

नानी की कहानी

नमस्ते! मेरा नाम देवेशी भारद्वाज है। मैं चौथी कक्षा में पढ़ती हूँ और हिंदी यू.एस.ए. की एडिसन पाठशाला के मध्यमा-१ स्तर में अनुभा अग्रवाल जी एवं मनीषा मेनन जी की कक्षा में पढ़ती हूँ। मुझे हिन्दी पढ़ना और बोलना बहुत अच्छा लगता है। मेरा परिवार हमेशा घर में हिंदी में ही बात करता है। मेरा मनपसंद नाटक तेनाली राम है। मैं जब भी हिंदी में बात करती हूँ तो सबको बड़ी हैरानी होती है कि मेरी हिन्दी इतनी अच्छी कैसे है और यह सुनकर मुझे बहुत अच्छा लगता है। इस लेख को सुधारने में मेरी माता जी और मेरी शिक्षिकाओं ने भी मेरी सहायता की है।

मुझे अपनी नानी से कहानियाँ सुनना बहुत अच्छा लगता है। इस बार की गर्मी की छुट्टियों में जब मेरी नानी हमारे यहाँ आईं थीं तो मैंने उनको हमेशा की तरह कहानी सुनाने के लिये कहा। मेरी नानी के पिताजी एक आर्मी ऑफिसर थे और इस वजह से उनको भारत के इतिहास की बहुत सी बातें पता थीं।

इस बार उन्होंने मुझे उस ऐतिहासिक जगह के बारे में बताया जिसको काला पानी के नाम से भी जाना जाता है और वह पोर्ट ब्लेयर में एक जेल है। आज मैं आप लोगों को वहाँ के बारे में बताऊँगी। इस जेल को इसलिए बनाया गया था ताकि भारत के स्वतंत्रता-सेनानियों को जंजीर से बांध दिया जाए और उन्हें अंग्रेजों के लिए भवन, जेल और बंदरगाह आदि सुविधाओं के निर्माण में काम करने के लिए मजबूर किया जाए। यह १८९६ से १९०६ तक बनाया गया और इसे बनाने में कुल १० वर्ष लगे। मुख्य लोग डेविड बैरी और सैन्य चिकित्सक मेजर जेम्स पैटिसन वाकर थे। मार्च १८६८ में २३८ कैदियों ने भागने की कोशिश की लेकिन वे अप्रैल में पकड़े गए, जिनमें से ८७ क़ैदियों को फांसी दे दी गई।

इस जेल में भगत सिंह और महावीर सिंह भी क़ैद थे। महावीर सिंह भूख हड़ताल पर चले गए, लेकिन जब अधिकारियों ने उन्हें जबरदस्ती दूध पिलाने की कोशिश की तो दूध उनके फेफड़ों में चला गया। फिर उनके शव को समुद्र में फेंक दिया गया था। मार्च १९३१ में भगत सिंह अंग्रेजों के खिलाफ कुछ कार्यवाही करते हुए पकड़े गए थे और अंग्रेजों ने उन्हें फाँसी दे दी थी। जेल में बाकी क़ैदियों के साथ बहुत बुरा व्यवहार किया जाता था जिसको सुनकर मुझे थोड़ा डर भी लगा। ऐसी और भी बहुत सी घटनाएँ थीं जिनको सुनने के बाद मेरा मन उनके लिये और भी गर्व से भर गया। इन घटनाओं के बारे में सुनने के बाद मैं अपने देश के बारे में और भी अधिक गर्वित महसूस करती हूँ क्योंकि इन लोगों ने अपनी जान जोखिम में डाल दी और अपनी जान गंवा दी ताकि हमको आजादी मिल सके।

इस कहानी की तरह मैंने अपनी नानी से और भी कई कहानियाँ सुनी हैं। मुझे उम्मीद है कि इस कहानी को पढ़ने के बाद आपको भी गर्व महसूस होगा कि आप इस बहादुर और महान देश से हैं।

विल्टन हिंदी पाठशाला

मेरा नाम गरिमा अग्रवाल है। मैं मध्यमा-२ की स्तर संचालिका के साथ-साथ विल्टन कनेक्टिकट पाठशाला में पिछले ९ वर्षों से अध्यापिका भी हूँ। मेरे पति व दोनों बच्चे भी हिन्दी यू.एस.ए. से जुड़े हुए हैं। बच्चों को पढ़ाने के अलावा मुझे नए-नए व्यंजन बनाना व किताबें पढ़ने का बहुत शौक है।

अंग्रेज़ों का राज

माधव सुभ्रमण्यन

एक आम हिन्दुस्तानी की ज़िन्दगी स्वतन्त्रता से पहले कैसी थी? हमारी स्वतन्त्रता की लड़ाई को समझने के लिये यह जानना बहुत ज़रूरी है। आम हिन्दुस्तानी को अंग्रेज़ तंग करते थे, लेकिन राजाओं का आदर करते थे। क्या यह सही था? नहीं! अंग्रेज़ों के राज के दौरान १८५७ में भारतीय फ़ौजियों ने विद्रोह किया। जब तक गाँधी जी दक्षिण अफ़्रीका से आये, हिन्दुस्तानी अंग्रेजों के नीचे दबे हुए थे। सत्याग्रह के माध्यम से गाँधी जी ने हमें स्वतन्त्रता दिलवाई। महात्मा गाँधी की जय!

शिवाजी महाराज

तनुष वानरसे

शिवाजी एक मराठा राजा थे। शिवाजी मुगलों से लड़े और महाराष्ट्र को बचाया। वे बहादुर, बुद्धिमान और निडर शासक थे।शिवाजी ने चतुर युक्ति से अपने दुश्मनो को पराजित किया। शिवाजी ने छापामार युद्ध की नयी शैली विकसित की और वे रात के अँधेरे में दुश्मनों पर हमला करते थे। उन्होंने अपने नेतृत्व से सारे मराठों को एक बनाया। जब अफजल खान ने शिवाजी को धोखे से मारना चाहा, तब शिवाजी ने अपने बाघ नख से उसे ही मार गिराया। अगर शिवाजी नहीं होते तो भारत का इतिहास बहुत ही अलग होता।

KUMON
Two to three hours of learning a week helps prevent:
2 MONTHS
reading skills loss
2.6 MONTHS
math skills loss
6 WEEKS
of relearning in fall
TO LEARN MORE ABOUT SUMMER LEARNING LOSS
VISIT KUMON.COM/RESOURCES
Make
SUMMERTIME
a Smarter Time
ENROLL NOW!
SAVE UP TO
$50*
Ages 3+
SCHEDULE YOUR FREE ORIENTATION TODAY!
There's a Kumon Math and Reading Center near you!
800.ABC.MATH
www.Kumon.com
* Enroll between 6/1/19 and 6/30/19 to waive the Enrollment Fee of up to $50. The Enrollment Fee includes services such as processing, student evaluation and lesson plan development. Enrollment Fee waiver only valid at participating Kumon Math and Reading Centers. Most Kumon Centers are independently owned and operated. Additional fees may apply. See Center for applicable terms and conditions. © 2019 Kumon North America, Inc. All rights reserved.

मात्रा परियोजना

प्लेन्सबोरो हिन्दी पाठशाला, मध्यमा-१

अध्यापिकाएँ: उल्का पोवार, पल्लवी विक्रम

इस वर्ष हमारी कक्षा के छात्र बहुत अधिक उत्साही और रचनात्मक हैं। हमने उनसे कहा कि वे इस वर्ष अब तक सिखाई गई मात्राओं पर एक परियोजना बनाएँ। तो वे यहाँ प्रस्तुत इस सुंदर परियोजना विचार के साथ आये हैं|

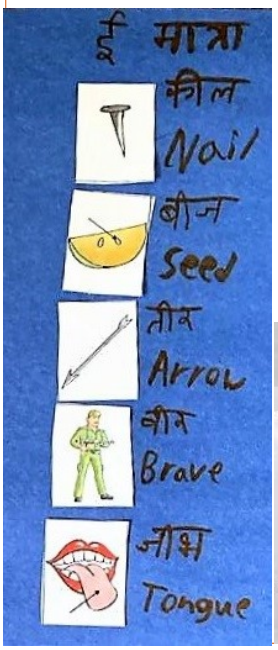

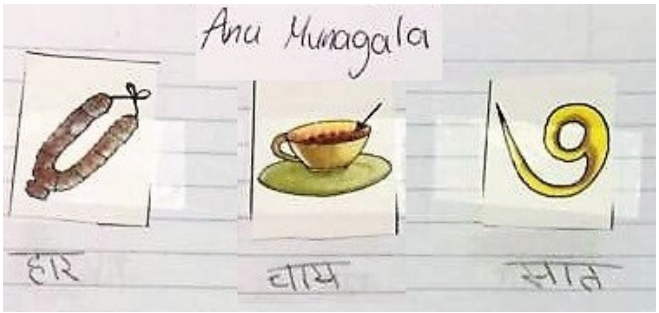

"आ" की मात्रा TANVISRI MUNAGALA
NEWS
समाचार
DOOR
दरवाजा
SWORD
तलवार
GOD
भगवान

आ की मात्रा
Aditi Patle
गाजर
(carrot)
जाल
(Net)
काला
(black)
गाय
(cow)

ऊ
चूड़ी
Bangle
पूड़ी
Fried Indian Bread

गाय
Cow
हाथ
hand
आ

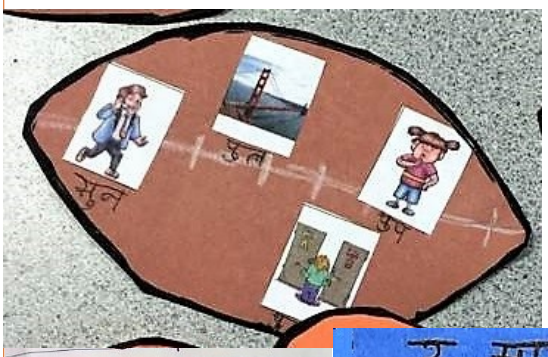

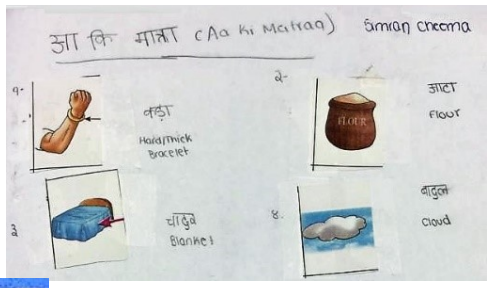

आ कि मात्रा (Aa ki Matraa)
Simran cheema
कड़ा
Hard/Thick Bracelet
आटा
Flour
चादर
Blanket
बादल
Cloud

पशु
Animal
वायु
Wind / Air
पुजारी
Priest

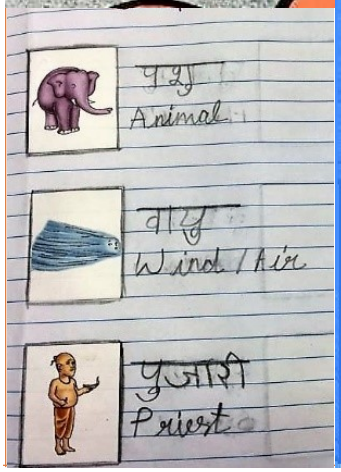

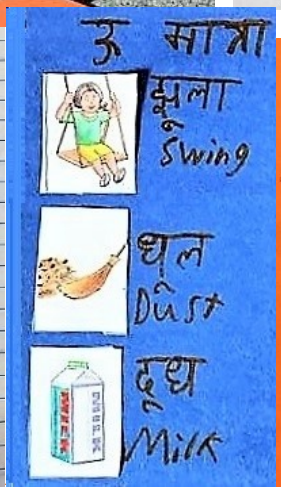

ऊ मात्रा
झूला
Swing
धूल
Dust
दूध
Milk

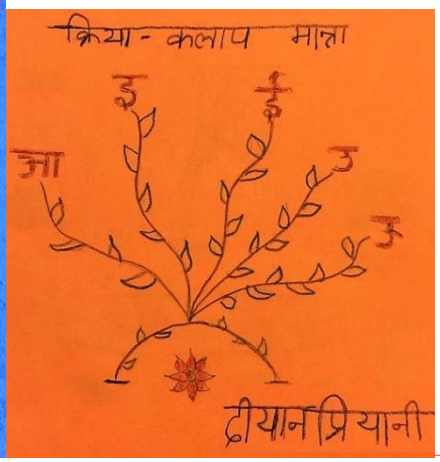

क्रिया-कलाप मात्रा
आ
इ
ई
उ
ऊ
दीयानप्रियानी

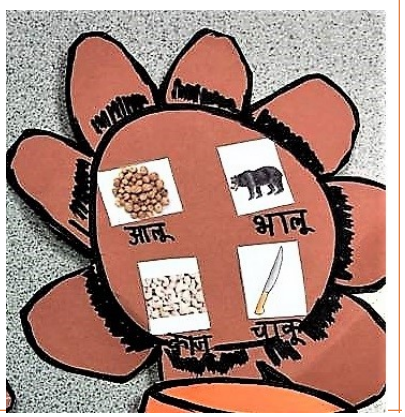

आलू
भालू

मेरी हिन्दी कक्षा

चेरी हिल हिन्दी पाठशाला मध्यमा-१

अध्यापिकाएँ: दीपाली जैन, वंदना वर्मा

इस वर्ष मध्यमा-१ के छात्रों ने अपनी कक्षा में अब तक जो सीखा, उस अनुभव की कुछ पंक्तियाँ लिखी हैं। उन्होंने यह भी बताया कि वे हिन्दी पाठशाला में अपनी भाषा और संस्कृति के बारे में तो ज्ञान पाते ही हैं, और साथ-साथ नये मित्र भी बनाते हैं। यही कारण है कि हिन्दी पाठशाला एक पाठशाला ही नहीं बल्कि एक विस्तृत परिवार है।

मैंने मध्यमा-१ में बारह खड़ी सीखी और एक से पचास तक गिनती सीखी!

आरव कौशल

मैंने हिन्दी स्कूल में नये दोस्त बनाए!

कुणाल प्रभाकर

हमने गणेश आरती भी सीखी!

वैष्णवी कट्टामूरि

मैंने भारतीय संस्कृति और संस्कार सीखे!

शिरव गुप्ता

मेरी कक्षा में मैंने दीपावली नामक रोशनी के त्योहार के बारे में सीखा|

दीप्ति रेड्डी

मैंने हिन्दी में छोटे छोटे वाक्य बनाना सीखा!

निखिल सुब्रमण्यम

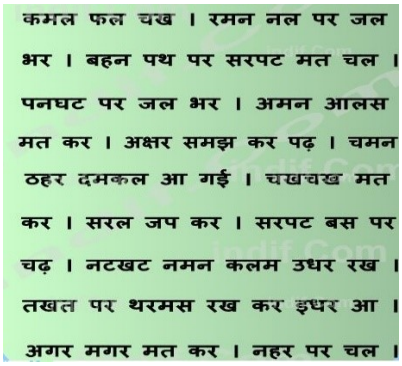

मैंने हिन्दी कक्षा में वर्णमाला, अंक, और मात्राएँ सीखीं!

अंश जग्गी

हमने हिन्दी में वाक्य सुधारना भी सीखा!

अरनव सिंह

मैंने मात्रा के साथ शब्द बनाना भी सीखा !

पूजा जोशी

मैं अब छोटी मात्रा वाले शब्द लिख सकती हूँ! मुझे हिन्दी सीखना अच्छा लगता है!

अन्वी सिंह

मैंने भारत देश के अनेक त्योहारों के बारे में सीखा !

संचिता सुब्रमण्यम

भारतीय इतिहास के हैं झरोखे

मेरे गृह नगर, प्रदेश अनोखे

साउथ ब्रंसविक, मध्यमा-१

(इन्दु श्रीवास्तव, निकिता जैन, निखिला ओब्बिनेनी)

नमस्ते, हमारी कक्षा (छात्रों और गुरुओं) ने अपने-अपने भारतीय शहरों और प्रदेशों का कुछ इतिहास यहाँ शब्दों और चित्रों को जोड़ कर लिखा है। ये झरोखे आपको घर बैठे ही भारत की सुखद सैर करा देंगे।

चंडीगढ़ शहर पंजाब और हरयाणा दो प्रदेशों की राजधानी है। चंडीगढ़ का मतलब चंडी देवी का किला है। हिमालय के तल के पास बसे इस शहर का शासकीय प्रतीक एक खुला हाथ शांति का प्रतीक है। सुंदर रॉक गार्डन यहाँ है। ईशान डोगर

मध्यप्रदेश में **इंदौर** नगर अपनी भव्य इमारतों, मंदिरों और बढ़िया भोजन के लिए जाना जाता है। रजवाड़ा होलकर राजवंश के शासकों की ऐतिहासिक हवेली है। २०० वर्ष पुराना रजवाड़ा पूरी तरह लकड़ी और लोहे से बना है। इंदौर का काँच मंदिर, रंग बिरंगे काँच से बना एक मनमोहक जैन मंदिर है। (निकिता जैन)

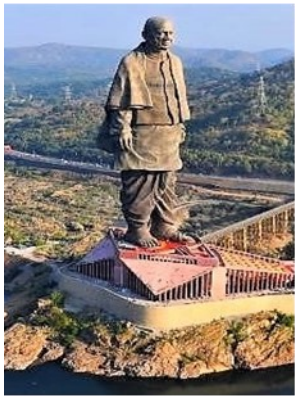

गुजरात राज्य में दुनिया की सबसे ऊँची प्रतिमा है और उसका नाम "स्टैच्यू ऑफ युनिटी" है। सरदार वल्लभभाई पटेल की यह प्रतिमा USA की "स्टैच्यू ऑफ लिबर्टी" से दोगुनी ऊँची है। गुजरात और सरदार पटेल जी का भारत की एकता और आजादी में बड़ा योगदान था। रीया शाह

केरल प्राकृतिक सुन्दरता, कथकली, मोहिनीअट्टम आदि सांस्कृतिक धरोहरों और आय का सबसे अधिक साक्षर प्रदेश है। नील नयनानी

लखनऊ शहर उत्तर प्रदेश की राजधानी है। काकोरी केस, इंडियन नेशनल कांग्रेस का पहला अधिवेशन, संगीत, दशहरी आम, दिंडी, लखनवी कुर्ते और अच्छे खाने के लिए लखनऊ जाना जाता है। विवान देव

पंजाब के अमृतसर शहर में हरमंदर साहब बहुत बड़ा तीर्थ स्थान है। इसके ऊपर का भाग सोने से जड़ा है और चारों ओर अमरित सरोवर है। हरकमल

बिहार के नालंदा जिले में ४५० ई. में बना नालंदा विश्वविद्यालय दुनिया का सबसे प्राचीन विश्व विद्यालय है। यहाँ विभिन्न देशों के दस हजार से अधिक छात्र निवास और अध्ययन करते थे। शौर्य रंजन

मध्य प्रदेश राज्य की राजधानी भोपाल, राजा भोज और तालों की नगरी है। भारत भवन, मानव संग्रहालय और भीमबेटका- जहाँ पाषाणयुगी भीमकाय शिलायें, चित्रकारी, गुफाएं, आदि हैं - यहाँ के कुछ मुख्य ऐतिहासिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक धरोहर हैं। (इन्दु श्रीवास्तव)

महाराष्ट्र में मराठी भाषा, पोषक में नौ-वारी साड़ी और धोती कुरता, और खाने में पूरण पोली विशेष हैं। महाराष्ट्र में दिवाली, गुढ़ी पडवा और गणेश उत्सव प्रधान रूप से मनाये जाते हैं। अदिती बापे

तमिलनाडु राज्य के मदुरई शहर में मीनाक्षी मंदिर बहुत प्रसिद्ध है। मदुरई के किसानों से मिलने के बाद ही महात्मा गांधीजी ने उन किसानों की तरह धोती पहनना शुरू किया था। हाशिनी थिरुकोंडा

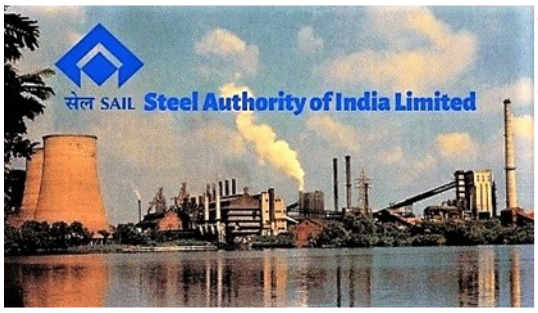

दिल्ली नगर सदियों से भारत की राजधानी रहा है। दिल्ली यमुना नदी के किनारे बसा है। कुतुब मीनार, लाल किला, संसद भवन, राष्ट्रपति भवन, यमुना नदी और इंडिया गेट आदि ऐतिहासिक इमारतें यहाँ की राजसी, प्रशासकीय धरोहर हैं। त्रिशा गोविल

भिलाई में भारत का सबसे बड़ा इस्पात संयंत्र है। भिलाई इस्पात संयंत्र भारत के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू का सपना था। यह मध्य भारत का प्रमुख शिक्षा केंद्र भी है। ओम भास्कर

'मोतियों का शहर' हैदराबाद तेलंगाना राज्य की राजधानी है। यहाँ चारमिनार, हुसैन सागर झील, गोलकुंडा किला है। हैदराबादी बिरयानी, कोहिनूर हीरा और ईरानी चाय का बड़ा नाम है। कार्तिक संजय कुमार

भारत के राष्ट्रीय ध्वज के रचनाकार पिंगली वेंकैया, आंध्र प्रदेश से हैं। कबड्डी राज्य का खेल और कुचिपुड़ी राज्य का नृत्य है। तिरुमाला वेंकटेश्वर मंदिर में प्रतिवर्ष लाखों तीर्थयात्री दर्शन करते हैं। (निखिला ओब्बिनेनी)

वर्षा बालाजी चेन्नई शहर तमिलनाडु राज्य की राजधानी है। चेन्नई को पहले मद्रास भी कहते थे। यहाँ सुंदर शिल्पकारी के प्राचीन मंदिर कपालीश्वर और पार्थसारथी हैं।

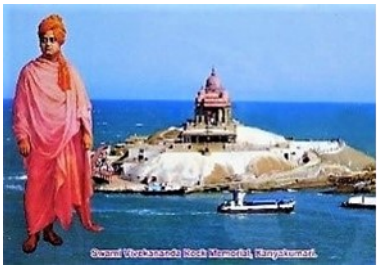

कन्याकुमारी तमिलनाडु में भारत का दक्षिणी बिंदु है। विवेकानंद रॉक, शक्तिपीठ, गाँधी स्मारक, कोर्टालम झरना, बाल अम्बिका मंदिर आदि कई दर्शनीय स्थान कन्याकुमारी में हैं। फहिमा

Athidhi™
DOSA & BIRYANI POINT

ATHIDHI RESTAURANT
Authentic North & South Indian Cuisine (Veg and Non-Veg)

Unlimited Dosa Night - Tuesday
Unlimited Biryani Night - Wednesday
Tiffin and Chat Night – Thursday
Friday – Dinner Buffet
Saturday & Sunday – Lunch & Dinner Buffet
Monday – Closed

Banquet Hall – 120 person capacity
Dine In – Take out – Catering

PH : 732-525-2055
520 Ernston Rd, Parlin, NJ-08859
Www.AthidhiParlin.Com

भारतीय स्वतंत्रता सेनानी

सुरभि अग्रवाल, शिक्षिका वुड्ब्रिज हिंदी पाठशाला, मध्यमा-१

मेरा नाम सुरभि अग्रवाल है। मैं वुड्ब्रिज पाठशाला में पिछले पाँच वर्षों से मध्यमा-१ के बच्चों को हिंदी सिखा रही हूँ। मेरे दोनों बच्चे भी हिंदी पाठशाला आते हैं। इस वर्ष से मेरे साथ सह-शिक्षक अमित गुप्ता जी भी हैं। हमने जनवरी प्रोजेक्ट के लिये विद्यार्थियों को भारतीय स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के बारे में लिखकर और उनका मुखौटा बना कर लाने के लिए कहा था। सभी विद्यार्थियों ने अपने कार्य को बहुत ही सुंदर तरीके से पूरा किया। इसके पश्चात् हमने उन सभी स्वतंत्रता सेनानियों के बारे में और उनके दिए गये नारों की चर्चा की।

क्या आप बता सकते हैं कि ये मुखौटे किन स्वतंत्रता सेनानियों के हैं?

भारत के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी

• सेनानी का नाम : भगत सिंह

• जन्म तिथि : भगत सिंह का जन्म २८ सितम्बर १९०७ को बंगा, पाकिस्तान में हुआ था।

• मृत्यु : भगत सिंह की मृत्यु २३ मार्च १९३१ को लाहौर, पाकिस्तान में हुई थी।

• नारा : इन्कलाब जिंदाबाद

नाम : सरन्या सिरोठिया

भारत के स्वतंत्रता संग्राम सैनानी

सैनानी का नाम : चन्द्र शेखर आज़ाद

जन्म तिथि : जुलाई २३, १९०६

जन्म स्थान : भावरा गांव

मृत्यु : फरवरी २७ १९३१

नारा : दुश्मन की गोलियों का सामना हम करेंगे, आज़ाद हैं आज़ाद ही रहेंगे।

उपलब्धियाँ : काकोरी ट्रेन चोरी

सामैया अरोड़ा

भारत के स्वतंत्रता संग्राम सैनानी

• सैनानी का नाम : महात्मा गाँधी

• जन्म तिथि : महात्मा गाँधी का जन्म २ अक्टूबर, १८६९ में हुआ था।

• जन्म स्थान : पोरबन्दर, गुजरात

• मृत्यु : ३०, जनवरी १९४८ को महात्मा गाँधी की मौत नई दिल्ली में हुई थी।

• नारा : करो या मरो

• उपलब्धियाँ : उनका भारत की आजादी दिलवाने में अहम योगदान था। उन्होंने १९४२ में भारत छोड़ो आंदोलन शुरू किया था।

भारत के स्वतंत्रता संग्राम सैनानी

• सैनानी का नाम : सरदार वल्लभ भाई पटेल

• जन्म तिथि : सरदार वल्लभ का जन्म 31 अक्टूबर १८७५ को हुआ था।

• जन्म स्थान : सरदार वल्लभ का जन्म नाडियाड, गुजरात भारत में हुआ था।

• मृत्यु : १५ दिसम्बर १९५० को सरदार वल्लभ की मौत हो गई।

नारा : कर मत दो

उपलब्धियां : उनकी उपलब्धियों में सर्वोत्तम भारत को एक करना था। उन्हें भारत रत्न से सम्मानित किया गया।

उर्वी असौरी

भारत के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी

सैनानी का नाम — राम प्रसाद बिस्मिल

जन्म तिथि — जून ११, १८९७

जन्म स्थान — शाहजहाँपुर भारत

मृत्यु — दिसंबर १९, १९२७

नारा — सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है देखना है ज़ोर कितना बाजुए कातिल में है।

राम प्रसाद बिस्मिल भारत के महान स्वतन्त्रता सेनानी थे। वह उच्च कोटि के कवि शायर और साहित्यकार भी थे। वह एक स्वतन्त्रता सेनानी होने के साथ ही वे हिंदी और उर्दू के कवि थे।

Anushka Vinothkumar

भारत के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी

रिया अरोरा Ria Arora

• सैनानी का नाम : सुभाष चन्द्र बोस

• जन्म तिथि : 01-23-1897

• जन्म स्थान : कटक, ओडिशा

• मृत्यु : 08-18-1945

• नारा : तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा

भारत के स्वतंत्रता संग्राम सैनानी

सैनानी का नाम : रानी लक्ष्मी बाई
जन्म तिथि : रानी लक्ष्मी बाई का जन्म १६ नवंबर १८२८ में हुआ था।
जन्म स्थान : रानी लक्ष्मी बाई का जन्म वाराणसी उत्तरप्रदेश, भारत में हुआ था।
मृत्यु : १८ जून १८५८ को रानी लक्ष्मी बाई की मृत्यु हो गई।
नारा : "मैं अपनी झाँसी नहीं दूँगी"
उपलब्धियाँ : रानी लक्ष्मी बाई ने हमारे देश और अपने राज्य झाँसी की स्वतंत्रता के लिए ब्रिटिश राज्य के खिलाफ लड़ने का साहस किया।

द्रिशा रुटा

समाथरा वोहरा

भारत के स्वतंत्रता संग्राम सैनानी

- सैनानी का नाम : बंकिम चन्द्र चर्जी
- जन्म तिथि : जून २७, १८३८
- जन्म स्थान : नेहाती, भारत
- मृत्यु : अप्रैल ८, १८९४
- नारा : वन्दे मातरम

वन्दे मातरम्। वन्दे मातरम्॥
सुजलां सुफलां मलयज-शीतलाम्।
शस्य-श्यामलां मातरम्। वन्दे मातरम्॥
शुभ्र ज्योत्स्नां-पुलकित यामिनीम्।
फुल्लकुसुमित-द्रुमदल शोभिनीम्॥
सुहासिनीं सुमधुर भाषिणीम्।
सुखदां वरदां मातरम्॥ वन्दे मातरम्॥

शिराज

भारत के स्वतंत्रता संग्राम सैनानी

- सैनानी का नाम : जवाहर लाल नेहरु
- जन्म तिथि : जवाहर लाल नेहरु का जन्म १४ नवम्बर १८८९ को हुआ था।
- जन्म स्थान : जवाहर लाल नेहरु का जन्म इलाहाबाद भारत में हुआ था।
- मृत्यु : 27 मई १९६४ को जवाहर लाल नेहरु की मृत्यु हुई थी।
- नारा : जब तक आपके पास संयम और धैर्य नहीं है तब तक आपके सपने राख में मिलते रहेंगे।

भारत के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी

सेनानी का नाम : मुहम्मद इकबाल
जन्म तिथि : इकबाल का जन्म ९ नवम्बर १८७७ को हुआ था।
जन्म स्थान : इकबाल का जन्म सियालकोट पाकिस्तान में हुआ था।
मृत्यु : २१ अप्रेल १९३८ को मुहम्मद इकबाल की मौत हो गई।
नारा : सारे जहान से अच्छा
उपलब्धियाँ – इकबाल बहुत नामी कवि थे।
– इकबाल की कविता से प्रभावित होकर ब्रिटिश सरकार ने इन्हें 'सर' की उपाधि दी थी।

नील

नागा हरजित बोरा

भारत के स्वतंत्रा संग्राम सैनानी

सेनानी का नाम – लाल बहादुर शास्त्री
जन्म तिथि – १०/२/१९०४
जन्म स्थान – मुगलसराय, भारत
मृत्यु – ११/१/१९६६, ताशकंद, उज्बेकिस्तान
नारा – "जय जवान, जय किसान"
सिद्धियाँ – भारत रत्ना मिला। उत्तर प्रदेश के पुलिस और परिवहन मंत्री बन गए। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के महासचिव बन गए। राज्यसभा के लिए चुने गए और वो रेल और परिवहन के मंत्री बन गए। वह दूसरी बार वाणिज्य और उद्योग के मंत्री बन गए और वो प्रधान मंत्री भी बन गए।

भारत के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी

- सैनानी का नाम : मदन मोहन मालविय
- जन्म तिथि : १२/२५/१८६१
- जन्म स्थान : इलाहबाद
- मृत्यु : १२/११/१९४६
- नारा : सत्यमेव जयते

प्रांशु

काव्या सिंह

मध्यमा-२, ईस्ट ब्रनस्विक

हिन्दी पाठशाला

नमस्ते, मुझे किताबें पढ़ना बहुत अच्छा लगता है। भारत के बारे में हिंदी की किताबों से मुझे बहुत सीखने को मिलता है। मुझे आर्ट, संगीत और टेनिस भी अच्छा लगता है। मैं कथक और हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत सीखती हूँ।

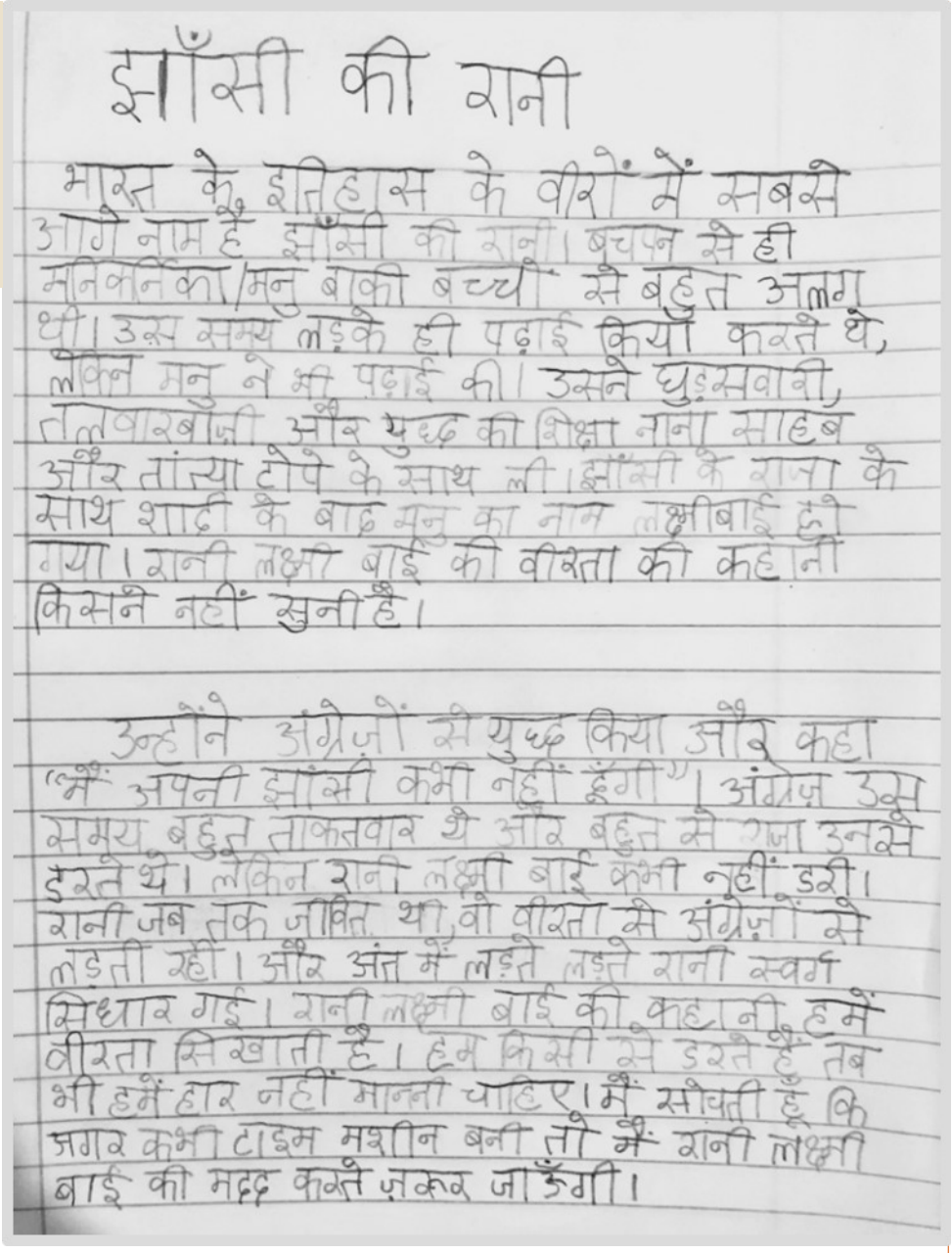

झाँसी की रानी

भारत के इतिहास के वीरों में सबसे आगे नाम है झाँसी की रानी। बचपन से ही मनिकर्णिका/मनु बाकी बच्चों से बहुत अलग थी। उस समय लड़के ही पढ़ाई किया करते थे, लेकिन मनु ने भी पढ़ाई की। उसने घुड़सवारी, तलवारबाज़ी और युद्ध की शिक्षा नाना साहब और तांत्या टोपे के साथ ली। झाँसी के राजा के साथ शादी के बाद मनु का नाम लक्ष्मीबाई हो गया। रानी लक्ष्मी बाई की वीरता की कहानी किसने नहीं सुनी है।

उन्होंने अंग्रेज़ों से युद्ध किया और कहा "मैं अपनी झांसी कभी नहीं दूंगी"। अंग्रेज़ उस समय बहुत ताकतवर थे और बहुत से राजा उनसे डरते थे। लेकिन रानी लक्ष्मी बाई कभी नहीं डरी। रानी जब तक जीवित थी, वो वीरता से अंग्रेज़ों से लड़ती रही। और अंत में लड़ते लड़ते रानी स्वर्ग सिधार गई। रानी लक्ष्मी बाई की कहानी हमें वीरता सिखाती है। हम किसी से डरते हैं तब भी हमें हार नहीं माननी चाहिए। मैं सोचती हूँ कि अगर कभी टाइम मशीन बनी तो मैं रानी लक्ष्मी बाई की मदद करने ज़रूर जाऊँगी।

चेतना लूमबा

ईस्ट ब्रन्सविक – मध्यमा-२

अंधेरा

तूफान के बाद वो गहरी साँस

जिसने विश्वास दिलाया

जहाँ हजारों अंधेरों में भी एक रोशनी है

दुख में भी हँसी है

बस हाथ को हाथ से मिलाओ

जो तुम्हें खींच सके

तुम्हारे साथ सकूँ से खुशी मनाये

उदासी को भुला दें और हँसी सो बाँटे

चेरी हिल का अन्नकूट त्यौहार

चेरी हिल की प्रथम-२ कक्षा ने इस बार एक तीर से दो शिकार किए। हमने "मेरी क्रिया कलाप" का "आओ थाली सजाएँ" प्रोजेक्ट के माध्यम से व्यंजनों के नाम तो सीखें ही और साथ में अपनी कक्षा में अन्नकूट का उत्सव भी मनाया। हमने यह क्रिया कलाप दिवाली के दिनों में किया था।

सारे छात्र अपनी-अपनी थालियां सजा कर (बना कर) लाये और खुद भी सुन्दर भारतीय वस्त्र पहन कर आये। उन्होंने एक-एक कर के अपनी थाली को कक्षा के सामने प्रस्तुत किया और सारे व्यंजनों के नाम बताये। इतने सारे पकवान और मिठाई के नाम और चित्र देख कर हम सबके मुँह में पानी आ रहा था। उसके बाद हमने अन्नकूट के त्यौहार के बारे में चर्चा की। चेरी हिल के स्वामी नारायण मंदिर और बर्लिन के मंदिर में अन्नकूट काफी धूम धाम से मनाया जाता है। इसलिए काफी बच्चे इस त्यौहार से परिचित थे। हमने कक्षा में इस त्यौहार के महत्व के बारे में बताया। बच्चों को ज्ञान हुआ कि जब वृन्दावन वासियों ने इंद्र की पूजा छोड़ कर गोवर्धन पर्वत की आराधना की तो इंद्र ने क्रोधित होकर वृन्दावन के ऊपर तेज़ वर्षा की। तब भगवान् श्रीकृष्ण ने गोवर्धन पर्वत को उठा कर उसके नीचे वृन्दावन वासियों को शरण दी थी। इसलिए अन्नकूट के दिन, भक्त भगवान के सामने भोजन के 'पहाड़' सजाते है। अन्नकूट का त्यौहार हमें स्मरण कराता है कि जब भी भक्तों पर कोई विपदा आती है, भगवान कोई न कोई रूप लेकर उनकी रक्षा करते हैं।

मीता चतुर्वेदी

ABOUT US

AIR HOMES is the leading South Jersey Real Estate Invesment company helping individuals build cash flowing real estate investment portflio with double digit returns.

Real Estate Investments

Specialize in:

- Turnkey Rentals
- Sales & Acquisition
- Residential Flips
- Passive Invesments
- Distressed Properties
- Wholesaling

AIR HOMES
Call 856-334-0129

airhomesllc@gmail.com
www.airhomesrealty.com
PO BOX 1601, Mount Laurel
NJ-08054

PosterMyWall.com

होली की कहानी

तरन सिंह, मध्यमा-१, ईस्ट ब्रंस्विक हिंदी पाठशाला

एक समय की बात है, हिरण्यकशयप नाम के राजा और उसकी बहन होलिका ने बहुत पूजा की। भगवान ने दोनों को वरदान दिया।

राजा को लगता था सब को उसकी पूजा करनी चाहिए। उसका बेटा प्रह्लाद भगवान की पूजा करता था। राजा को बहुत गुस्सा आया। उसने होलिका को बुलाया। होलिका को वरदान मिला था कि उसको आग [अकेले] जला नहीं सकती। होलिका प्रह्लाद को लेकर आग में बैठ गई। वरदान अकेले आग से बचने का था, इसलिए होलिका जल गई और प्रह्लाद बच गया।

तब से होली पर होलिका जलाते हैं और अच्छाई की जीत की खुशियाँ मनाते हैं।

WE COULDN'T BE MORE EXCITED ABOUT THIS MESSAGE

Yes, WE ARE GROWING

Yes, WE ARE HIRING

Even in this economy

For a career opportunity as Financial Advisor or Manager

Thevan Theivakumar, CLF®

Sr. PARTNER, New Jersey Sales Office

(732) 319-8758

ntheivakuma@ft.newyorklife.com

WE STAND STRONG

JOIN OUR TEAM

NEW YORK LIFE

The Company You Keep®

New York Life Insurance Company 379 Thornall Street, 8th Floor Edison, NJ 08837

EOE.M/F/D/V

454352 CV 6/18/17

स्टैमफोर्ड हिन्दी पाठशाला मध्यमा-१

नमस्ते,

प्रस्तुत लेख स्टैमफोर्ड हिन्दी पाठशाला से मध्यमा-१ के छात्रों का एक रोचक प्रयास है। हमने भारत के क्षेत्रफल को ४ क्षेत्रों में बाँटा और छात्रों की चार टोली बनाई। प्रत्येक टोली को एक क्षेत्र सौंपा गया। छात्रों ने सौंपे गए भारतीय क्षेत्र के ऐतिहासिक महत्व पर शोध किया, और इसे अंग्रेजी में लिखा। बाद में माता-पिता और हम शिक्षकों की मदद से उन्होंने इसका हिंदी अनुवाद किया। मजेदार बात यह थी कि छात्रों को भारत का वह क्षेत्र दिया गया जहाँ से उनका कोई संबंध नहीं था। इससे उन्हें कुछ नया जानने में मदद मिली। आशा है आप सभी को यह लेख पढ़ने में उतना ही मज़ा आएगा जितना कि हमें इसे लिखने में मिला था।

भारत के पश्चिम में गुजरात, महाराष्ट्र और गोवा के राज्य आते हैं। पश्चिम भारत का इतिहास बहुत पुराना और गौरवशाली है। यहाँ गुजराती, मराठी, और कोंकणी भाषाएँ बोली जाती हैं। महात्मा गांधी तथा भारत के चौदहवें प्रधान मंत्री, नरेंद्र मोदी, का जन्म गुजरात में हुआ था।

फोर्ट अग्वाड़ा गोवा में है। फोर्ट १६१२ में डच और मराठा राजाओं से बचने के लिए बनाया गया था। यह फोर्ट बहुत बड़ा है और नदी मंडोवी पर स्थित है। इसमें एक ४ मंजिला विशाल लाइटहाउस भी है।

हरमंदिर साहिब सिक्खों का धार्मिक स्थान है। यह अमृतसर में है। इसे गोल्डन टेम्पल के नाम से भी जाना जाता है। यह मंदिर सरोवर के बीच में बनाया गया है। इस मंदिर के चारों तरफ सोने की परत चढ़ाई हुई है। यहाँ हर रोज़ लंगर की सेवा होती है। लाखों लोग रोज़ लंगर का खाना खाते हैं।

ताज महल आगरा में स्थित है। इसे प्रेम का प्रतीक माना जाता है। यह शाहजहाँ ने अपनी बीवी मुमताज़ की याद में बनाया था। ताज महल दुनिया के सात अजूबों में से एक है। इसे देखने लाखों लोग देश विदेश से हर वर्ष आते हैं।

जंतर मंतर दिल्ली में है। जंतर मंतर को महाराजा जय सिंह ने बनवाया था। उन्होंने दिल्ली के साथ जयपुर, उज्जैन, मथुरा और वाराणसी में भी जंतर मंतर बनवाया था। यह प्राचीन भारत के विज्ञान का प्रतीक है। इसका उद्देश्य समय की भविष्यवाणी करना था।

जलियांवाला बाग़ अमृतसर में है। २३ अप्रैल १९१९ में जलियांवाला बाग़ हत्याकांड हुआ था। बैसाखी का दिन था। हज़ारों लोग बाग़ में थे। जनरल डायर ने लोगों पर गोलियां चलाने का आदेश दिया। १००० लोग शहीद हो गए जिनमें औरतें और बच्चे भी थे। इस हत्याकांड ने बहुत से देश भक्तों के दिलों में आज़ादी की तमन्ना पैदा की थी।

पूर्व भारत

रवींद्रनाथ टैगोर — अश्विन सिबा

महान कवि, चित्रकार और देशभक्त रवींद्रनाथ टैगोर का जन्म कोलकाता में हुआ था। वह पहले भारतीय थे जिन्होंने अपने महान लेखन "गीतांजलि" के लिए नोबेल पुरस्कार जीता। वह राष्ट्रगान, "जन गण मन" के कवि और संगीतकार थे।

रत्नों की ज़मीन कहने वाला मणिपुर भारत का हिस्सा नहीं था। ब्रिटिश राज में रियासत के तौर माना जाता था।

१९४७ में भारत को आजादी मिली लेकिन उस वक्त भी मणिपुर के लोग भारत से दूर थे। १९४९ में महाराजा बुद्ध चंद्र ने भारत सरकार के साथ दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर किया और भारत के साथ जोड़ा गया। मणिपुर को पूर्व राज्य का दरजा १९७२ में मिला।

Anvi Ramrakhiyani

विक्टोरिया मेमोरियल भारत में अंग्रेजी राज को दी गई एक श्रद्धांजली है, इसे पुनः निर्मित किया गया था और यह ताजमहल पर आधारित था। इसे आम जनता के लिए १९२१ में खोला गया था, इसमें शाही परिवार की कुछ तस्वीरें हैं। यह कोलकता के सबसे मशहूर दर्शनीय स्थलों में से एक है।

शौर्य सिंह

सम्राट अशोक - 304-232 BC

कलिंगा युद्ध के बाद सम्राट अशोक ने प्रण लिया कि वो अब कोई नर-संघार नहीं करेंगे एवं अपनी प्रजा को संतान स्वरूप मानेंगे। अशोक के सामराज्य की सिमाएं उत्तर में अफगानिस्तान और नेपाल तक, पश्चिम में करनाटक, दक्षिण में आन्ध्र और पूरब में बंगाल व बिहार तक फैली थी। अशोक ने शिक्षा को महत्व दिया और बौध धर्म का प्रचार करते रहे।

- सिया सुखानी Siya Sukhani

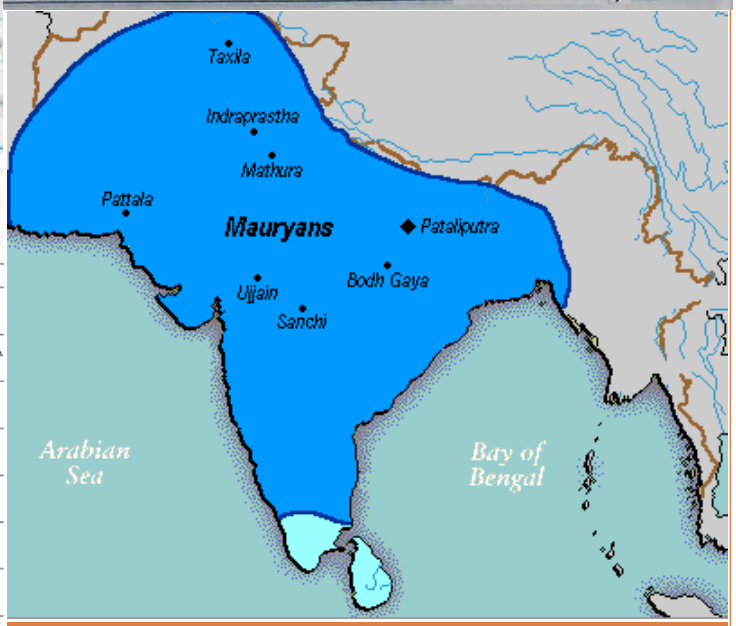

समाट अशोक का राज्य

सुभाष चन्द्र बोस आजादी के आंदोलन से प्रभावित होकर कॉंग्रेस में जाने पर उनके विचार भिन्न थे। दूसरे विश्व युद्ध के दौरान भारत की प्रथम सेना का गठन किया। आजाद हिन्द सेना ने अंग्रेजों की नाक में दम किया और आजादी की राह दिखाई।

— सरस सुखानी

ऐतिहासिक **चारमिनार** तेलंगाना राज्य की राजधानी हैदराबाद में है। राजा कुली कुतुब शाह ने सन १५९१ में इसका निर्माण किया था। चारमीनार का नाम उसकी चार मीनारों की वजह से रखा गया है। यह चारों दिशाओं से समान दिखता है। ऊपर तक चढ़ने के लिए १४९ सीढ़ियाँ हैं। साहस करके ऊपर तक चढ़ने के बाद राजधानी का दृश्य कल्पना से परे जैसा लगता है।

मीनाक्षी मंदिर भारत के तमिलनाडु के मदुरई शहर के दक्षिणी तट पर स्थित एक ऐतिहासिक हिंदू मंदिर है। यह देवी पार्वती को समर्पित है जिन्हें मीनाक्षी के रूप में भी जाना जाता है। उनके संग शिव हैं जिनका नाम सुंदरेश्वर है। कांचीपुरम तमिलनाडु में सबसे प्रसिद्ध तीर्थ स्थलों में से एक है।

मैसूर पैलेस कर्नाटक में है। मैसूर पैलेस ५०० से अधिक वर्षों से खड़ा है। वहां के शासक वोडेयार थे। १६३८ में महल पर बिजली गिरने की वजह से महल गिर गया था फिर उसे १८०३ में ठीक कर दिया गया था। १८९७ में वहाँ की राजकुमारी की शादी में महल लकड़ी का होने के कारण उसमे आग लग गई थी, लेकिन फिर उसे नया बना दिया गया था। आज हम जिस महल की इमारत को देखते हैं उसका निर्माण हेनरी इरविन ने किया था। मैसूर पैलेस पर्यटन से राजस्व लाकर कर्नाटक राज्य में मदद करता है।

केरल राज्य भारत के दक्षिण में स्थित एक बहुत खूबसूरत भू-भाग है जिसे देवभूमी भी कहा जाता है। माना जाता है कि इसका निर्माण भगवान परशुराम ने किया था। अनूप झील केरल का प्रमुख पर्यटक आकर्षण है। यह नौ सौ किलोमीटर विस्तृत जल मार्ग प्राकृतिक और कृत्रिम नदियों को जोड़ कर बनाया गया है। हाउस बोट में रहकर आप इन झीलों में प्रवास करते हुए नैसर्गिक सौंदर्य का आनंद ले सकते है।

मेरा भारत महान

मैं हिंदी यू.एस.ए. से पिछले ६ वर्षों से जुड़ी हूँ और प्रथमा- १ कक्षा में पढ़ा रही हूँ। मेरे दोनों बेटे भी हिंदी पाठशाला के क्रमशः मध्यमा-२ एवं प्रथमा-१ के छात्र हैं। मुझे हिंदी की शिक्षिका बनकर बहुत कुछ सीखने और सिखाने को मिला है। मैं आगे भी हिंदी यू.एस.ए. से जुड़े रहना चाहती हूँ।

चन्द्रगुप्त मौर्य
आरव देसाई

जय-जय भारतवर्ष हे, हे जय-जय भारतवर्ष
तेरे सामने हम अपना शीश झुकाते हैं।
असंख्य वीरों और महावीरों की शाश्वत कथा
आज हम दोहराते हैं॥
अति प्राचीन काल में यह आर्यावर्त
के नाम से जाना जाता था।
विश्व की उन्नत सभ्यता का
भारत ही प्रथम दाता था॥

सम्राट अशोक
अमन पटेल

उपरोक्त पंक्तियाँ, नार्थ ब्रुंस्विक हिंदी पाठशाला के प्रथमा १ एवं २ के छात्र-छात्राओं ने १७वें हिंदी महोत्सव में "मेरा भारत महान अभिनय गीत प्रतियोगिता" के अंतर्गत जो प्रस्तुति दी थी, उसका हिस्सा थीं। भारत के अति प्राचीन ऐतिहासिक काल के वीर महापुरुषों की गाथाओं पर आधारित इस अभिनय प्रस्तुति को हिंदी पाठशाला की संचालिका योगिता मोदी जी द्वारा स्वरचित कविताओं और कुछ अन्य माध्यमों से उपलब्ध गीतों की लड़ियों में इस तरह पिरोया गया था कि वह बहुत ही रोचक था। पाठशाला की अन्य शिक्षिकाओं का भी इसमें भरपूर सहयोग रहा। इसकी सबसे बड़ी उपलब्धि यह रही कि भाग लेने वाले बच्चों को अपने समृद्ध इतिहास के बारे में जानने और उसे अपने अभिनय द्वारा महसूस करने का अवसर मिला। जब हमने इसका अभ्यास शुरू किया तो बच्चों को इन महापुरुषों के बारे में जानने की बहुत उत्सुकता थी। हमारी प्रस्तुति में जिन राजाओं और अन्य महान बिभूतिओं के शौर्य की झलकियां सम्मिलित हुईं, वे थे - अति वीर एवं

चाणक्य - निकिता शर्मा

साहसी शासक पोरस, सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य, चक्रवर्ती सम्राट अशोक, महान अर्थशास्त्री एवं कूटनीतिज्ञ चाणक्य। अभिनय प्रस्तुति के लिए इसके अलावा संक्षेप में अन्य साधनों (प्रॉप्स) के रूप में एक विवरणिका भी तैयार की गयी थी जो कि प्रतिभागिओं द्वारा दर्शकों को बांटी गयी थी। इसमें महान कार्य करने वाले ऐतिहासिक अन्य महापुरुष जैसे - शून्य और दशमलव का आविष्कार करने वाले महान खगोल शास्त्रीय एवं गणितज्ञ। ब्रह्मगुप्त और आर्यभट्ट, आयुर्वेद के उत्तम ग्रंथ चरक संहिता के रचयिता और महान चिकित्सा शास्त्री चरक सहित अनेक व्यक्तियों, मध्य कालीन देशभक्त राजाओं, शासकों तथा भारत की प्राचीन सभ्यता-संस्कृति आदि को दर्शाती जानकारी सम्मिलित थी।

पोरस - शिवम् शाह

बच्चों को इन सभी के बारे में जानकार बहुत गर्व महसूस हुआ। शायद इससे पहले उन्हें यह सब जानने का इतना अच्छा अवसर नहीं मिला था। हिंदी यू.एस.ए. के द्वारा चुना गया यह विषय बच्चों को सरलता से अपने महान एवं गौरवशाली भारतीय इतिहास के बारे में बताने में बहुत सहायक सिद्ध हुआ। अपने अभिनय पात्र को लेकर बच्चे बहुत उत्साहित थे। उन्होंने इंटरनेट पर भी इन महापुरुषों के बारे में बहुत जानकारी एकत्रित की और अपनी कक्षा में शिक्षिकाओं से उनके बारे में बातचीत की। हमारा मूल उद्देश्य है कि बच्चे हिंदी ज्ञान के साथ ही भारत के इतिहास के बारे में भी जानें और समझें, और इस प्रस्तुति के कारण वह कुछ हद तक पूरा हुआ।

भारत के सच्चे सेनानी

नमस्ते मेरा नाम गितांजली गरग है। मैं श्वेता मिश्राजी के साथ एवॉन हिन्दी पाठशाला में प्रथमा-१ की शिक्षिका हूँ। हमने हमारी कक्षा को भारतीय इतिहास के बारे में एक परियोजना दी थी। हालांकि इस कक्षा के बच्चे अभी पूरी तरह से पढ़ लिख नहीं सकते। तो उन्होंने एक भारतीय सेनानी के बारे में जानकारी हासिल की और उन्होंने एक पेपर पर उस सेनानी का चित्र लगाया और उनके बारे में जानकारी लिखी। फिर उन्होंने यह जानकारी अपनी सभी कक्षा सहपाठियों के साथ बांटी।

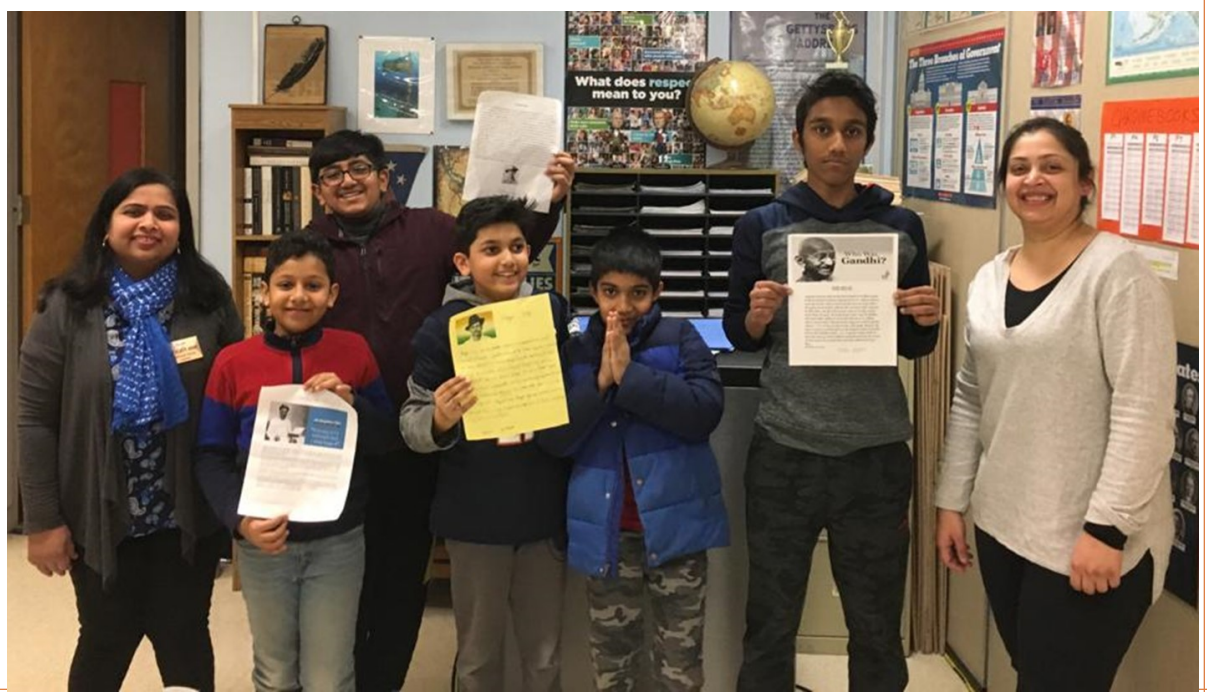

भारत के स्वतंत्रता सेनानी

चैरी हिल पाठशाला कनिष्ठ-२ - सोनल जोशी/हेमांगी शिंदे

हेली, ईशान, आरुष, संजय, आरव, अथर्व, अरनव, आदया

सारे जहाँ से अच्छा, हिंदुस्तान हमारा!! हमारे प्यारे हिंदुस्तान का इतिहास बहुत ही सम्पन्न और विविधता पूर्ण है। भारत के इतिहास में ब्रिटिश राज एवं उससे मुक्ति पाने के संघर्ष की कहानी का एक बड़ा महत्वपूर्ण योगदान रहा है और इस संघर्ष से हमारी आज की पीढ़ी को अवगत कराना भी उतना ही जरूरी है। गणतंत्र दिवस के अवसर पर हमने इसी कहानी को उजागर करने की कोशिश की।

कक्षा में हमने बच्चों को कहानी के रूप में बताया कि कैसे ब्रिटिश लोग भारत में ईस्ट इंडिया कम्पनी के रूप में व्यवसाय करने के बहाने सूरत आए और "बांटो और राज करो" के सूत्र को अपनाकर भारतियों में फूट डाली और उन्हें परतंत्र में ज़कड़ लिया। उन्होंने भारतियों पर अगणित कष्ट ढाए। कुछ लोग सहन करते रहे, लेकिन जो सहन नहीं कर सके उन्होंने ब्रिटिश राज के ख़िलाफ़ क्रांति की। देश के अलग अलग हिस्सों में जवाहरलाल नेहरु, महात्मा गांधी, नेताजी सुभाषचंद्र बोस, लोकमान्य तिलक, भगत सिंह, सरदार पटेल, सरोजिनी नायडू, विजयलक्ष्मी पंडित, कस्तूरबा आदि क्रांतिकारियों ने कई लोगों को एकत्रित कर उन्हें स्वतंत्रता के हक का ज्ञान दिया और उसे हासिल करने के लिए प्रेरित किया। जहाँ गांधीजी ने अहिंसा पर ज़ोर दिया, वहीं भगत सिंह ने "जैसे को तैसे" के मार्ग को अपनाया था। इन सेनानियों के क्रांति के तरीकें भले ही आपस में मेल न खाते हों, परंतु इनका उद्देश्य एक ही था भारत माता को स्वतंत्र करना, जो उन्होंने बखूबी हासिल किया।

छात्रों ने अपने पसंदीदा स्वतंत्रता सैनिक के चित्र को प्रस्तुत कर उन्हें सम्मानित किया। जय हिंद!!

साऊथ ब्रंस्विक कनिष्ठ-१

नमस्ते, मेरा नाम प्रिया मेनन है और मैं पिछले कई वर्षों से कनिष्ठा-१ स्तर की अध्यापिका हूँ। मेरे पति अनिल और बच्चे अनिरुद्ध, अनिका भी हिंदी यू.एस.ए. के सक्रिय स्वयंसेवक हैं। गीता राम जी मेरी कक्षा की सह अध्यापिका हैं तथा छात्र स्वयंसेवक रितिका, वरुणवी, अनिका एवं करण मेरी कक्षा के १७ विद्यर्थियों को पढ़ाने में मेरी मदद कर रहे हैं। हमारा उद्देश्य कक्षा में एक रोचक तथा शिक्षाप्रद वातावरण बनाना है। हम पढ़ाई के साथ-साथ भारतीय त्योहारों से जुड़े कलात्मक कार्य भी करते हैं। बच्चे इन क्रियाओं को अत्यंत आनंद से करते हैं तथा खेल खेल में बहुत कुछ सीख जाते हैं। इस वर्ष हमने अपने घर और अपने घर की चीजों को दिखाने के लिए एक परियोजना की जो छुट्टी का दिन किताब से प्रेरित है। बच्चे दृश्यों के माध्यम से बेहतर ढंग से भी क्रियाओं को समझते हैं। मुझे आशा है कि आप भी मेरी कक्षा के इस प्रदर्शन का आनंद लेंगे।

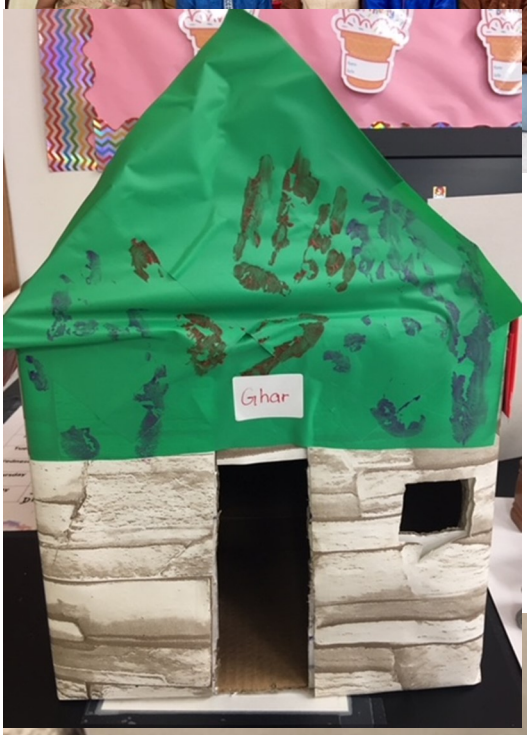

Congratulations to Hindi Mahotsava

MangoTree
Wealth through real estate!

Opportunity Zone Real Estate
DEFER * REDUCE * ELIMINATE - CAPITAL GAIN TAX

Cuts Your Capital Gains Tax Cost- 3 Ways By Investing In Opportunity Zone

An Opportunity Zone or "O-Zone" is an economically -distressed community where new investments, under certain conditions, may be eligible for preferential tax treatment.

O-Zones are officially designated low-income census tracks eligible for favorable capital gains tax treatment.

Approximately 12% of the land mass of the U.S., currently 8,761 Opportunity Zones have been identified in all 50 states, the District of Columbia and five US territories.

O-Zone Triple Tax Benefits Allow Investors to **Defer**, **Reduce**, and **Eliminate tax costs**:

Defer – Capital gain taxes otherwise due can be deferred until the earlier of your investment exit or December 31, 2026 by investing in a Qualified Opportunity Fund ("QOF"). Let your money work for you instead of the government.

Reduce – Your basis is increased by 10% if the investment in the QOF is held for at least 5 years and an additional 5% or total of 15% if held for at least 7 Years. The result is a reduced gain subject to capital gain taxation.

Eliminate – After 10 years, upon sale of the asset, post investment appreciation is tax free. (If it's sold earlier, it can be rolled into another QOF and remain tax-free.)

Many states including NY-NJ are mirroring the Federal guidelines.

Past performance is not necessarily indicative of future results. Individual returns will vary based on time of investment. Nothing contained in this document should be construed as an offer to sell or solicitation to buy securities. Any investment in or with MangoTree Real Estate Holdings L.P. or Opportunity Zone RE LLC can only be made by a duly qualified and approved investor in accordance with the terms set forth in a Private Placement Memorandum (the PPM) and pursuant to a duly executed Subscription Agreement accepted by MangoTree Real Estate Holdings L.P. With respect to all information above, the PPM is the sole and exclusive source of information for any potential investor, and there is no warranty or other assurance of the accuracy or completeness of any of the information contained in this document. Our financial statements are audited by Shalik Morris & Co. – CPAs.

© Copyright 2019 MangoTree Real Estate Holdings L.P.

EXCELLENT MARKETING!
EXPERT NEGOTIATING!
PROVEN RESULTS!

Uma Sogani
Award Winning Realtor
908-812-8960 Cell (Direct)
usogani@gmail.com

Satisfaction
4.6 / 5.0
Performance
4.9 / 5.0
Recommendation
4.8 / 5.0

- **NJAR Circle of Excellence "GOLD" Status - 2016, 2017, 2018**
- **Century 21 CENTURION award - 2016, 2017, 2018**
- **Ranked #13 Agent in the C21 New Jersey/Delaware Region (2018)**

View my reviews and client testimonials at :

http://www.realsatisfied.com/Uma-Sogani

Member of Middlesex, Mercer, Somerset, Monmouth & Ocean MLS
Also deals in new construction and Sale by owner properties (FSBO)

Call Now To Find Out How I Can Help You With Your Buying, Selling or Renting needs!

Mention 'KARMBHOOMI' for a FREE Property Evaluation !

Uma Sogani
Award Winning Realtor
908-812-8960 Cell (Direct)

CENTURY 21
Abrams, Hutchinson & Associates

3228 Route 27, Suite 1A
Kendall Park, NJ 08824

Each office is independently owned and operated.

Cell: (908) 812-8960 Office: (609) 750-7300 ♦ **Email: usogani@gmail.com**

If your property is currently listed with a real estate broker, please disregard this offer. It is not our intention to solicit the offerings of other real estate brokers. We are happy to work with them and cooperate fully. The information contained herein has not been compiled or approved by the Middlesex Multiple Listing System, Inc. Subject to errors and omissions.

Become a member of the First Home Club

We Will Match Your Money!

First Home Club members are eligible for a $7,500 down payment grant.

How it works

- For every $1 you save in a dedicated Investors Bank Savings account, the Federal Home Loan Bank (FHLB) will match up to $4—with a maximum match of **$7,500**
- During the 10-24 month enrollment period, you'll make consistent, systematic deposits
- Your savings goal should total $1,875—this will allow you to take advantage of the max amount of $7,500

Suggested Savings Plans for Maximum Match:

- $188 for 10 months = $1,880
- $157 for 12 months = $1,884
- $105 for 18 months = $1,890
- $79 for 24 months = $1,896

Speak with your Investors Home Mortgage Professional about getting pre-qualified and for complete details about becoming a member today!

Grishma D. Patel

Sr. Mortgage Consultant / Area Sales Manager

Certified Mortgage Planning Specialist

NMLS No. 283266

GPatel@investorsbank.com

732.429.5200

investors Home mortgage

A Wholly Owned Subsidiary of Investors Bank

249 Millburn Avenue • Millburn, NJ • 07041

Member FDIC Equal Housing Lender

Homebuyer counseling required. Restrictions apply, see your loan officer for complete details and qualification / income requirements. NMLS ID #60061. All loans subject to credit approval. Mortgage Loans provided by Investors Home Mortgage, a wholly-owned subsidiary of Investors Bank and Licensed by the NJ Department of Banking and Insurance. Investors Bank name and weave logo are registered trademarks. © 2015 Investors Bank.